वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या 8 N6
काल नं० 280.3 दुबे
खण्ड

बालबोध

तीसरा भाग

संयुक्त प्रान्त के ग्रामों की प्रारम्भिक पाठशालाओं
(प्रायमरी स्कूलों) की तीसरी कक्षा के लिए

सम्पादक
दयाशङ्कर दुबे, एम० ए०, एल-एल० बी०,
अध्यापक, प्रयाग-विश्वविद्यालय, प्रयाग

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग
१९३९

Published by
K Mittra
at The Indian Press, Ltd ,
Allahabad

Printed by
A Bose
at The Indian Press, Ltd ,
Benares-Branch.

अध्यापकों से निवेदन

जब विद्यार्थी तीसरी या चौथी कक्षा में पहुँचता है, तो वह बहुत कुछ इस योग्य हो जाता है कि पाठ को समझकर पढ़ सके। यद्यपि उसका शब्द-भाण्डार पहले की अपेक्षा कुछ बढ़ा हुआ रहता है, फिर भी वह कठिन शब्द तथा जटिल वाक्य आसानी से समझ नहीं सकता। इसलिए बालबोध के तीसरे और चौथे भाग में भी सरल और बोलचाल की भाषा रखने का प्रयत्न किया गया है। साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रक्खा गया है कि भाषा साधारण होते हुए भी मुहावरेदार हो। किसी भी पाठ में अधिक कठिन शब्दों या मुहावरों का उपयोग नहीं किया गया है। इसके सिवा इस बात की भी पूरी चेष्टा की गई है कि पाठ यथासम्भव मनोरञ्जक हों। पाठ समझने में आसानी हो, और पाठकों का थोड़ा-बहुत मनोरञ्जन भी हो जाय, इसलिए चित्र भी काफ़ी संख्या में दे दिये गये हैं।

तीसरी और चौथी कक्षा की पाठ्य पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों को ठीक-ठीक पढ़ना सिखाने के सिवा उनके ज्ञान की वृद्धि करना भी है। इसलिए बालबोध के तीसरे और

चौथे भागों में ऐसे पाठ भी रक्खे गये हैं जिनसे देहात के विद्यार्थियों के खेती-सम्बन्धी ज्ञान की भी वृद्धि होगी। उनमें बहुत सी बातें ऐसी दी गई हैं, जो विद्यार्थियों को अपनी पाठशाला छोड़ने पर, अपने जीवन-संग्राम को सफलता-पूर्वक चलाने मे, बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी।

ग्रामवासियों की आर्थिक दशा इस समय बहुत ही खराब है। जिधर देखिए उधर ग़रीबी का ही साम्राज्य है। इस प्रान्त के लाखों स्त्री-पुरुषों को, कठिन परिश्रम करने पर भी, भर-पेट खाने को नहीं मिल पाता। अत इस पुस्तक मे कुछ ऐसे पाठ भी दिये गये है, जिनमें ग्राम-वासियों की दशा सुधारने के तरीके इस ढङ्ग से बतलाये गये हैं कि उन्हें बच्चे भी आसानी से समझ सकेंगे। हमे आशा है कि इस पुस्तक के पढ़ने से बालकों के दिल में खेती तथा ग्राम्यजीवन के प्रति प्रेम बढ़ेगा और उनमें अपनी दशा सुधारने की इच्छा उत्पन्न होगी। साथ ही साथ उनको सुधार के कुछ तरीके भी मालूम हो जायँगे।

पुस्तक मे जो मुहावरे उपयोग किये गये है, उनका अर्थ पुस्तक के अंत में, पाठ-सहायक बातों में, दिया गया है। उसमे आवश्यकतानुसार, संक्षेप मे, अन्तर्कथायें भी दे दी गई है। उसमे कहीं कहीं कुछ ऐसी बातें भी दे दी गई है, जिनसे अध्यापकों को पाठों को समझाने मे मदद मिलेगी। अध्यापकों को चाहिए कि कठिन शब्दों तथा मुहावरों

का अर्थ समझाने के बाद उनका उपयोग वे स्वयं बार बार करें और विद्यार्थियों से भी करायें।

प्रारम्भिक पाठशालाओं के विद्यार्थियों के पढ़ने में प्रायः कई दोष रहते हैं। कुछ विद्यार्थी तो गाकर पढ़ते हैं और कुछ विद्यार्थी पढ़ने में इतनी जल्दी करते हैं कि एक शब्द का उच्चारण दूसरे शब्द में मिला देते हैं। कुछ विद्यार्थी महत्त्व के शब्दों को ज़ोर देकर नहीं पढ़ते, और ऐसे शब्दों को जोर देकर पढ़ते हैं, जो महत्त्व के नहीं होते। कभी-कभी विद्यार्थी, सम्बन्धी शब्दों को एक साथ न पढ़कर, जो शब्द सम्बन्धी नहीं होते, उनको एक साथ पढ़ते हैं। अध्यापकों को चाहिए कि जब वे विद्यार्थियों के पढ़ने में किसी प्रकार का दोष देखें, तो उनका ध्यान तुरन्त उसकी ओर आकृष्ट करें और ग़लती को उसी समय ही सुधरवा देने का पूरा प्रयत्न करें। इसके सिवा विद्यार्थियों से भी एक-दूसरे की ग़लती बतलाने के लिए कहना चाहिए। अध्यापकों को इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी जो कुछ पढ़ रहे हैं, वह रटकर तो नहीं पढ़ रहे है। कभी-कभी, बीच-बीच में प्रश्न करके इस बात की जाँच कर लेनी चाहिए। पाठ समाप्त होने पर प्रश्नों-द्वारा पाठ का सार विद्यार्थियों से ही, उनके शब्दों में निकलवाने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रत्येक पाठ के अन्त में कुछ सवालात दिये गये हैं। अध्यापकों को उनका उपयोग भी आवश्यकतानुसार करना चाहिए।

वे सवालात अध्यापकों को, उनके काम में, सहायता पहुँचाने के लिए ही दिये गये हैं; परन्तु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि अध्यापक उन प्रश्नों के गुलाम हो जायँ और उन प्रश्नों के सिवा अन्य प्रश्न पूछने की हिम्मत ही न करें।

भाषा सिखलाने का अभिप्राय यही रहता है कि पुस्तक में जिस प्रकार की भाषा रहती है, उस प्रकार की भाषा बालक पढने, लिखने और बोलने लगें; न कि यह कि तीस, चालीस या पचास पाठ पूरे करें। यदि उचित रीति से शिक्षा दी जाय, तो केवल तीस-पैंतीस पाठ पढ़ा देने से जितना लाभ होगा, उतना जल्दी-जल्दी पचास पाठ पढा देने से न होगा। इसलिए अध्यापकों को चाहिए कि वे पुस्तक के जितने पाठ पढ़ाय, ठीक ठीक अच्छी तरह पढ़ायें और यदि वर्ष के अन्त में पाठ्य-पुस्तक के कुछ पाठ रह भी जायँ, तो कुछ बहुत हर्ज न समझें।

आशा है, इस पुस्तक के उपयोग से बालकों को पढ़ना सीखने के साथ ही साथ उनके आस-पास की वस्तुओं के ज्ञान की वृद्धि होगी और उनका मनोरञ्जन भी काफ़ी होगा।

सम्पादक

विषय-सूची

बालबोध

तीसरा भाग

पाठ १

ईश्वर सब जगह है

मेरे गाँव में एक किसान है। उसका नाम शीतल है। उसके एक लड़का है। उसका नाम दातादीन है। वह अभी छोटा बालक है, पर बड़ा होशियार है। उससे जो बात एक बार कही जाती है, वह फिर कभी उसे नहीं भूलता।

शीतल ग़रीब किसान है, लेकिन वह चाहता है कि उसके लड़के को कभी किसी बात की तकलीफ़ न हो। वह दातादीन को बहुत प्यार करता है। दातादीन भी अपने माँ-बाप का हुक्म हमेशा मानता है। रात को शीतल और उसकी औरत जब सोते हैं, तो वे दातादीन को कहानियाँ सुनाते हैं। दातादीन को कहानियाँ सुनने का बड़ा

शौक़ है। वह जो कहानी सुन लेता है, उसे फिर हमेशा याद रखता है। एक बार शीतल ने एक कहानी कही। उसमें उसने कहा कि ईश्वर सब जगह है।

दातादीन की समझ में यह बात न आई। उसने फिर बाप से पूछा—सब जगह कोई कैसे हो सकता है ?

शीतल ने कहा—हाँ, बेटा ईश्वर सब जगह हो सकता है। कोई चाहे जहाँ, चाहे जो काम करे, ईश्वर सब देखता रहता है। उससे कभी कोई बात छिपाई नहीं जा सकती।

इसके बाद उसने पूरी कहानी कहकर दातादीन के मन में यह बात अच्छी तरह से जमा दी कि ईश्वर सब जगह है। उससे छिपाकर कभी कोई काम नहीं किया जा सकता। वह अँधेरे-उँजेले, बाहर-भीतर सब जगह देखता है।

बहुत दिनों के बाद शीतल दातादीन को साथ लेकर खेतो की तरफ़ गया। उन दिनों शीतल बड़ी ग़रीबी की हालत में था। उसके खेतों में कुछ भी पैदा नहीं हुआ था। उस वक्त शाम हो रही थी। आस-पास कोई आदमी नहीं था। शीतल ने सोचा—इस वक्त अगर किसी के खेत



में से एक बोझ गेहूँ काट लिये जायँ तो कई दिन काम चल जाय। उसने दातादीन से कहा—बेटा, देखो कोई देखने न पाये तब तक मैं एक बोझ गेहूँ काट लूँ।

वह दातादीन को एक जगह खड़ा करके आगे बढ़ा। दातादीन को बहुत दिनोंवाली वह कहानी याद पड़ गई। उसने पीछे से पुकारकर कहा—बापू!

शीतल ने डरकर पूछा—क्यों बेटा, क्या कोई देख रहा है?

दातादीन—हाँ बापू, देख रहा है।

शीतल धीरे से लौट पड़ा, इधर-उधर देखकर पूछा—कौन देख रहा है बेटा?

दातादीन—आपही तो कहते थे कि ईश्वर सभी जगह है। वह सब कुछ देखता है। तब तो वह यहाँ भी होगा और आपको भी देख रहा होगा।

शीतल समझदार था। उसने कहा—हाँ बेटा, तुम ने ठीक याद दिलाई। वह ज़रूर देख रहा है। चलो, हम लोग लौट चलें।

बस, शीतल तुरन्त ही दातादीन को साथ लेकर खाली हाथ लौट आया।

सवालात

१—शीतल ने अपने बेटे को क्या समझाया था ?

२—दातादीन ने अपने पिता को चोरी करने से कैसे बचाया ?

३—तुमने इस पाठ से क्या सीखा ?

पाठ २

फ़क़ीर का उपदेश

एक बार गाँव में एक बूढ़ा फ़क़ीर आया। उसने गाँव के बाहर अपना आसन जमाया। वह बड़ा होशियार फ़क़ीर था। वह लोगों को बहुत सी अच्छी-अच्छी बातें बतलाता था। थोड़े ही दिनों में वह मशहूर हो गया। सभी लोग उसके पास कुछ न कुछ पूछने को पहुँचते थे। वह सबको अच्छी सीख देता था।

गाँव में एक किसान रहता था। उसका नाम राम-गुलाम था। उसके पास बहुत सी ज़मीन थी, लेकिन

फिर भी रामगुलाम सदा ग़रीब रहता था। उसकी खेती कभी अच्छी नहीं होती थी।

धीरे-धीरे रामगुलाम पर बहुत सा क़र्ज़ हो गया। रोज़ महाजन उसे रुपये के लिए तंग करने लगा। लेकिन खेतों में अब भी कुछ पैदा नहीं होता था। रामगुलाम ख़ुद तो खेतों में बहुत कम जाता था। वह सारा काम नौकरों से लेता था। उसके यहाँ दो नौकर थे। वे जैसा चाहते, वैसा करते थे।

आख़िर महाजन से तंग आकर रामगुलाम ने अपनी आधी ज़मीन बेच दी। अब आधी ज़मीन ही उसके पास रह गई।

जिन खेतों में बहुत कम पैदावार होती थी वही रामगुलाम ने बेच दिये थे। पर जिस किसान ने उसकी ज़मीन ली थी वह बड़ा मेहनती था। वह अपना सारा काम अपने हाथों से करने की हिम्मत रखता था। जो काम उससे न होता वह मज़दूरों से कराता, पर रहता सदा उनके साथ ही साथ था। वह कभी अपना काम मज़दूरों के भरोसे नहीं छोड़ता था।



पहली ही फ़सल में उस किसान ने उन खेतों को इतना अच्छा बना दिया कि उनमें चौगुनी फ़सल हुई। रामगुलाम ने जब यह देखा तो वह अपने भाग्य को कोसने लगा। इधर उस पर और भी क़र्ज़ हो गया और उसको बड़ी चिन्ता रहने लगी।

आख़िर एक दिन वह भी उस फ़क़ीर के पास गया। उसने बड़े दुख के साथ अपने दुर्भाग्य की कहानी फ़क़ीर से कह सुनाई। फ़क़ीर ने सुनकर कहा—अच्छी बात है, कल हम तुम्हें बताएँगे।

रामगुलाम चला आया। उसी रात को फ़क़ीर ने गाँव में जाकर रामगुलाम की दशा का सब पता लगा लिया। दूसरे दिन उसने रामगुलाम के पहुँचने पर कहा—तुम्हारे भाग्य का भेद सिर्फ़ 'जाओ और आओ' में है। वह किसान 'आओ' कहता है और तुम 'जाओ' कहते हो। इसी से उसके ख़ूब पैदावार होती है, और तुम्हारे कुछ नहीं।

रामगुलाम कुछ भी न समझा। तब फ़क़ीर ने फिर कहा—तुम खेती का सारा काम मज़दूरों पर छोड़ देते हो। तुम उनसे कहते हो—जाओ ऐसा करो, पर ख़ुद न उनके

साथ जाते हो, न काम करते हो। पर वह किसान मज़दूरों से कहता है—'आओ, खेत चलें'। वह उनके साथ-साथ जाता है, और साथ-साथ मेहनत करता है। मज़दूर भी उसके डर से ख़ूब मेहनत करते हैं। तुम्हारे मज़दूरों की तरह वे मनमाना काम नहीं करते। इसलिए अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे खेतों में भी ख़ूब पैदावार हो तो 'जाओ' छोड़कर 'आओ' के अनुसार चलना सीखो।

रामगुलाम ने फ़क़ीर की बात मान ली। उस दिन से आलस्य त्यागकर वह अपने खेत में मज़दूरों के साथ कड़ी मेहनत करने लगा। अब उसके उन्हीं खेतों में ख़ूब फ़सल होने लगी।

सवालात

१—रामगुलाम के खेतों में पैदावार क्यों नहीं होती थी ?

२—फ़क़ीर ने उसे क्या शिक्षा दी ?

'आओ और जाओ' से क्या मतलब समझते हो ?

पाठ ३

नींबू

लड़को, तुमने नींबू ज़रूर ही देखा होगा। हरा नींबू कच्चा होता है। पका नींबू पीला होता है। आम, जामुन पकने पर मीठे हो जाते हैं, लेकिन नींबू पकने पर भी खट्टा ही रहता है। वह जितना ही पकता है, उतना ही खट्टा होता जाता है। कह सकते हैं कि नींबू के खट्टे होने ही में मज़ा है।

नींबू खट्टा तो होता है, लेकिन होता बड़ा ज़ायक़ेदार है। इसी से वह बहुत तरह से खाया जाता है। उसे योंही नमक और काली मिर्च लगाकर चूसते हैं। उसे दाल भात में निचोड़कर खाते हैं। उसे शरबत में निचोड़कर पीते हैं। उसका अचार बनाकर खाते हैं।

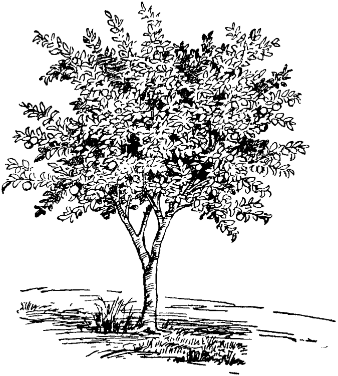
नींबू बड़ा फ़ायदा करता है। हैज़े के दिनों में तो नींबू रोज़ खाना चाहिए। नींबू और भी बहुत सी दवा-इयों में इस्तेमाल होता है। नींबू की खटाई बड़ी तेज़ होती है। उसे रगड़ने से ताँबे-पीतल के बर्तन खूब साफ हो जाते हैं।

नींबू कई तरह का होता है। जंगली नींबू जंगलों में अपने आप ही पैदा होता है। वहाँ आपही आप उसके पेड़ उग आते हैं। बाग़ों में नींबू ख़ास तौर से लगाया जाता है। जो नींबू बाज़ारों में बिकते हैं, उनमें जिनका छिलका कड़ा और मोटा होता है वे अच्छे नहीं होते। महीन और मुलायम छिलकेवाले नींबू अच्छे होते हैं। उनमें रस बहुत निकलता है। वे काग़ज़ी नींबू कहलाते हैं। आम तौर से सभी नींबू गोल होते हैं। कोई-कोई मोटे छिलकेवाले जंगली नींबू कुछ लम्बाई लिये हुए होते हैं।

नींबू का छिलका नारंगी की तरह आसानी से अलग नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर चाहो तो वह उतारा जा सकता है। उसका छिलका उसकी फाँकों से चिपका रहता है। नींबू में नारंगी की तरह फाँकें होती हैं, पर वे भी इतनी चिपकी रहती हैं कि आसानी से अलग नहीं होतीं। इससे नींबू को हाथ से छीलकर नहीं, बल्कि चाकू से दो फाँकें करके खाते हैं।

नींबू बड़े फ़ायदे की चीज़ है। उसके पेड़ों को लगाकर उसकी फसल की रक्षा करनी चाहिए।

उसके पेड़ बीज और कलम दोनों ही से तैयार किये जाते हैं। वे दस-बारह फ़ीट तक बढ़ते हैं।



नींबू की कई जातियाँ होती हैं। इसलिए उनके पत्ते छोटे-बड़े तो होते हैं, पर आकार सबका अंडे की तरह होता है। नींबू के पेड़ों में फूल भी आते हैं। उसके फूल

सभी क़िस्म के पेड़ों में सफ़ेद लगते हैं। उनमें नींबू की महक भी रहती है। नींबू की पत्तियों में भी कुछ महक रहती है। नींबू का पका फल तो बहुत ही अच्छा महकता है। नींबू के पेड़ में तीसरे या चौथे साल फल आने लगता है।

खाना हज़म न होने से खाने के पहले नींबू, अदरक और सेंधा नमक खाना चाहिए। इससे बदहज़मी की शिकायत दूर हो जाती है। भूक भी ख़ूब लगती है। जीभ का ज़ायक़ा कैसा ही ख़राब हो रहा हो, नींबू खा लेने से दुरुस्त हो जाता है।

सवालात

१—नीबू कैसे खाया जाता है ?
२—नींबू खाने के अलावा और किस काम आता है ?
३—किन दिनों में नींबू ज़रूर खाना चाहिए ?

पाठ ४

वीर अर्जुन

बहुत पुराने ज़माने की बात है, गुरु द्रोण कुछ राजकुमारों को लड़ाई की विद्या सिखाया करते थे। वे

हथियार चलाने में इतने होशियार थे कि उस ज़माने के सब लोग उनको गुरु मानते थे।

एक बार गुरु द्रोण अपने सब चेलों को लेकर गंगा नहाने गये। वीर अर्जुन भी उनके साथ थे। जब गुरु नहा रहे थे, तो एक बड़े मगर ने आकर उनकी टाँग पकड़ ली। वह उन्हें गहरे जल की तरफ़ खींचने लगा। द्रोण बाहर को खींचते थे और मगर उन्हें जल में लिये जाता था।

द्रोण बड़े भारी योद्धा थे। वे चाहते तो मगर को आसानी से मारकर छूट आते। लेकिन वे अपने चेलों की वहादुरी देखना चाहते थे। इसी से वे बहुत देर तक मगर से खींचा-तानी करते रहे। उनके सब चेले भी डर की वजह से कुछ न कर सके। वे एक-दूसरे का मुँह ताकते हुए खड़े थे।

आख़िर द्रोण चिल्लाये—कोई बचाओ, मगर मुझे खींचे जा रहा है।

उनके सभी चेले वहाँ मौजूद थे, पर किसी की हिम्मत न पड़ी कि दौड़कर गुरु को मगर के मुँह से निकालता।



वीर अर्जुन

बालक अर्जुन कहीं दूर थे। जब उन्होंने गुरु का चिल्लाना सुना तो दौड़कर आये। आते ही अपनी कमान पर तीर चढ़ाकर वे मगर की तरफ़ दौड़े। पहुँचते ही अपने कान तक खींच कर तीर छोड़ दिया। तीर जाकर मगर के शरीर के भीतर घुस गया। वह मर गया। उसकी लाश पानी पर तैरने लगी।

गुरु बचकर पानी से बाहर निकल आये। आकर उन्होंने अर्जुन की बहादुरी की बड़ी तारीफ़ की और बाक़ी सब चेलों को उनकी कायरता पर धिक्कारा।

अपनी तारीफ़ गुरु के मुँह से सुनकर अर्जुन ने गुरु से कहा—मैंने तो कुछ भी नहीं किया। अगर आप न चाहते तो मैं मगर क्या एक चिड़िया भी नहीं मार सकता।

वीर बालक अर्जुन की ऐसी बातें सुनकर आचार्य और भी ख़ुश हुए। वे पहले से ही अर्जुन को अपने सब चेलों से ज़्यादा प्यार करते थे, पर उस दिन से वे उसे और भी चाहने लगे। उन्होंने अर्जुन को अपने सब चेलों से अधिक मन लगाकर शिक्षा दी। बड़े होने पर अर्जुन सबसे बड़े वीर और निशानेबाज़ हुए।

अर्जुन के बराबर निशाना लगानेवाला उस वक़्त कोई दूसरा वीर नहीं था। इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि अर्जुन ने गुरु को बचाकर बड़ी हिम्मत का काम किया। हर एक लड़के को चाहिए कि अर्जुन की ही तरह मुस्तैदी से दूसरों को आफ़त से बचाने के लिए तैयार रहे।

सवालात

१—गुरु द्रोण ने ख़ुद मगर को क्यों नहीं मारा ?
२—अर्जुन ने मगर को कैसे मारा ?
३—गुरुजी अर्जुन को क्यों बहुत चाहते थे ?

पाठ ५

फूल

तुमने फूल तो अवश्य देखे होंगे। वे कैसे रङ्गीन और ख़ूबसूरत होते हैं! उनकी ख़ुशबू सबको अच्छी लगती है। बहुत से आदमी तो फूलों के पौदे गमलों में लगाते हैं। कोई तरह तरह के फूल लाकर गुलदस्तों में

सजाते हैं। घर के आँगन में और बाहर भी लोग कुछ ऐसी हरियाली लगाते हैं, जिसमें फूल हों। फूलों को बच्चे-बूढ़े सभी पसन्द करते हैं। आज फूलों की बाबत कुछ काम की बातें यहाँ बतलाई जायँगी। बहुत से लड़के वे बातें नहीं जानते होंगे।

फूल जैसे देखने में ख़ूबसूरत होते हैं, उनका काम भी वैसा ही बढ़िया होता है। तुम शायद यह बात नहीं जानते कि वे पौदे के किस काम आते हैं। अगर फूल न हों तो पौदे को बहुत नुक़सान हो।

फूल फल पैदा करते हैं। अगर फूल न हों तो फल या बीज न लगें, और फिर दूसरे पौदों का तैयार होना बन्द हो जाय। तुमने आम का बौर देखा होगा। जब बौर झर जाते हैं तब उसी जगह फल निकलते हैं। जिस पेड़ में जिस साल बौर नहीं आते, उस साल उसमें फल भी नहीं लगते।

इसी तरह अगर चना, मटर, सरसों, बैंगन, करेला, कोंहड़ा और लौकी के पौदों में फूल न लगें, तो उनमें कुछ भी न पैदा हो।

वैसे तुम देखोगे कि बेला, गुलाब, कद्दू और कपास के फूल सभी अपनी-अपनी तरह के हैं। उनका रंग अलग-अलग है, उनकी महक भी अलग-अलग। तुम सब फूलों को लेकर ध्यान से देखो। सबके नीचे दो हरी-हरी पत्तियाँ हैं। जब फूल कली था, तब उन पत्तियों ने उसकी बड़ी हिफ़ाज़त की थी। उसे धूप, हवा, सरदी और मेह से बचाया था। बाद को कली खिलकर फूल हो गई। उसकी मुलायम पँखड़ियाँ खिल गईं। फूल की पँखड़ियाँ उसका सबसे ख़ूबसूरत भाग है। शहद की मक्खियाँ उसी पर आकर बैठती और रस चूसती हैं। तुमने तितली और भौंरों को भी फूलों पर उड़ते हुए देखा होगा। वे भी फूलों को आदमी की ही तरह पसन्द करते हैं।

यदि तुम फूलों की पँखड़ियाँ नोच डालो तो देखोगे कि फूल की तली में बहुत से महीन-महीन मुलायम डोरे से हैं और उनमें से हर एक के सिरे पर छोटी-छोटी घुंडियाँ हैं। इनको केसर कहते हैं। तुम आगे पढ़ोगे कि यह केसर भी फूल में कितनी ज़रूरी चीज़ है। इसके बग़ैर बीज, फूल और पौदों की पैदायश ही नहीं हो सकती।

अब अगर तुम फूल की तली के उन डोरों को भी निकाल फेंको तो तुम देखोगे कि फूल की तह में एक पेंदी सी है। वास्तव में यह पेंदी ही फल या बीज है, जिसकी हिफ़ाज़त फूल की पँखड़ियाँ और केसर कर रहे थे। जब फल या बीज बाहर की हवा और सर्दी-गर्मी सहने लायक़ हो जाता है, तब मुरझाकर फूल की पँखड़ियाँ गिर जाती हैं। बीज फूल के अन्दर हिफ़ाज़त के साथ तैयार हो जाता है।

अब तुम समझ गये होगे कि फूल सिर्फ़ ख़ूबसूरत ही नहीं होता, वह पौदे के लिए सबसे ज़्यादा काम का होता है। इसलिए फूल की हिफ़ाज़त करना भी बहुत ज़रूरी है।

सवालात

१—फूलों से क्या लाभ है ?
२—फूल के कौन कौन से भाग होते है ?
३—केसर किसे कहते है ?

पाठ ६

सन

सन किसान के बड़े काम की चीज़ है। जिस रस्सी से वह अपने बैल के बाँधता है वह सन की ही बनी होती है। उसकी गाड़ी की जाली भी सन की रस्सियों की बनी होती है। कुएँ से पानी खींचने की उसकी डोर भी सन की बनी हुई रहती है। यही नहीं, उसके घर के टाट और बोरे भी सन के ही बने हुए होते हैं।

कुछ दिन पहले उसने सन के बड़े-बड़े लच्छे बाज़ार में जाकर बेच दिये थे। वे लच्छे दूर देशों के चले गये थे। अब वहाँ से वे बोरा या टाट बनकर लौटे हैं। किसान ने अपना सन बड़ा सस्ता बेच दिया था, लेकिन बोरा और टाट उसे बहुत महँगे पड़े हैं। वह टाट बनाना नहीं जानता, नहीं तो वह ख़ुद ही उन्हें तैयार कर लेता। तब उसके पैसे घर से बाहर न जाते। अच्छे किसानों के ये सब चीज़ें बनाना ज़रूर जानना चाहिए।

टाट और बोरे सभी किसानों के काम आते हैं। बोरों मे वे अनाज भरकर रखते हैं। खुले हुए टाट

अनाज या भूसा रखने तथा बाँधने के काम आते हैं।



बहुत से ग़रीब किसान तो बोरों को बिछाते और टाटों को ओढ़ते भी हैं।

सन के रेशे, जो तुमने लच्छों में बँधे देखे होंगे, वास्तव में एक पौदे की छाल होते हैं। सन के पौदे में फूल और बीज भी होते हैं। इसका बीज छिटकाकर बोया जाता है। इसकी खेती के लिए ज़मीन में खाद देने की ज़रूरत नहीं होती। सन का पौदा तो ख़ुद ही खाद होता है। कुछ लोग खाद के लिए ही इसे बोते हैं। जो खाद के लिए बोते हैं, वे फूल आने से पहले ही उसे जोतकर ज़मीन में मिला देते हैं।

सन का पौदा ज़्यादातर अपनी ख़ूराक हवा से लेता है। इसकी जड़ मूसला होती है और अपना आहार ख़ूब गहराई से खींच लेती है। सन के पेड़ इतने घने रहते हैं कि उनके बीच में फालतू घास भी नहीं पनप पाती।

सन बरसात के शुरू में बोकर क्वार में काट लिया जाता है। जो लोग बीज के वास्ते रखना चाहते हैं, वे इसे पक जाने पर दो महीने बाद काटते हैं।

सन के पौदे तालाबों या नालों में सड़ने के लिए डाल दिये जाते हैं। सड़ जाने पर उन्हें सुखाकर सन उनसे अलग कर लिया जाता है। फिर उसी को बटकर किसान लोग

रस्सी बनाते हैं। अक्सर देखा जाता है कि इस सूबे के किसान लोग जो सन निकालते हैं वह साफ़ नहीं होता। इसकी



वजह यह है कि वे उसे गन्दे पानी में सड़ाते हैं, जिससे वह

मैला हो जाता है। सन को हमेशा साफ़ पानी में सड़ाना चाहिए।

इस सूबे के सन में कूड़ा कचरा भी बहुत रहता है। किसान लोग उसके साफ़ करने की ज़रूरत नहीं समझते। वे यों ही उसके लच्छे बना डालते हैं। इन लच्छों में सन के रेशे उलझ जाते हैं, और जब उन्हें ठीक किया जाता है तो बड़ी मेहनत पड़ती है और बहुत सा सन ख़राब हो जाता है। इस वास्ते यदि किसान लोग सन को कंघी से साफ़ भी कर लिया करें और उसके लच्छे न बनाकर और किसी तरीक़े से उसे रक्खा करें तो बहुत अच्छा हो।

सवालात

१—सन कब बोया जाता है?

२—इसकी खाद कैसे बनती है?

३—किसान को सन बोने में अधिक लाभ क्यों नहीं होता?

पाठ ७

स्त्रियों का आदर

रामसरूप और मदनमोहन भाई-भाई हैं। वे दोनों एक ही गाँव में अलग-अलग मकानों में रहते हैं। रामसरूप गाँव में दूकान रखता है और मदनमोहन गाँवों में फेरी लगाकर सौदा बेचता है।

राममरूप के दो लड़कियाँ और दो लड़के हैं। वह अपने लड़कों की तो परवाह करता है, लेकिन लड़कियों की ख़बर नहीं लेता। वह अपनी औरत की भी ख़बर नहीं रखता। उसकी औरत बड़ी सीधी है, लेकिन रामसरूप ने लड़-झगड़कर उसकी आदत ख़राब कर दी है। वह अपनी औरत को कभी-कभी पीट भी देता है।

रामसरूप की बुरी आदत ने उसकी सीधी-सादी औरत का भी मिज़ाज बिगाड़ दिया है। उसकी भी आदत काफ़ी चिड़चिड़ी हो गई है, जिसकी वजह से उसकी दोनों लड़कियाँ और दोनों लड़के भी बुरी आदतें सीख गये हैं। अब ऐसा कोई दिन नहीं जाता, जब उसके

घर में लड़ाई न होती हो। रात-दिन कलह रहने की वजह से खाना बनने में भी गड़बड़ी होने लगी है। लड़कों का पढ़ना-लिखना भी ठीक तरह से नहीं होता। इसी लिए वे इम्तिहान में फ़ेल हो गये हैं।

घर की हालत की वजह से रामसरूप की दूकान का काम भी ढीला पड़ गया है। उसे उसके घरवालों में से कोई मदद नहीं देता। मदद दें भी कहाँ से, किसी को आपस के लड़ाई-झगड़े से ही फ़ुरसत नहीं है। सच तो यह है कि अब रामसरूप भी अपनी ज़िन्दगी से दुखी है।

मदनमोहन रामसरूप को आकर कभी-कभी समझाता है कि भैया, घर की हालत सुधारना हो तो पहले स्त्रियों की हालत सुधारो। उनके सुधरने से घर आप ही आप सुधर जायगा।

मदनमोहन अपनी लड़कियों की उतनी ही परवाह करता है, जितनी लड़कों की। वह अपनी स्त्री का भी आदर करता है। उसकी स्त्री कभी उससे नहीं लड़ती। उसकी लड़कियाँ भी हिल-मिलकर रहती हैं। वे अपने भाइयों की तरह पढ़ी-लिखी भी हैं। लड़के दोनों छोटे हैं।

वे भी अपनी माँ और बहनों की तरह सीधे स्वभाव के हैं।

मदनमोहन रामसरूप से कम रुपया पैदा करता है, लेकिन उसके घर के सब लोग सुखी हैं। किसी को किसी तरह की शिकायत नहीं है। उसकी लड़कियाँ जिसके घर ब्याह-कर जायँगी, वहाँ भी वे लड़ाई-झगड़ा पसन्द नहीं करेंगी। मदनमोहन कहता है—लड़के तो अपने ही घर रहते हैं, पर लड़कियाँ दूसरे घर जाती हैं। उनसे दो घर सँभलते हैं। इसलिए उनकी परवाह और ज़्यादा करनी चाहिए।

रामसरूप भी अब मदनमोहन की बातें मानता है, लेकिन उसके घर के लोगों की आदतें पहले से बुरी हो गई हैं। उसने मदनमोहन से कहा है कि वह उन्हें सुधारने की कोशिश करेगा।

उम्मीद है कि रामसरूप की आदत सुधर जाने से उसका घर सँभल जायगा।

सवालात

१—रामसरूप क्यों सुखी नहीं था ?
२—स्त्रियों का आदर क्यों करना चाहिए ?
३—मदनमोहन अधिक सुखी क्यों था ?

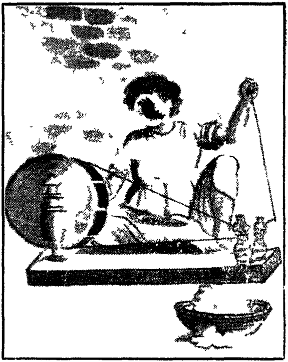
पाठ ८

चरखा

भला ऐसा कैान लड़का होगा जो यह न जानता हो कि कपड़ा सब लोगों के लिए कितना ज़रूरी है। सभी लोग कपड़े पहनते हैं। सभी के पास कुरते-टोपी और धोती हैं। ये कपड़े सूत से बनते हैं। सूत रुई का बनाया जाता है। रुई से सूत बनाने के लिए चरखे की ज़रूरत पड़ती है। चरखे के द्वारा ही सूत तैयार किया जाता है। अब ख्याल किया जा सकता है कि चरखा कितने काम की चीज़ है। अगर चरखा न हो तो हमें बदन ढकने के लिए कपड़े न मिलें।

आजकल तो चरखे की जगह बड़ी-बड़ी मशीनें सूत तैयार करती हैं। एक-एक मशीन में हज़ारों चरखों के बराबर काम होता है। सूत की ये मशीनें हमारे देश में भी हैं, लेकिन ज़्यादातर सूत और कपड़ा विलायत से ही आता रहा है। वहाँ की मशीनों का ही बनाया हुआ कपड़ा और सूत हमें मिलता है। हर साल

हमारा बहुत सा रुपया वहाँ चला जाता है। पहले हमारे यहाँ चरखों के कते सूत से ही इतना ज़्यादा



कपड़ा तैयार होता था कि सब लोग खूब पहनते थे। जो बच जाता था उसे विलायत को भेजकर बेच लेते थे।

अपने देश में कपड़ा न बनने की वजह से अब हम लोग बहुत ग़रीब हो गये हैं। अब हमें दूसरे देशों से कपड़ा ख़रीदना पड़ता है। पहले गाँवों में हज़ारों-लाखों की तादाद में चरखे चलते थे। ऐसा कोई घर न था, जहाँ चरखा न चलता हो। अब आजकल बहुत कम चरखे चलते हैं। भला तुम्हीं बताओ कि तुम्हारे गाँव में कितने घरों में चरखे चलते हैं? शायद ही ऐसे दस-पाँच घर हों, जहाँ चरखा चलता हो। पहले तो घर-घर में चरखा चलता था।

जो काम लोगों को नहीं करना चाहिए, उसमें तो वे बहुत सा समय गवाँ देते हैं, लेकिन कोई फ़ायदे का काम वे नहीं करना जानते। तम्बाकू पीना कितना बुरा है? किसान लोग दिन में बहुत सा समय तम्बाकू पीने और निठल्ले रहने में गवाँ देते है। उनकी औरतें गोबर के उपले बनाने और इसी तरह के और कामों में फ़िज़ूल अपना समय बिता देती हैं। अगर वे उस कुल समय को चरखा चलाकर सूत तैयार करने में लगा दें तो हर साल उनका बहुत सा रुपया बच जाय। गाँवों की ग़रीबी

भी दूर हो जाय और जो लोग सर्दी-गर्मी में बिना कपड़े के रहते हैं उनके शरीर भी कपड़े से ढक जायँ। जाड़े के दिनों में जो बहुत से ग़रीब किसान सर्दी खाकर मर जाते हैं, वे भी बच जायँ।

हर एक आदमी, औरत और लड़के को चाहिए कि वह चरखे से सूत निकालना सीखे। बुरी आदतों और फ़िज़ूल के कामों में जो समय जाता है, वह इसी काम में लगायें, ताकि सब लोगों की भलाई हो। ऐसा करने से हमें कपड़े के लिए दूसरे देशों का मुँह तो न ताकना पड़ेगा। अगर हम चरखा चलाकर सूत तैयार करते रहें तो हमें कपड़े की कभी कमी न रहेगी। हमारे यहाँ के लोग चरखे से ही इतना सूत तैयार कर सकते हैं जो हम सबके लिए काफ़ी हो।

सवालात

१—चरखा चलाना क्यों जरूरी है ?

२—चरखों के बन्द हो जाने से देश को क्या नुक़सान हुआ ?

३—देहात में किन लोगों को चरखा चलाना चाहिए ?

४—'मुँह ताकना' इसका क्या अर्थ है ?

पाठ ९

पहाड़

गुरुजी—क्या तुमने कभी पहाड़ देखा है ?

छोटेलाल—नहीं, मैंने कभी पहाड़ नहीं देखा। पर मैंने सुना है कि पहाड़ पत्थर का होता है। वह बहुत ऊँचा होता है।

गुरुजी—हाँ, कोई-कोई पहाड़ तो बहुत ज़्यादा ऊँचे होते हैं। हिमालय दुनिया का सबसे ऊँचा पहाड़ है। वह हमारे हिन्दुस्तान के उत्तर में है। उस पर बर्फ़ जमी रहती है।

छोटेलाल—बर्फ़ क्यों जमी रहती है ?

गुरुजी—बहुत ऊँचाई पर सर्दी ज़्यादा होती है। वहाँ पानी जम जाता है। पानी जम जाने पर बर्फ़ कहलाता है। इसलिए वहाँ पानी की जगह बर्फ़ गिरती है। यही बर्फ़ गर्मियों में पिघलती है तो नदियों में बाढ़ आ जाती है।

छोटेलाल—बर्फ़ पिघलने से नदियों में बाढ़ क्यों आती है ?

गुरुजी—नदियाँ तो पहाड़ों से ही निकलती हैं। बरसात में पहाड़ पर जो पानी बरसता है वही नालों में बहता हुआ नदी बनकर मैदान में गिरता है। हमारे यहाँ की गङ्गा, यमुना आदि बड़ी-बड़ी नदियाँ पहाड़ों से ही निकली हैं।

छोटेलाल—तब तो पहाड़ों से हमें बहुत फ़ायदा होता है।

गुरुजी—ज़रूर होता है। अगर पहाड़ न हों तो नदियाँ कहाँ से आयें? नदियों से हम नहरें निकालते हैं। नहरों का पानी दूर-दूर तक के खेतों में पहुँचाया जाता है। नदियों में सब लोग नहाते और उसका पानी पीते हैं।

छोटेलाल—पहाड़ पत्थर के होते हैं तो उनसे हम क्या पत्थर ले सकते हैं?

गुरुजी—यह सब पत्थर पहाड़ों से तो आता ही है। बड़ी-बड़ी पत्थर की जो इमारतें बनती हैं उन सबका पत्थर पहाड़ ही से लाया जाता है। तुम्हारे गाँव में जितनी चकियाँ और सिलें हैं, उनका पत्थर भी पहाड़ों से ही आया है। पहाड़ों के नीचे ख़ूब तरी रहती है। वहाँ ख़ूब

घने वन होते हैं। उन वनों से हमें बहुत सी लकड़ी मिलती है।

छोटेलाल—तब तो पहाड़ हमारे लिए बहुत ज़्यादा फ़ायदे के है।



गुरुजी—हाँ, इसके अलावा सोना, चाँदी, कोयला, लोहा वग़ैरह की खदानें भी पहाड़ों के पास पाई जाती है। ये चीज़ें ज़मीन के अन्दर पैदा होती है। इन चीज़ों स हमारे इस्तेमाल के औज़ार, हथियार, बर्तन वग़ैरह बनते हैं। यह तो तुम्हे मालूम ही है कि कोई-कोई पहाड़ बहुत ऊँचे

होते है। उन्हें पार करना मुश्किल होता है। ऐसे पहाड़ अगर कहीं किसी देश की सीमा पर हुए तो वे क़िले की बड़ी-बड़ी दीवारों का काम करते हैं। अगर हमारे देश के उत्तर में हिमालय पहाड़ न होता तो उत्तर से सभी जातियाँ आकर हमारा रहना मुश्किल कर देतीं।

छोटेलाल—मैं भी पहाड़ों पर रहना चाहता हूँ।

गुरुजी—पहाड़ तुम्हारे गाँव से दूर हैं। वहाँ गर्मी कम पड़ती है। वहाँ की आब-हवा बड़ी अच्छी होती है। बहुत से लोग गर्मियों में पहाड़ पर जाते हैं।

छोटेलाल—पहाड़ तो पत्थर के होते हैं, फिर लोग वहाँ जाकर कहाँ रहते हैं?

गुरुजी—पहाड़ पर भी मैदान की तरह नगर और गाँव बसते हैं। नैनीताल और अलमोड़ा पहाड़ी शहर हैं। वहाँ बहुत लोग रहते हैं।

सवालात

१—पहाड़ों से क्या लाभ है?

२—बहुत ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ क्यों जमी रहती है?

३—किस मौसम में बर्फ़ पिघलती है?

पाठ १०

पौंसला

पंडितजी कई लड़कों के साथ छुट्टी के बाद जा रहे थे। रास्ते में कुएँ पर एक आदमी लोगों को पानी पिला रहा था। पंडितजी ने और उनके साथ के लड़कों ने भी जाकर पानी पिया। चलते समय पंडितजी ने एक लड़के से पूछा—मातादीन, बताओ यह क्या है?

मातादीन—यह पौंसला है। यहाँ प्यासे आदमियों को पानी पिलाया जाता है।

रामसेवक पौंसला नहीं जानता था। उसने पूछा—भाई, यह आदमी क्यों लोगों को पानी पिलाता है? क्या इसे और कोई काम नहीं है?

मातादीन—काम क्यों नहीं है? पानी पिलाना भी तो एक काम है। इसको महीने में आठ रुपये दिये जाते हैं। सेठ गोपालदास ने इसको यहाँ बिठाया है। सेठजी अमीर आदमी हैं। उन्होंने और भी कई जगह पौसला बैठाया है।

रामसेवक---सेठजी इतने रुपये क्यों खर्च करते हैं? इससे उन्हें क्या फायदा है?



मातादीन---यह तो मैं नहीं जानता। पंडितजी से पूछो, वे ही बतलायेंगे।

पंडितजी ने कहा—पौंसला बैठाना बड़े उपकार का काम है। गर्मी के मौसम में आदमी और जानवर सबको बहुत प्यास लगती है। देखो, पौंसले के पास ही एक पत्थर का घेरा है। उसमें भी पानी भरा है। उसे चरही कहते हैं। जानवर उसमें जाकर पानी पीते हैं। सेठजी का रुपया बरबाद नहीं होता है। एक दिन में न जाने कितने थके-प्यासे मुसाफ़िर और जानवर पानी पीकर सेठजी को असीस देते हैं। तुम्हीं लोगों को प्यास लगी थी। यदि यह पौंसला न होता तो तुमको कितना कष्ट होता! क्या तुम भी, मन ही मन पौंसला लगानेवाले को असीसते नहीं हो?

रामसेवक—जी हाँ, तब तो यह बडा अच्छा काम है। अपने गाँव में भी लोग प्यासे इधर-उधर भटका करते है। वहाँ भी एक पौंसला लग जाय तो कैसा अच्छा हो?

पंडितजी—सचमुच बड़ा अच्छा हो।

रामसेवक—मैं बाबूजी से कहूँगा कि अपने कुएँ पर भी एक पौंसला बैठा दें।

मातादीन—पंडितजी, मैं जब आपके साथ मेला देखने गया था तब वहाँ कई जगह बहुत से आदमी और लड़के पानी पिला रहे थे। क्या वे भी पौंसला में काम करते थे?

पंडितजी—वे स्वयं-सेवक थे। स्वयं-सेवक सेवा के बहुत से काम करते हैं। उन्हें कोई नौकर नहीं रखता।

मातादीन—तब तो यदि मैं भी चाहूँ तो अपनी इच्छा से पानी पिलाने का काम कर सकता हूँ?

पंडितजी—हाँ, तुम अपनी इच्छा से उपकार के सभी काम कर सकते हो।

उसी दिन रामसेवक ने लौटकर अपने बाप से पौंसला बैठा देने को कहा। रामसेवक के बाप ने अपने बेटे की राय पसन्द की। उन्होंने अपने कुएँ पर राहगीरों और जानवरों को पानी पिलाने के लिए एक पौंसला तथा चरही का प्रबन्ध कर दिया। मातादीन ने भी पंडितजी से जो बातें कही थीं, उन पर अमल किया। वह हमेशा लोगों की मदद करने को मुस्तैदी से तैयार रहता है।

सवालात

१—पौंसला किसे कहते हैं?

२—लोग पौसला क्यों बैठाते हैं ?

३—तुम कौन-कौन से उपकार के काम कर सकते हो ?

पाठ ११

रामलाल की सलाह

हमारे गाँव में रामलाल नाम का एक आदमी कहीं बाहर से आया है। वह पृथ्वी के कई देशों में घूम चुका है। वह अमरीका, जापान, इँगलेंड और अफ्रीका सब जगह हो आया है। वह सभी देशों के देहातों में घूमा है। उसने बढ़िया से बढ़िया गाँव देखे हैं। वह अच्छे से अच्छे किसानों से मिला है।

हमारे गाँव को देखकर उसने कहा—यहाँ तो कुछ भी पैदावार नहीं होती। यहाँ अभी लोग खेती से फ़ायदा उठाना सीखे ही नहीं हैं।

उसकी बातों से हमारे गाँव के किसान लोग हैरत में आ गये थे। पहले वे उसकी बातों पर यक़ीन नहीं करते थे। लेकिन जब उसने अमरीका से लाये हुए बीजों को

दिखलाया तो सब लोगों को विश्वास हो गया। उसने वहाँ के खेत और हल-बैलों की बहुत सी तसवीरें भी दिखलाईं।

वह हमारे गाँव में सब जगह घूमा था। उसने हमारे खेत भी देखे थे। उसने बहुत सी ऐसी बातें बतलाईं जो सचमुच किसानों के बड़े फ़ायदे की हैं।

रामलाल ने कहा—तुम्हारे गाँव में, मालूम पड़ता है, सफ़ाई का कुछ भी इन्तज़ाम नहीं है। जगह-जगह कूड़ा-कचरा और मैला इकट्ठा हो रहा है। लेकिन तुम्हारे खेत साफ़ पड़े हुए हैं। शायद तुम यह नहीं जानते यह कूड़ा-कचड़ा बस्ती में रहने से तरह-तरह की बीमारियाँ पैदा होती हैं, लेकिन अगर यही खेतों में पहुँच जाय तो वह सोना हो जायगा। इसे यहाँ रखकर तुम बीमारी भी बुला रहे हो और ग़रीब भी होते जा रहे हो। पर तुम्हारे खेत इसके लिए भूखे पड़े हैं।

गाँव की औरतों को देखकर उसने कहा—इनसे तुम लोग उपले बनवाते और चक्की पिसाते हो! यही वजह है, जो मैं तुम्हारे गाँव में इतनी ग़रीबी देख रहा हूँ। सबके छप्पर उजड़े पड़े हैं, किसी के पास शरीर ढकने को भी

कपड़ा नहीं है। अरे भाइयो, उपले बनवाना बन्द करो। लकड़ी जलाओ। गोबर की खाद को खेतों में डालो तो दूनी-चौगुनी फ़सल होगी। औरतों से ग़ुलामों के काम मत लो। उनसे कहो, ख़ुद साफ़ रहें और घर की सफ़ाई रक्खें। उन्हें एक-एक चरखा ला दो। वे तुम्हारे कपड़ों के लिए सूत काता करेंगी। तुम लोग भी तम्बाकू पीना बन्द करो। उतनी देर सन या मूँज लेकर रस्से-रस्सियाँ बट लिया करो। तब ग़रीबी तो तुमसे हाथ जोड़ेगी।

उसने गाँव के लड़कों को देखकर कहा—इन लड़कों को तुमने इतना गंदा क्यों कर रक्खा है? क्या तुम समझते हो कि लड़के भी खाद देने से बढ़ते हैं? भाइयो, इन्हें ख़ूब साफ़ रक्खो। आदमी, बच्चे और औरतें सफ़ाई से बढ़ते हैं। गन्दगी से खेती फलती-फ़ूलती है।

उसने और भी बहुत सी बातें कहीं। औरतों के गहने देखकर उसने कहा— इन गहनों से बड़ा नुक़सान होता है। सोना-चाँदी घिस जाते हैं। गहना देखकर चोर घात लगाते हैं। कभी-कभी वर्षों की कमाई, एक ही रात में,

चोरी से चली जाती है। इसलिए रुपये को हमेशा कार-बार में लगा रक्खो या बैंक में जमा कर दिया करो।

उसकी बातों का गाँव भर पर बहुत असर हुआ। अब थोड़े दिनों में ही गाँव की हालत बदल गई है। अब खेती लहलहाने लगी है। गाँव में बीमारी कम हो गई है। उम्मीद है कि कुछ ही दिनों में हमारा गाँव एक आदर्श गाँव हो जायगा।

सवालात

१—दूसरे देशों के और यहाँ के किसानों में क्या अन्तर है ?
२—यहाँ के गाँवों में क्या-क्या बुराइयाँ हैं ?
३—रामलाल ने गाँववालों को क्या शिक्षा दी ?
४—आदर्श गाँव किसे कहते हैं ?

पाठ १२

लालची पुरोहित

एक बाघ बहुत बूढ़ा और कमज़ोर हो गया। शिकार पकड़ने की उसमें ताक़त न रही। तब उसने एक

उपाय सोचा। वह कहीं से एक सोने का कड़ा ले आया।

कड़ा लेकर वह रास्ते के पास आ बैठा। उधर से एक ब्राह्मण निकला। ब्राह्मण ने बाघ को देखा तो



उसका दिल दहल गया। वह लौटने ही को था कि बाघ उसे सोने का कड़ा दिखाकर बोला—पुरोहित महाराज, डरिए नहीं। मैं आज आप ही की राह देखता हुआ बैठा हूँ। मैंने ज़िन्दगी भर बहुत से पाप किये हैं। अब बुढ़ापे में मैं कुछ दान करना चाहता हूँ। आप दया करके इस कड़े का संकल्प कर दीजिए।

सोने का कड़ा देखकर ब्राह्मण के मुँह में पानी भर आया। लेकिन डर के मारे उसे आगे बढ़ने की हिम्मत न पड़ी। वहीं से खड़े-खड़े वह कड़े की तरफ़ लालच-भरी निगाह से देखने लगा।

बाघ ने देखा—शिकार फँस रहा है। उसने फिर कहा—महाराज, देर न कीजिए। पापों का बोझा मुझे दबा रहा है। आप जल्दी से चलकर स्नान कर लीजिए।

ब्राह्मण तो पहले से ही ललचा रहा था। बाघ की मीठी-मीठी बातों से उसे और भी यक़ीन हो गया। उसने कहा—अच्छी बात है। तुम यहीं रहो, मैं अभी नहा आता हूँ।

ब्राह्मण ने अपने कपड़े उतार डाले। बाघ ने कहा—महाराज, उधर से चलिए। मैं आपको घाट का ठीक रास्ता बताये देता हूँ।

बाघ ने ब्राह्मण को नदी का रास्ता बता दिया। ब्राह्मण स्नान करने चला। रास्ते में एक जगह बड़ी दलदल थी। थोड़ी दूर जाकर ब्राह्मण उसी दलदल में फँस गया। उसका निकलना मुश्किल हो गया। वह जितने ही हाथ-पैर

मारता था, उतना ही फँसता जाता था। आखिर ब्राह्मण ने अपने यजमान बाघ को पुकारा। उसने कहा—दौड़िए, मैं फँस गया!

बाघ तो इसके लिए तैयार ही बैठा था। ब्राह्मण की पुकार सुनकर वह बोला—पुरोहितजी, घबड़ाइए नहीं, मैं अभी आया।

ज़रा देर में बाघ उसके पास पहुँच गया। उसने झट से ब्राह्मण को धर दबोचा। अब ब्राह्मण ने बाघ की चालाकी समझी, पर तब तक भूखा बाघ उसे नोच-नोच कर खाने लगा। ज़रा देर में उसका नाम-निशान तक न रहा!

लालच का नतीजा कभी अच्छा नहीं होता। अगर ब्राह्मण लालच न करता तो बच जाता, क्योंकि उस वक़्त वह बाघ की पहुँच से बाहर था। बाघ में झपट कर पकड़ने की ताक़त न थी। इसलिए किसी को यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि लालच बुरी बला है। वह आदमी को आफ़त में डाल देती है।

सवालात

१—ब्राह्मण दलदल में कैसे फँसा?

२—बाघ ने उसे कैसे मारा ?

३—तुमने इस पाठ से क्या सीखा ?

४—'हाथ-पैर मारता था'—इसका क्या मतलब है ?

पाठ १३

तारे

रामदयाल, नूरमुहम्मद, हामिद, जगदीश और लाल-मन कभी-कभी पंडितजी के साथ गाँव के बाहर घूमने जाते थे। एक दिन वे शाम को घूमने निकले। सब लोग एक बड़े मैदान में जा पहुँचे।

पंडितजी ने आसमान की तरफ़ उँगली उठाकर पूछा—तुममें से कोई यह बता सकता है कि ये क्या है ?

सभी ने कहा—मैं बताऊँ, मैं बताऊँ ?

पंडितजी—अच्छा हामिद, तुम बताओ।

हामिद—ये तारे हैं। मैं इन्हें रोज़ देखता हूँ; पर ये इतने ज़्यादा हैं कि गिने ही नहीं जा सकते।

पंडितजी—हाँ, ये गिने नहीं जा सकते। फिर भी तुम्हें कम तारे नज़र आते हैं। तुम सब तारों को नहीं देख सकते। अब रामदयाल तुम बताओ, ये हमसे कितनी दूर हैं ?

रामदयाल—साहब, ये बहुत दूर हैं। दादा बताते थे कि ये बहुत बड़े-बड़े हैं। बहुत दूर होने से छोटे-छोटे देख पड़ते हैं।

पंडितजी—ठीक कहते हो। कोई-कोई तारे तो तुम्हारी ज़मीन से भी बहुत बड़े हैं।

लालसिंह ने ताज्जुब के साथ पूछा—हमारी जमीन तो बहुत बड़ी है। उस पर कानपुर, कलकत्ता, बम्बई वग़ैरह बड़े-बड़े शहर हैं। तो क्या ये छोटे-छोटे तारे उससे भी बड़े हैं ? यह बात हमारी समझ में बिलकुल नहीं आती।

पंडितजी—हाँ, उससे भी बड़े हैं। कुछ लोगों का ख़्याल है कि उनमें से भी किसी-किसी में इसी तरह बड़े-बड़े नगर, पहाड़ और नदियाँ हैं। दूर होने की वजह से वे दिखाई नहीं पड़ते। तुम्हारी ज़मीन भी एक तारा है। अगर तुम और किसी तारे पर से खड़े होकर इसे देखते तो यह भी

एक तारे की तरह दिखाई पडती। अगर किसी तारे में सचमुच लोग रहते होंगे तो वे जमीन को एक तारा ही समझते होंगे।

जगदीश—पंडितजी, यह तो बताइए कि तारे दिन को कहाँ चले जाते हैं ?

पंडितजी—तारे दिन को भी रहते हैं, पर सूरज की रोशनी इतनी तेज़ होती है कि वे छिप जाते हैं। तेज रोशनी के सामने धीमी रोशनी मन्द पड़ जाती है। अच्छा, लालसिंह तुम किसी तारे को पहचानते हो ?

लालसिंह—मैं एक तारे का नाम जानता हूँ; उसे पहचानता नहीं। वह है ध्रुवतारा।

पंडितजी—हाँ देखो, वह उत्तर की तरफ़ ध्रुवतारा है। वह हमेशा उत्तर में ही रहता है। वह और तारों से कुछ ज़्यादा चमकदार है। रात में जब लोगों को दिशा जानने की जरूरत होती है, तब इसी तारे को देखकर जान लेते हैं। इसके अलावा ये सात तारे देखो। ये तारे हमेशा इसी तरह निकलते हैं। ये सात ऋषि या सप्तर्षि कहलाते

हैं। इसी तरह ज्योतिषियों ने ख़ास-ख़ास तारों के नाम रख लिये हैं। ज्योतिष वह विद्या है जिसमें तारों की चाल का हिसाब वग़ैरह लगाया जाता है।

रामदयाल—पंडितजी, ये तारे बड़े अच्छे मालूम होते हैं। सूरज में गर्मी होती है, लेकिन तारों में गर्मी भी नहीं होती।

पंडितजी—ईश्वर ने ऐसी-ऐसी बहुत सी चीजें बनाई हैं। वह बहुत बड़ा कारीगर है। अगर तारों को भी वह सूरज की तरह बना देता तो गर्मी के मारे सब लोग झुलस जाते। इसलिए हम सबको ईश्वर को हमेशा धन्यवाद देते रहना चाहिए।

नूरमुहम्मद—मुझे तो अब नींद आ रही है।

पंडितजी—चलो, लौट चलें। अब फिर किसी दिन सैर होगी।

और भी सब लड़के घूमते-घूमते थक गये थे। इस वास्ते सब लोग लौट पड़े। थोड़ी देर में सब अपने-अपने घर आ गये।

सवालात

१—तारे दिन में क्यों नहीं दिखाई पड़ते ?

२—तुम सब तारों को क्यों नहीं देख सकते ?

३—ध्रुव तारा से क्या लाभ है ?

पाठ १४

दस्तकारी

बढ़ई गाँव के लिए बहुत ही जरूरी है। उसका पेशा हर तरह से लोगों की मदद करना है। वह एक-दो नहीं, बहुत सी ऐसी चीजें बनाता है, जिनकी जरूरत गाँव के प्राय. हर एक आदमी को पड़ती है। हल, जुआ, दरवाजे, खिड़कियाँ, पालकी वग़ैरह तो उसके बनाये होते ही हैं। डीवट, खड़ाऊँ, सन्दूक़ और खुरपा, कुल्हाड़ी, बसूला के बेंट भी वही बनाता है। बैलगाड़ी, रथ, नाव वगैरह भी तो बढ़ई ही बनाता है। वह लकड़ी पर और भी तरह-तरह की नक्काशी करता है। मतलब यह है कि लकड़ी के जो कुछ भी काम बन सकते हैं वे बढई की ही दस्तकारी के नमूने हैं।

यों तो आम तौर से सभी बढ़ई थोड़ी बहुत सभी चीज़ें बना सकते है, लेकिन कुछ बढ़ई एक ही दो चीजों

के बनाने में अपना हुनर दिखाते हैं। एक ही काम बराबर करते-करते वे उसमें बहुत होशियार हो जाते हैं। वे उन चीज़ों को थोड़ी देर में दूसरों से अच्छी तैयार कर लेते हैं। उनकी विशेषता को दूसरे लोग पा ही नहीं सकते।

इसमें ज़रा भी शक नहीं कि उनका यह तरीक़ा बहुत अच्छा है। क्योंकि जो ख़रीदार उनके हाथ की बनी हुई चीज़ एक बार ख़रीद लेता है, वह फिर दूसरे के हाथ की बनी चीज़ पसन्द नहीं करता। इसी से वह बढ़ई थोड़े ही दिनों में सब लोगों में मशहूर हो जाता है। लोग ख़ुद ही उसके दरवाज़े पर उसे काम देने पहुँच जाते हैं। लेकिन जो बढ़ई सभी बातों में अपनी टाँग अड़ाता है, जो पालकी, गाड़ी, पहिये, दरवाज़े, खिड़की और खड़ाऊँ सभी चीज़ें बनाने की कोशिश करता है वह बिलकुल मशहूर नहीं हो पाता। उसके ख़रीदार भी उसके काम से ख़ुश नहीं होते। बात यह है कि वह सब चीज़ें बनाने की वजह से बहुत सफ़ाई के साथ कोई भी चीज़ नहीं बना पाता। गाँवों के ज़्यादातर बढ़ई इसी तरह के होते हैं। ऐसे बहुत कम होते हैं जो सिर्फ़ एक ही काम करते हों। लेकिन शहरों में

इस तरह के पेशेवाले एक ही तरह का काम करना अधिक पसन्द करते हैं।

हमारा गाँव लखनपुर है तो छोटा, लेकिन उसमें एक बढ़ई रहता है। वह सिर्फ़ गाड़ियों के लिए पहिये बनाता है। उसकी पहियों की जोड़ी दूर-दूर तक जाती है। लोग उसका नाम पूछते चले आते हैं और उससे पहिये ख़रीद ले जाते हैं। उसका नाम चारों तरफ़ मशहूर हो गया है। जो एक दफ़ा उसके यहाँ से पहिये ले जाता है वह फिर कभी उसको नहीं भूलता। उसकी वजह से इस गाँव का नाम भी बहुत लोग जान गये हैं। वह और बढ़इयों की बनिस्बत दाम कुछ ज़्यादा भी लेता है, तो भी लोग पहियों की जोड़ी उसी के यहाँ से ख़रीदते हैं।

उसकी देखादेखी और एक-दो बढ़ई पहिये बनाने लगे थे, लेकिन उसके सामने उन लोगों का काम नहीं चला। इसकी वजह यही थी कि वे लोग पहिये बनाने के साथ साथ और भी सभी चीज़ें बनाते थे। इसलिए उनके बनाये हुए पहियों में न वह सफ़ाई आती थी और न वह मज़बूती ।

लड़को, तुममें से जो लोग दस्तकारी करने का इरादा रखते हों और यह चाहते हों कि उनके काम की ख़ूब शोहरत हो, तो अच्छा यही होगा कि वे एक ही दो चीज़ों के बनाने में विशेषता प्राप्त करें।

सवालात

१—दस्तकारी किसे कहते है ?

२—तुम बहुत सी दस्तकारी सीखना पसन्द करोगे या एक-दो ?

३—बहुत से काम एक साथ करने से क्या नुक़सान है ?

पाठ १५

अच्छा ज़मीन्दार

मोहनसिंह कई गाँवों का ज़मीन्दार है। आजकल उसकी हालत बहुत बुरी हो गई है। पाँच बरस पहले, उसके बाप के ज़माने तक, उसके घर की यह हालत न थी। तब न उसके ऊपर क़र्ज़ था, न वह इतना ग़रीब था। गजराजसिंह को देखो, वह मोहनसिंह के सामने बहुत ही छोटा ज़मीन्दार था। लेकिन आज उसकी हैसियत

और उसका रोब-दाब मोहनसिंह से ज़्यादा है। उसके काश्तकार उससे बहुत .खुश हैं। उसकी ज़मीन की आमदनी बढ़ रही है। मोहनसिंह की कुछ ज़मीन भी उसके पास पहुँच गई है। एक ही साल में उसकी हालत बदल गई है। सरकार के यहाँ भी गजराजसिंह का मान है। इसी साल वह आनरेरी मॅजिस्ट्रेट बना दिया गया है। इलाक़े भर के मामले मुक़दमे अब वही तय करता है।

लोगों का कहना है कि यह सब मोहनसिंह की बेअक़्ली से हुआ है। बाप के मरने के पहले साल ही से उसने किसानों को सताना शुरू कर दिया है। हरदम तरह तरह की बेगार करते-करते किसान लोग उससे तंग आ गये। गजराजसिंह ने अपने यहाँ बेगार बिलकुल उठा ही दी है। जो कोई काम करता है उसे बराबर पैसे दिये जाते हैं। इसी से अगर रात को ज़रूरत हो तो भी लोग उसका काम करने को तैयार रहते हैं।

मोहनसिंह के कारिन्दों ने किसानों पर कई तरह के अत्याचार भी करने शुरू कर दिये थे। उन्होंने किसानों से रिश्वतें लेनी शुरू कर दी थीं और पुराने-पुराने

काश्तकारों को भी थोड़े से लालच के लिए बेदखल कर दिया था। लेकिन गजराजसिंह कारिन्दों पर कुछ भी नहीं छोड़ता। वह उनके हर एक काम की .खुद देख-भाल करता है। उसके कारिन्दे कभी किसानों पर अत्याचार नहीं कर पाते।

इन पाँच सालों के अन्दर मोहनसिंह की ज़मीन्दारी में बहुत से झगड़े हुए। किसानों का बड़ी मेहनत से पैदा किया हुआ बहुत सा रुपया अदालत जाने में बरबाद हो गया। बहुत से किसानों ने .खुद जाकर मोहनसिंह को यह सब हाल बताया था। लेकिन उसने ठीक कार्यवाही न की। उसने .खुद जाकर तहक़ीक़ात करने और जिनका क़सूर होता उन्हें सज़ा देने के बदले, अपने कारिन्दों के पास सब हालात लिखकर भेज दिये। इस तरह जब उसने जाँच शुरू की तो कारिन्दे होशियार हो गये, और जिन लोगों ने जाकर ज़मीन्दार से फ़रियाद की थी उनके ख़िलाफ़ और भी बहुत से मामले गढ़ दिये।

इन सब बातों से सभी किसान परेशान हो गये। बहुत से किसान तो अपना घर-बार छोड़कर बाहर चले

गये। कुछ ने जाकर शहरों में नौकरी कर ली और ज़्यादा-तर गजराजसिंह की ज़मींदारी में जाकर बस गये। उसके जो गाँव ख़ूब भरे-पूरे और जो खेत सर-सब्ज़ दिखलाई पड़ते थे वे थोड़े ही दिनों में वीरान हो गये।

मोहनसिंह के कारिन्दों ने लोगों को बेदख़ल कर करके बहुत सी ज़मीन छुड़ा ली थी। कुछ लोग ख़ुद ही उनके बुरे व्यवहार से तङ्ग आकर चले गये थे। इसी से अब बहुत सी अच्छी ज़मीन भी हर साल बग़ैर बोई हुई पड़ी रहती है। किसानों को पूरी तबाही आ गई है। भर-पेट खाना न मिलने की वजह से लोग चोरी करने और दूसरों के खेत उजाड़ने लगे हैं। ख़ुद ज़मीन्दार की भी पहले से आधी आमदनी रह गई है। किसानों की ही नहीं, ज़र्मीन्दार की हालत भी ख़राब हो गई है। लेकिन बड़े अफ़सोस की बात है कि अभी तक मोहनसिंह ठीक रास्ते पर नही आ रहा है। उसके यहाँ के मुक़द्मे भी अब गजराजसिंह के पास जाने लगे हैं। पहले गजराजसिंह को भीतरी हाल मालूम न था। अब कई एक मुक़द्मों के बाद उसे असलियत का पता चला। इसी से उसने एक दिन मोहनसिंह

को बुलाकर बहुत समझाया है और अब ऐसा मालूम पड़ता है कि उसका कहना मानकर मोहनसिंह सुधर जायगा।

सवालात

१—मोहनसिंह कैसा ज़मीन्दार था ?

२—उसकी ज़मीन्दारी का इन्तज़ाम क्यों खराब था ?

३—तुम कैसा ज़मीन्दार पसन्द करते हो ?

४—वीरान, फ़रियाद और अत्याचार का अर्थ बताओ।

पाठ १६

पक्का मकान

अभी तक गाँव में कोई पक्का मकान नहीं था। अब एक मकान बन रहा है। यह मकान ज़मीन्दार ने बनवाया है। ज़मीन्दार का नाम रामसिंह है। रामसिंह बहुत अमीर हैं। वे गाँव के मुखिया भी हैं। उनका लड़का वकालत पास हुआ है। कच्चा मकान उसे पसन्द नहीं था। उसी के लिए यह पक्का मकान बनवाया जा रहा है।

वह कभी-कभी आकर इस मकान में रहा करेगा। अभी वह शहर में एक बँगले में रहता है।

यह मकान पकी ईंटों और पत्थर से बन रहा है। पकी ईंटें भट्टे में पकाई गई हैं। पत्थर की चट्टानें बाहर से बैलगाड़ियों पर लदकर आई हैं। ईंटों की जुड़ाई चूने के गारे से होती है। गारा मज़दूर बना रहे हैं। चूना भी बाहर से ही आया है।

ईंटों की जुड़ाई राज करते हैं। गाँव में कोई राज नहीं था। ये राज भी शहर से ही आये हैं। ये बड़े होशियार हैं। शहर में जो बड़ी-बड़ी इमारतें बनती हैं वे राज ही बनाते हैं।

इमारतें बहुत ऊँची होती हैं। ऊँची इमारतें बनाने के लिए वे मचान बँधवा लेते हैं। उन्हीं मचानों पर बैठकर वे अपना काम करते हैं। मोहनसिंह का मकान भी ख़ूब ऊँचा बन रहा है। वह दोमंज़िला बनेगा। शहर में कई मंजिले मकान होते हैं।

आज इस मकान में भी मचान बँध गये हैं। देखो, राज ऊपर-ऊपर जुड़ाई कर रहा है और मज़दूर गारा और ईंटें पहुँचा रहे हैं।



यह मकान बरसात में बनकर तैयार हो जायगा। कच्चे मकान बरसात में नहीं बनते, लेकिन पक्के मकान बरसात

में ही बनाने में सहूलियत होती है। उस वक्त पानी की कमी नहीं रहती।

पक्के मकान अमीर लोग ही बनवाते हैं। ग़रीब लोग पक्के मकान नहीं बनवा सकते। ग़रीब बेचारे तो झोपड़ों में ही रहते हैं। पक्के मकानों में रुपया बहुत लगता है। ग़रीबों के पास रुपया नहीं होता। उन्हें तो भर पेट खाना मिलना ही कठिन होता है।

जितने राज-मज़दूर इस मकान को बना रहे हैं वे सभी ग़रीब हैं। दिन भर काम करने के बाद जो कुछ पा जाते हैं, वे उसी पर गुज़र करते हैं। अगर उनके पास रुपया होता तो वे भी अपने-अपने पक्के घर बना लेते। पक्के घरों में आराम ज़्यादा होता है। जल्दी उनके गिरने का डर नहीं रहता।

सवालात

१—गाँव में पक्के मकान क्यों कम होते हैं ?

२—पक्के मकान बनवाने में किन किन चीज़ों की ज़रूरत होती है ?

३—ग़रीब लोग कच्चे घरों में क्यों रहते है।

पाठ १७

चेचक

चेचक बहुत बुरी बीमारी है। इस बीमारी के रोगी को बड़ी तकलीफ़ होती है और अकसर परिणाम भी भयङ्कर होता है। इसके रोगी को बड़ी सावधानी से रहना चाहिए। ज़रा भी असावधानी से रोगी की दशा बिगड़ जाने का डर रहता है। इस बीमारी से हज़ारों की तादाद में जवान और बच्चे हरसाल मरते हैं।

यह छूत की बीमारी होती है। यह अकसर एक लड़के के निकल आने पर फिर घर के और लड़कों को भी नहीं छोड़ती। जिसके चेचक निकलने को होती है उसे पहले सर्दी मालूम पड़ती है। एकाएक बुख़ार आ जाता है और अकसर क़ै भी होती है। शरीर में छोटे-छोटे लाल दाने झलकने लगते हैं। मुँह तमतमा जाता है। दो-तीन दिन में दाने बड़े हो जाते हैं। उस वक़्त चेचक को पहचानने में देर नहीं लगती। फिर दो दिन बाद वे दाने पीब से भर जाते हैं।

चेचक के दाने कभी-कभी इतने भयंकर होते हैं कि उनके कारण रोगी का शरीर सदा के लिए ख़राब हो जाता है। कभी-कभी किसी-किसी रोगी की आँख ही जाती रहती है; क्योंकि ये दाने शरीर के हर भाग पर निकलते हैं। सारा शरीर, क्या आँख और क्या जीभ, सभी, दानों से भर जाता है। जहाँ के दानों के सूखने में कुछ भी गड़बड हुई, वहाँ फिर बड़ी ख़राब हालत हो जाती है।

चेचक के दाने, आप ही आप, ज़ोर कम होने पर सूखने लगते हैं। कुछ दिनों में वे बिलकुल सूख जाते हैं। जब सूखकर उनकी पपड़ी गिर जाय और शरीर बिलकुल साफ़ हो जाय, तो समझना चाहिए कि अब बीमारी का डर नहीं रहा।

ऐसी भयानक बीमारी से बचने के लिए हर एक आदमी को भरसक उपाय करना चाहिए। सबसे सरल तरीक़ा इससे बचने का है टीका लगवा लेना। चेचक का टीका लगाने के लिए सब जगह सरकारी तौर पर इन्तज़ाम रहता है। गाँवों के लोग टीका लगवाने से डरा

करते हैं। वे नहीं जानते कि जब से टीका लगने लगा है तब से चेचक के रोगियों की तादाद कम हो गई है।

तीन बार टीका लगवा लेने से फिर चेचक का डर नहीं रहता। एक बार बचपन में, दूसरी बार सात साल की अवस्था होने पर और तीसरी बार चौदह साल की अवस्था में। टीका लगवाने पर भी कुछ दिनों तक तकलीफ़ ज़रूर रहती है, पर उसमें किसी तरह का अंदेशा नहीं रहता। वैसे तो तकलीफ़ के अलावा चेचक के रोगी का जीवन ही संकट में पड़ जाता है।

जो इस रोग से बीमार हों, उनकी हिफ़ाज़त के लिए ये तरीक़े काम में लाने चाहिए:—

१—साफ़ और हवादार जगह पर ही सदा उसे रखना चाहिए।

२—रोगी की हिफाजत के लिए उसके पास एक आदमी बराबर रहे। वह उसे साफ़ रक्खे। वह घर के और दूसरे लोगों को जहाँ तक हो सके न छुवे।

३—रोगी को भूख लगने पर बहुत हलका और सादा खाना दिया जाय। जब तक शरीर में दाने रहें,

तब तक नारियल का तेल लगाते रहना चाहिए, क्योंकि उन दानों में बड़ी जलन रहती है।

४—रोगी के बिस्तर और वस्त्र सब ख़ूब साफ़ रहने चाहिएँ।

५—दानों को अपने आपही सूखने देना चाहिए। उन्हें खुजलाना या फोड़ना न चाहिए।

सवालात

१—चेचक कैसी बीमारी होती है?

२—चेचक के रोगी को कैसे रहना चाहिए?

३—चेचक से बचने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?

पाठ १८

तम्बाकू

क्या गाँव, क्या शहर, सब जगह तम्बाकू का लोग बहुतायत से इस्तेमाल करते हैं। तम्बाकू की तरफ़ लोगों का इस क़दर झुकाव देखकर यह समझा जा सकता है कि यह बड़े

फ़ायदे की चीज़ होगी। क्योंकि कोई इसे खाता है, कोई पीता और कोई सूँघता है। कई तरह से यह वहाँ इस्तेमाल की जाती है। किसी के घर जब कोई जाता है तो तम्बाकू खिला या पिलाकर उसका सत्कार किया जाता है। गाँव के किसान और काम-काजी लोगों का तो बहुत सा समय तम्बाकू पीने में ही चला जाता है। लेकिन लड़को! तुम्हें यह अच्छी तरह याद रखना चाहिए कि तम्बाकू बहुत बुरी चीज़ है। न इसका पीना अच्छा है, न खाना और न सूँघना।

तम्बाकू एक नशा है और बहुत बुरा नशा है। हमारे देश में जितना नुक़सान इससे होता है, उतना और किसी नशे से नहीं होता। क्योंकि इसके इस्तेमाल करनेवालों की तादाद बहुत ज़्यादा है। तुम ख़ुद ही देख सकते हो कि तुम्हारे गाँव में बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे जो तम्बाकू न पीते हों! कुछ लोग तो इसका खाना या पीना भी भलमनसी का एक चिह्न समझते हैं! लेकिन उनकी समझ ग़लत है। बात यह है कि वे नहीं जानते कि तम्बाकू क्या क्या नुक़सान करती है।

जो लोग तम्बाकू खाते हैं उनकी ख़ास तौर से यह आदत हो जाती है कि वे जगह-जगह थूक देते हैं। तुम्हें मालूम ही है कि थूकना कितना बुरा है। उससे कितनी बड़ी-बड़ी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। यही नहीं, तम्बाकू खानेवाले के मुँह में बुरी दुर्गन्ध निकलती है। उससे बात करने में भी परेशानी होती है। तम्बाकू खानेवालों के दाँत भी जल्दी गिर जाते हैं। कुछ लोग बनी सुगंधित तम्बाकू पसन्द करते हैं। वह और भी ख़राब और हानिकर होती है। जो तम्बाकू खाना शुरू करते हैं, उन्हें अक्सर चक्कर आ जाते हैं और कभी-कभी तो क़ै भी हो जाती है।

तम्बाकू सूँघना भी बहुत ही बुरी आदत है। इससे दिमाग को बहुत नुक़सान पहुँचता है। नाक ईश्वर ने साँस लेने के लिए ही बनाई है, न कि तम्बाकू सूँघने के लिए। तम्बाकू की सुँघनी सूँघने से साँस लेने के छेद बन्द हो जाते हैं। तन्दुरुस्ती के लिए यह बहुत ही हानिकारक है।

सबसे ज़्यादा तम्बाकू पीने का सब जगह प्रचार है। कोई चिलम पीता है, कोई हुक्का, कोई सिगरेट और कोई बीड़ी। सभी तरीक़े एक से एक ज़्यादा नुक़सान पहुँचानेवाले

हैं। तम्बाकू का धुँआ कलेजे को जला देता है। जो लोग बराबर तम्बाकू पीते रहते हैं, उनके फेफड़ों और कलेजे पर कालिख जमा हो जाती है। उनके फेफड़े बहुत जल्दी ख़राब हो जाते हैं। यही वजह है कि खाँसी और तपेदिक़ से बीमार लोगों में सबसे ज़्यादा ऐसे ही लोग होते हैं जो किसी न किसी तरह से तम्बाकू का धुँआ पीते हैं।

तम्बाकू का शौक़ बहुत ही बुरा है। गाँव के बहुत से लोग यह नहीं जानते कि तम्बाकू की वजह से ही हजारों आदमी हर साल मर जाते हैं। और तम्बाकू की वजह से बीमार होनेवालों की तादाद का तो कुछ ठिकाना नहीं है। तम्बाकू ने ही सब लोगों को काहिल, निकम्मा और रोगी बना दिया है।

लड़को! तुम्हें चाहिए कि ये सब बातें तुम अपने गाँव के लोगों को समझा दो, ताकि वे किसी तरह उसका इस्तेमाल करना छोड़ दें। तुम्हें ख़ुद भी कभी तम्बाकू का शौक़ न करना चाहिए। नशे सभी बुरे हैं। तुम्हें किसी नशे की आदत नहीं डालनी चाहिए। और तम्बाकू सब नशों

से बुरा नशा है। इसे तो भूलकर भी कभी पास नहीं फटकने देना चाहिए।

सवालात

१—लोग तम्बाकू को कितने प्रकार से इस्तेमाल करते हैं ?
२—तम्बाकू खाने तथा पीने से क्या हानि है ?
३—सिगरेट, बीड़ा वग़ैरह क्या नहीं पीनी चाहिए ?

पाठ १९

अदालती काग़ज़ात

ज़्यादातर किसान लोग पढ़े-लिखे नहीं होते। जो थोड़े बहुत होते भी हैं, वे भी अपने जरूरत के काम नहीं कर पाते। कोई सिर्फ़ अपने नाम के दो-चार अक्षर ही लिखना जानते हैं। कोई चिट्ठी-पत्री लिख लेते हैं और मामूली क़िस्सा-कहानियों की किताब बाँच लेते हैं। यों तो मुश्किल से सौ में एक निकलते हैं जो अपने मामला-मुक़दमे के काग़जात भी लिख-पढ़ लेते हों।

किसानों का पेशा ऐसा है कि उसमें कचहरी-अदालत का काम पड़ता ही है। जो किसान पढ़े-लिखे नहीं रहते, उन्हें बड़ी दिक्क़तें उठानी पड़ती हैं और साथ ही उनका ख़र्च भी बहुत होता है। उनके जानकार न होने की वजह से लोग अक्सर उन्हें धोखा दे देते हैं। महाजन कुछ का कुछ लिखा लेता है, पटवारी उनके खेत को इधर का उधर कर देता है। अगर हर एक किसान पढ़ा-लिखा रहे तो गाँवों के बहुत से लड़ाई-झगड़े बन्द हो जायँ। पढ़े-लिखे चालाक आदमी भोले-भाले किसानों को अदालत का झूठा डर दिखाकर उनसे बहुत कुछ वसूल कर लेते हैं। वे अदालत की कुछ बातें नहीं जानते, इसी लिए वे उसके नाम से डरते हैं। और इसी डर की वजह से उनका बहुत सा धन धोखेबाज़ों की जेब में चला जाता है।

हर एक किसान, जो पढ़ा-लिखा है, उसे चाहिए कि वह अदालत की सब ज़रूरी-ज़रूरी बातें जान ले। इससे उसे कोई धोखा नहीं दे सकेगा। अगर सब लोग चाहें तो सहज ही मामूली काम की बातें जान सकते हैं। उन्हीं से उनकी हालत बहुत अच्छी हो जायगी।

अक्सर सभी किसान तमस्सुक लिखकर रुपया उधार लेते हैं। लिखना न जानने की वजह से उन्हें दूसरों को लिखाई भी देनी पड़ती है, और अगर इतने पर भी वह ठीक न लिखा गया तो उन्हें अदालत में पहुँच कर बेईमान बनना पड़ता है। हम यहाँ कुछ काम के काग़ज़ातों के नमूने देते हैं। लड़को, तुमको चाहिए कि जब तुम किसानी करो तो इस तरह के अदालती काग़ज़ातों को लिख-पढ़ लेना ज़रूर जान लो।

तमस्सुक

मैं कि जानकी, वल्द अर्जुन, क़ौम नाई, साकिन मौज़ा इमादपुर, परगना अमृतपुर, ज़िला फ़र्रुखाबाद का हूँ, जो कि मैंने मुबलिग़ ५०) पचास रुपये, जिसके आधे २५) पचीस रुपये होते हैं, लाला पन्नालाल, वल्द लाला हज़ारीमल साकिन इमादपुर, से २) रुपया सैकड़ा महीना की दर से, उधार लिये हैं, इक़रार करता हूँ कि यह रक़म जब लाला साहब माँगेंगे, सूद-सहित चुका दूँगा। अगर थोड़ा-थोड़ा करके दूँगा तो मूल ब्याज काग़ज़ के दूसरी तरफ लिखा लिया

करूँगा। यदि न लिखाऊँ तो दिया हुआ रुपया भर पाया न समझा जायगा। इसलिए ये बातें तमस्सुक की रीति से लिख दीं कि वक्त़ पर काम आयें।

गवाह— जानकी वल्द अर्जुन

मुनीरखाँ वल्द शेरखाँ बक़लम ख़ुद

बक़लम ख़ुद ता० १४ मई सन् १९३०

गवाह—

छेदा वल्द सुखजीत

बक़लम ख़ुद

रसीद

मैं कि मोहनसिंह, वल्द गजराजसिंह, ज़मींदार मौज़ा इमादपुर, परगना अमृतपुर, तहसील सदर ज़िला फ़र्रुखाबाद ने, काश्तकार रोशन, वल्द घुरई काछी, साकिन इमादपुर मे, मुबलिग़ दस रुपया १०), बाबत लगान फ़सल रबी सन् १३२६ फ़सली, काश्त नंबरी ३५२, वाक़ै मौज़ा इमादपुर

वसूल पाये। इस वास्ते रसीद लिख दी कि सनद रहे और वक्त पर काम आवे।

मोहनसिंह बक़लम ख़ुद
ता० १३ जुलाई सन् २७

सवालात

१—किसानों को अदालती काग़ज़ात जानना क्यों ज़रूरी है?

२—रामलाल का लड़का गोविन्द काछी अपने गाँव रामपुर के हरदयाल महाजन के लड़के जगन्नाथ बनिया से रुपया सैकड़ा माहवारी ब्याज पर १०० रुपया लेना चाहता है। इसको तमस्सुक के रूप मे लिखो।

पाठ २०

किसानों के पेशे (१)

पुत्तूलाल ने एक औरत को जाते देखा। उसके सिर पर झाऊ का एक गट्ठर था। पुत्तूलाल ने अपने जी में कहा—कुछ झाऊ के पेड़ मिल जाते तो उनकी छड़ों के

बेंत बनाता। वह आगे बढ़ा तो उसने देखा कि वह औरत तो उसी के गाँव की है। उसका नाम रेवा है।

पुत्तूलाल ने रेवा से कहा—इतनी झाऊ तुम क्या करोगी? दो-चार पेड़ हमको भी दे दो।



टोकरी बनाई जा रही है

रेवा ने कहा—मैं झाऊ टोकरी बनाने के लिए लाई हूँ। तुम तो उसे लेकर तोड़-ताड़कर फेंक ही दोगे। लेकिन ख़ैर, तुम चलो तो मैं घर पर तुमको दो-चार पेड़ दे दूँगी।

पुत्तूलाल ने बड़ी ख़ुशी से कहा—अच्छी बात है, मैं तुम्हारे घर चलता हूँ। क्या तुम्हारे घर में झाऊ की टोकरियाँ बनती हैं? झाऊ की टोकरी तो तीन-तीन पैसे में आती है। तुम लोग खेती क्यों नहीं करतीं? खेती में ज्यादा पैदा होता है।

रेवा ने जवाब दिया—हमारे यहाँ खेती भी होती है। खेती में साल भर बराबर काम नहीं रहता। जिन दिनों काम नहीं रहता है उन दिनों हम लोग टोकरी बनाती हैं। हमारे यहाँ झाऊ की ही नहीं, अरहर, खजूर और बाँस की भी टोकरियाँ बनती हैं।

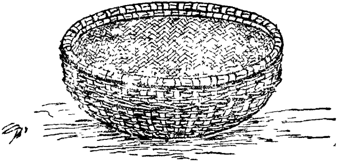
पुत्तूलाल ने कहा—यह तो बड़ा अच्छा है। तब मैं तुम्हारी झाऊ लेकर ख़राब न करूँगा। लेकिन मैं यह देखना चाहता हूँ कि तुम्हारे यहाँ टोकरी कैसे बनती है।

रेवा मकान के पास पहुँच गई थी। उसने कहा—अच्छी बात है, आओ, मेरे घर में चलो। मैं तुम्हें टोकरी बिनना दिखाऊँ।

वह पुत्तूलाल को अपने घर के भीतर ले गई।

रेवा ने पुत्तूलाल से कहा—हमारे यहाँ बाँस, अरहर और झाऊ सभी तरह की टोकरियाँ तैयार हैं।

पुत्तूलाल ने उससे पूछा—तुम्हारे घर में तो दिन भर में बहुत सी टोकरियाँ तैयार हो जाती होंगी। भला तुम इतनी टोकरियों को गाँव में कैसे बेच पाती होगी ?



टोकरी

रेवा ने कहा—हमारे यहाँ तो दो कोठे टोकरियों से भरे हुए हैं। गाँव के लिए हम टोकरी नहीं बनातीं। बहुत सी इकट्ठी हो जाने पर हम उन्हें शहर भेज देती हैं। गाँव में भी बेचती हैं।

पुत्तूलाल ने एक आदमी के पास जाकर देखा और फिर उससे कहा—इस काम में मेहनत बहुत पड़ती है।

तुम थोड़े खेत क्यों नहीं और जोत लेते, जो साल भर तक काम की कमी न रहे।

रेवा ने कहा—अगर हम लोग इस तरह खेती के साथ-साथ कोई और काम न करें तो भूखों मर जायँ। हम रोज़ ही देखती हैं कि जो किसान खेती पर ही रहते हैं, उनके न बदन पर कपड़ा रहता है, न घर में खाने को अनाज।

पुत्तूलाल—क्या सभी किसान टोकरियाँ बनाते हैं?

रेवा—सभी टोकरियाँ तो नहीं बनाते, पर ज़्यादातर किसान खेती के साथ में कुछ काम ज़रूर करते रहते हैं, और तभी उनकी गुज़र चलती है।

पुत्तूलाल—भला वे क्या-क्या काम करते हैं?

रेवा—बहुत से काम हैं। कुछ लोग मूँज और सन लेकर रस्से बनाते और रामबान बटकर बेचा करते हैं।

पुत्तूलाल—मैं रामबान और रस्सियों का बटना देखना चाहता हूँ। अपने गाँव में कोई रस्से बटता है क्या?

रेवा—हाँ, लाखन और भोला के घर में रामबान और रस्सियों का ही काम होता है।

सवालात

१—पुत्तूलाल ने रेवा के यहाँ क्या देखा ?

२—किसान खेती के अलावा और क्या काम करते हैं ?

३—क्या किसानों को खेती के सिवा और कामों के करने की ज़रूरत है ?

पाठ २१

भजन और मुनीर

गाँव के बाहर ज़मीन्दार का एक बहुत बड़ा बाग़ है। उस बाग़ में आम, अमरूद, केला, नींबू, नारंगी वग़ैरह के बहुत से पेड़ हैं। ज़मींदार ने बग़ीचे की फ़सल एक कुँजड़े के हाथ बेच दी है। कुँजड़े का नाम मुनीर है। अब वह उसी बाग़ में जाकर रहने लगा है। वह वहाँ रात-दिन रहकर बड़ी मुस्तैदी से बाग़ की रखवाली करता है।

बाग़ के आसपास के खेत भजन किसान के हैं। भजन और मुनीर में ख़ूब पटती है। जब भजन कहीं काम

पर चला जाता है तो मुनीर उसके खेतों पर भी नज़र रखता है। जब मुनीर अपने फल लेकर शहर बेचने जाता है तो उसके बग़ीचे को भजन देखता है। वे दोनों आपस में बड़ी दोस्ती से रहते हैं। उनमें कभी यह ख़्याल भी नहीं होता कि एक हिन्दू है, एक मुसलमान! यह ख़्याल करें तो उनका काम ही न चले।

मुनीर के लड़के की शादी में भजन भी गया था और भजन की लड़की के गौन में मुनीर शामिल हुआ था। मतलब यह कि उनके घर में जो कुछ भी ख़ुशी या रंज होता है उसमें वे दोनों ही शामिल होते हैं। एक का दुख दूसरा बटाने की कोशिश करता है। एक की ख़ुशी में दूसरा भी ख़ुशी मनाता है। उनको आपस में जब किसी चीज़ की ज़रूरत होती है तो भी वे एक दूसरे की मदद करते हैं।

गाँव के एक दूसरे किसान ने भजन की भैंसों को मवेशीख़ाने में हाँक दिया था। उस दिन भजन घर पर नहीं था। वह अपने खेत के लिए बीज लेने को बाहर गया हुआ था। जो कुछ भी रुपया उसने इकट्ठा कर पाया

था वह सब बीज के लिए ले गया था। उसके घर में एक भी रुपया न था। उस वक्त मुनीर ने ही अपने पास से दो रुपये देकर उसकी भैंसें छुड़ाईं। अगर वह उस वक्त दो रुपये से उसकी मदद न करता तो भजन को दो दिन बाद चार-पाँच रुपये देने पड़ते।

इस तरह एक-दूसरे की मदद से दोनों को ही फ़ायदा होता है। पहले ज़मीन्दार के बाग़ की फ़सल एक हिन्दू माली ने ख़रीदी थी। लेकिन उसे कभी फ़ायदा न हुआ। इसका कारण यही था कि वह अपने पड़ोसी भजन से किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रखता था। उसके सामने ही कई बार गाँव के जानवर आकर भजन के खेत चर गये, लेकिन उसने उन्हें नहीं भगाया। इसी से भजन भी उसके बाग़ के ऊपर नज़र नहीं रखता था। जब माली बाज़ार या और कहीं चला जाता था तो उसके बाग़ में बन्दर, चिड़ियाँ और लड़के मनमाने फल उड़ाते थे।

अब मुनीर और भजन के मिलकर एक दूसरे की मदद करने से दोनों का नुक़सान रुक गया है। हिन्दू माली को. पाँच बरस में एक बार भी, कभी, जिस बाग़ से फ़ायदा

नहीं हुआ था, उसी बाग़ से मुनीर ने बहुत कुछ एक हा फसल में पैदा कर लिया। पहली फ़सल की आमदनी से ही उसने अपने लड़के की शादी कर ली है और अपने घर का भी सारा ख़र्च चलाया है। भजन को भी इस आपस के मेल से बहुत फ़ायदा हुआ है। उसकी फ़सल का इस बार एक दाना भी इधर-उधर नहीं होने पाया है।

गाँव के सभी आदमियों को इसी तरह आपस में मेल रखना चाहिए। एक हिन्दू है, दूसरा मुसलमान इसका कभी ख्याल नहीं करना चाहिए। हिन्दू-मुसलमान दोनों ही एक दूसरे के साथी हैं। हिन्दुओं को भी आपस में मित्र-भाव से रहना चाहिए। चाहे वे हिन्दू हों, चाहे मुसलमान, मेल से सबका भला होता है।

सवालात

१—भजन और मुनीर कौन थे ?

२—मुनीर को क्यों ज़्यादा फ़ायदा हुआ ?

३—मेल से क्या लाभ है ?

४—अगर मुनीर और भजन एक दूसरे को हिन्दू-मुसलमान होने का ख़्याल रखते और मेल न रखते तो क्या होता ?

पाठ २२

देहाती बैंक

हमारे देश में जितने आदमी खेती करते हैं उतने और किसी देश में नहीं करते। यहाँ ज़मीन की बिलकुल कमी नहीं है। इसी से यहाँ किसानों की तादाद बहुत ज़्यादा है। लेकिन बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनकी वजह से यहाँ के किसान ग़रीब ही रहते हैं। ऐसे बहुत कम किसान देखने में आते हैं जो खेती करके अच्छी तरह अपनी गुज़र करते हों। ज़्यादा तादाद तो ऐसे लोगों की ही है जो खाने-पहनने को भी दुखी रहते हैं। बीमारी उनके घरों में हमेशा बनी रहती है। उनके पास हल-बैल तक के लिए पैसे नहीं होते।

यह दशा रहने की वजह से किसान सदा ख़ाली हाथ रहते हैं। यदि कहीं एक फ़सल में पानी न बरसा या और कोई आफ़त आ गई, तो फिर दूसरी फसल को बोने तक के लाले पड़ जाते हैं।

किसानों की हालत गाँवों के सभी लोग जानते हैं। उन्हें कोई भी पैसा देने को तैयार नहीं होता और अगर

कहीं से कुछ रुपया मिलता भी है तो बहुत अधिक सूद पर। किसान बेचारा लाचार होकर महाजन के पञ्जे में फँस जाता है।

प्रायः देखा जाता है कि एक बार जो किसान क़र्ज़ ले लेता है फिर सूद की भारी दर होने की वजह से उसे पटा नहीं पाता। उसका क़र्ज़ हर साल बढ़ता चला जाता है। महाजन लोग भी कड़ाई के साथ रुपया वसूल करने के लिए नालिश कर देते हैं। इस तरह किसान का बहुत सा वक़्त मुक़दमेबाज़ी में चला जाता है। अन्त में उसके हल-बैल, घर-द्वार और लोटा-थाली सब नीलाम पर चढ़ जाते हैं। बेचारा किसान किसी काम का नहीं रहता। उसे एक एक के दस-दस देने पड़ते हैं और घर-द्वार छूट जाता है सो अलग।

ऐसे किसानों की हालत ठीक करने के लिए ही देहाती बैंक खोले गये हैं। इन बैंकों का यह काम है कि वे ज़रूरत के मुताबिक़ किसानों की मदद करें। उन्हें थोड़े सूद पर ख़ुद रुपया दें और किसानों को किन-किन औज़ारों से काम करना चाहिए, उन्हें खेती में मदद देने के

लिए अच्छे बैल, अच्छी खाद और अच्छे बीज कहाँ से मिल सकते हैं, इन सब बातों को बतलाने में भी बैंक उनकी सहायता करें। इस तरह किसान बहुत कुछ पैदा कर सकते हैं और उनकी हालत सुधर सकती है। बैंक का यह भी काम है कि वह किसानों की उपज को अच्छे दामों पर बेचने के लिए भी प्रबंध करे। क्योंकि अक्सर किसान लोग अपनी जिन्स को बेचने का तरीक़ा नहीं जानते। कुछ चालाक लोग फ़सल पर गाँवों में पहुँचकर बहुत सस्ते में उनकी जिन्स ख़रीद लेते हैं। मतलब यह है कि बैंक किसानों की पूरी तरह से मदद करे और किसान भी ईमानदारी के साथ बैंक का रुपया चुकाकर बाक़ी रुपया अपने काम में लावें।

बैंक खोलने का मंशा तो अच्छा है, इसमें ज़रा भी शक नहीं। लेकिन अभी तक देखा गया है कि बहुत कम लोग नेकनियती से काम करते हैं। अगर मेम्बर नेक-नियती से काम करके किसानों को रुपया दे और कोई उस रुपये को मार ले, उसे न लौटाये, तो यह रुपया बाक़ी मेम्बरों को भुगतना पड़ता है। इस तरह वे लोग एक

आफ़त में पड़ जाते हैं। यदि कहीं ऐसे बेईमानों की तादाद ज़्यादा हुई तो बैंक चलते ही नहीं। उनके ईमानदार मेम्बर मुफ़्त में तबाह हो जाते हैं। इस वास्ते बैंकों को चलाने के लिए यह ज़रूरी है कि हर एक आदमी ईमानदारी से काम करे। मतलब यह कि देहाती बैंक किसानों के लिए बड़े काम के हैं, यदि उसके मेम्बर ईमानदारी से काम करना जानते हों।

सवालात

१—देहाती बैंक किसे कहते है ?
२—देहाती बैंक से किसानों को क्या मदद मिलती है ?
३—देहात में किसान क्यों तबाह रहते हैं ?
४—'लाले पड़ना' से क्या मतलब है ?

पाठ २३

पुस्तकालय

यह तो सभी जानते है कि किताबो मे हमारे बड़े काम की बातें होती हैं। जो बातें किसी को मालूम नहीं रहतीं, वे किताबें ही बतलाती हैं। किताबों से हम सबने बहुत सी

अच्छी बातें सीखी हैं। जितने बड़े-बड़े आदमी हो गये हैं उन सबके उपदेश किताबों में लिखे हुए हैं। ऐसी कोई बात नहीं है जो किताबों से हमें न मालूम हो सके। अच्छे और बुरे का भेद सिखानेवाली भी किताबें ही हैं। उनमें हज़ारों वर्षों के पुराने उदाहरण लिखे हैं। उनसे हमेशा लोगों को शिक्षा मिलती है।

खेती करने के सबसे अच्छे उपाय क्या हैं, और भी कोई पेशा किस तरह अच्छे प्रकार किया जा सकता है, ये सब बातें भी किताबों में लिखी हुई हैं। जो थोड़ा भी पढ़ा-लिखा हो, उसको चाहिए कि वह किताबों को पढ़ने की आदत ज़रूर डाले। किताबें सभी विषयों पर लिखी हुई मिल सकती हैं।

शहरों के लोग किताबें बहुत पढ़ते हैं। गाँव में कम लोग पढ़े-लिखे हैं, इस वास्ते वहाँ किताबें कम तादाद में पढ़ी जाती हैं। गाँव के लोगों को भी किताबें पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। किताबों से बढ़कर आदमी का कोई दूसरा साथी हो ही नहीं सकता। आदमियों में गप लड़ाने में बहुत सा वक्त बेकार चला जा सकता

है, लेकिन पुस्तक पढ़ने से कुछ न कुछ नई बात मालूम ही होती रहती है। गाँव के लोग कम किताबें पढ़ने की वजह से ही दुनियाँ का बहुत कम हाल जानते हैं।

हाँ, एक बात ज़रूर है कि गाँव के लोग बहुत ग़रीब होते हैं। उनके पास इतने पैसे कहाँ हैं कि वे रोज़-रोज़ किताबें ख़रीदा करें? पर शहरों में भी ज़्यादा तादाद में लोग ग़रीब ही हैं। वे सब किताबें ख़रीदकर ही नहीं पढ़ते हैं। बात यह है, वहाँ पुस्तकालय खुले हुए हैं। शहरों में कुछ सरकार की तरफ़ से और कुछ लोगों के आपस के पुस्तकालय खुले हुए हैं। उनमें बहुत सी पुस्तकें रहती हैं। हर एक आदमी वहाँ जाकर किताबें पढ़ सकता है। जिन लोगों को किताबें पढ़ने का बहुत ज़्यादा शौक होता है वे पुस्तकालय के सदस्य बन जाते हैं। सदस्य बन जाने पर उन्हें नियम के मुताबिक़ घर पर ले जाने को भी किताबें मिल जाती हैं।

जो ग़रीब आदमी पैसा ख़र्च करके किताबें नहीं ख़रीद सकते, वे भी इस तरीक़े से किताब आसानी से पा सकते हैं। गाँव के लोग ग़रीब हैं तो उन्हें भी मिलकर

हर एक गाँव में एक-एक पुस्तकालय ज़रूर खोल रखना चाहिए। गाँव के लड़कों और मर्दों का जो बहुत सा वक्त इधर उधर बेकार चला जाता है वह किताबें पढ़ने में लगे तो उनको बहुत कुछ फ़ायदा पहुँचे।

आजकल अख़बारों में किसानों के काम की बहुत सी बातें निकलती हैं। यदि गाँव-गाँव में पुस्तकालय खुल जायँ तो किसान लोग अनाज के भाव का चढ़ाव-उतार घर बैठे ही अख़बारों के ज़रिये मालूम कर सकते हैं। खाद, सिंचाई, जुताई के नये-नये तरीक़े किताबों और अख़बारों से मालूम करके वे अपना काफ़ी फ़ायदा कर सकते हैं।

दूसरे देशों के किसान लोग सब बातों की ख़बर रखते हैं। कोई ऐसा दिन नहीं जाता, जब वे अख़बार और किताबें न पढ़ते हों। उनके गाँव-गाँव में पुस्तकालय हैं।

हमारे यहाँ सरकार भी पुस्तकालयों को सहायता देती है। अगर लोग गाँव-गाँव में पुस्तकालय खोलना चाहें, तो यह कोई कठिन बात नहीं है। बड़ी आसानी से एक-एक पुस्तकालय सब जगह खोला जा सकता है।

१—पुस्तकालय किसे कहते हैं ?

२—पुस्तकालय से क्या लाभ है ?

३—गाँव में पुस्तकालय क्यों खोलना चाहिए ?

४—नीचे के वाक्यों में खाली जगहों को उचित शब्दों से भरो—

१—गाँव में पुस्तकालय होने··· ··लोग अपने······ ·समय को ·· ·· ··पढ़ने में लगायेंगे।

२—पुस्तकालय में ·· ···· और··· ·····अधिक संख्या में पढ़ने को मिलते है।

पाठ २४

खत्ती

खत्ती ज़मीन खोदकर बनाई जाती हैं। उनमें लोग अनाज भरते हैं। यदि खत्ती न बनें, तो किसान लोग अनाज कहाँ रक्खें। सौ-सौ मन से भी ज़्यादा अनाज लोगों के यहाँ होता है, खत्ती न हो तो उसी से उनका सारा घर भर जाय। इसी लिए किसान लोग अपने घरों

में खत्ती बना लेते हैं। उसी में वे अनाज भरके बेफ़िक्र हो जाते हैं।

खत्ती में अनाज भरने से और भी बहुत से फ़ायदे हैं। एक तो खत्तो में अनाज भरने से उसमें कीड़ा नहीं लगता; दूसरे उसमें पानी का भी कुछ असर नहीं होता। चूहे भी उसके अन्दर जाकर उसे नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। इसलिए किसानों का खत्ती बनाना ठीक ही है। लेकिन खत्ती बनाते वक्त. कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है।

खत्ती ऐसी जगह बनानी चाहिए जहाँ सील या नमी न जा सके। नमी पहुँचने से खत्ती के अन्दर रक्खा हुआ अनाज खराब हो जाता है। इसलिए खत्ती बनाते वक्त इसका ध्यान रखना बहुत ही ज़रूरी है।

अनाज भर देने पर लोग खत्ती को तख्तों से पाट देते हैं। कभी-कभी अनाज कम होने के कारण खत्ती आधी या तीन चौथाई ही भर पाती है और वह तख्तों से बन्द कर दी जाती है। खत्ती का बन्द किया जाना ज़रूरी है। अगर वह खुली रहेगी तो बरसात की नम हवा उसके अन्दर जाकर अनाज को खराब कर देगी। साथ ही चूहों

से भी अनाज की रक्षा न हो सकेगी। वे बग़ैर रोक-टोक के उसके अन्दर आ जा सकेंगे। इस वास्ते खत्ती बन्द तो की जाय, पर उसमें मिट्टी या कंकड़ भरकर उसे पाटा ज़रूर जाय। नहीं तो तख़्ते ख़ूब मज़बूत लगाना चाहिए। ख़ाली पाट देने से, या कमज़ोर तख़्तों से पाटने से उनके टूटकर गिर जाने का डर रहता है।

खत्ती से कभी-कभी बड़ा अनर्थ हो जाता है। खत्ती घरों के अन्दर होती हैं। वहाँ छोटे-छोटे बच्चे, आदमी और औरतें सभी रहते हैं। जब कभी किसी का पैर पड़ने से ढकन टूट जाता है तो बड़ा नुक़सान हो जाता है। खत्तियाँ बन्द रहती हैं। उनमें हवा आ जा नहीं सकती। इस वास्ते उनके अन्दर की हवा ख़राब हो जाती है। उस विषैली हवा में अगर कोई एकाएक पहुँच जाय तो वह ज़िन्दा नहीं रह सकता। इसी से खत्ती के ढकन की मज़बूती ज़रूरी है। कहीं कोई घर का आदमी या बच्चा गिरकर ख़तरे में पड़ गया तो बड़ी आफ़त हो जाती है।

इसलिए ज़रूरत पड़ने पर खत्ती को खोलकर तुरन्त उसके अन्दर जाना भी नहीं चाहिए। जाने से दो तीन

घटे पहले ही उसे खोल देना ज़रूरी होता है, जिससे उसमें ताज़ी हवा पहुँच सके और ख़राब हवा निकल जाय। यों भी किसी भी कमरे में, जो बहुत दिनों से बन्द पड़ा हो, एकाएक नहीं जाना चाहिए।

तुम पूछ सकते हो कि यह कैसे मालूम हो कि कब उसके अन्दर की हवा ठीक हो गई ? हाँ, इसके जानने के भी तरीक़े हैं। लालटेन जलाकर उसे रस्सी में बाँधकर खत्ती के अन्दर लटका दो। अगर लालटेन जलती रहे, बुझे नहीं, तो समझ लो कि उसके अन्दर जाया जा सकता है। लेकिन अगर लालटेन बुझ जाय तो जान को जोखिम में डालना होगा। चिराग़ अच्छी और साफ़ हवा में ही जल सकते हैं, ख़राब हवा में नहीं। कुछ लोग नीम की डाल तोड़कर भी खत्ती में लटकाकर हवा की जाँच करते हैं। अगर डाल की पत्तियाँ मुरझा जायँ तो समझना चाहिए कि हवा ठीक नहीं है और उस वक्त कभी खत्ती के अन्दर न जाना चाहिए।

सवालात

१—खत्ती क्या है ?

२—खत्ती में अनाज रखने से क्या लाभ है ?

३—खत्ती बनाने, पाटने, या उसमें घुसने के लिए क्या सावधानी रखनी चाहिए ?

४—'जोखिम' और 'अनर्थ' का मतलब बताओ।

पाठ २५

फ़सल के दुश्मन

किसान जिस दिन से खेत बोता है उसी दिन से उसे बहुत से दुश्मनों से लड़ना पड़ता है। फ़सल तैयार होते-होते उस पर कई धावे होते हैं। कहीं जंगली जानवर फ़सल चर लेते हैं, कहीं चिड़ियाँ दाने चुग जाती हैं और कहीं कीड़े-मकोड़े लगकर उसका सत्यानाश कर देते हैं। फिर भी ईश्वर की दया से इतना अच्छा है कि फ़सल के इन दुश्मनों में आपस में भी वैर रहता है। वे एक-दूसरे को भी खा जाते हैं। बड़ी-बड़ी चिड़ियाँ छोटी चिड़ियों को मार डालती हैं और छोटी चिड़ियाँ भी कीड़े-मकोड़े खाकर

फ़सल को बचा लेती हैं। अगर ऐसा न होता तो किसान की ख़ैर नहीं थी।

फिर भी इन दुश्मनों से अक्सर फ़सल को बहुत नुक़सान होता है। बेचारा किसान तो धूप गरमी सहकर उसे तैयार करता है और ये लोग उसे खा जाते हैं। पहले यह बतलाया जा चुका है कि खेती के दुश्मन जंगली जानवर और पक्षी होते हैं। ये खेतों को कभी-कभी एक सिरे से उजाड़ देते हैं। घर के पालतू जानवर भी कभी-कभी छूटकर फ़सल ख़राब कर डालते हैं।

जानवर और पक्षियों से खेत की रखवाली की जा सकती है। इस वास्ते वे किसान को उतने नहीं अखरते। ज़रूरत समझने पर वह खेत में झोपड़ी डाल-कर रहने लगता है और इस तरह उनका डर किसी क़दर कम हो जाता है। लेकिन इनके अलावा उसे बहुत छोटे-छोटे कीड़ों का भी सामना करना पड़ता है। उनसे उसकी एक भी नहीं चलती। ये कीड़े खेत के मालिक के सामने ही खेत को बरबाद करते रहते हैं। बात यह है कि वे इतने छोटे-छोटे और इतनी ज़्यादा तादाद में होते हैं कि

किसान उनका कुछ भी नहीं कर सकता। केवल कुछ चिड़ियाँ ही ऐसी होती हैं जो इन कीड़ों से खेत की रक्षा करती हैं। गलगलिया, मैना, कठफोड़वा, कौवा और दहियल वग़ैरह बहुत से कीड़ों को खतम कर डालते हैं।

शायद तुम्हें मालूम नहीं होगा कि वे कौन-कौन से कीड़े हैं जो फ़सल को चौपट कर डालते हैं। दीमक को तो तुम जानते ही होगे। यह कीड़ा ज़मीन के भीतर रहता और पौदों की जड़ें खा डालता है। इनसे बचने के लिए खेत में पानी देना चाहिए और दो-चार तीतर पाल लेना चाहिए। दीमक जिस खेत में लग जाती है उसके पौदे सूख-सूखकर गिरते जाते हैं।

दीमक अकसर ईख के खेतों में लगती है। इससे बचने के लिए ईख के टुकड़ों के सिरों पर तारकोल लगाकर बोते हैं या नीम की खली पानी में घोलकर उसे उससे सींचते हैं।

तितली को तो सभी ने उड़ते देखा होगा; पर शुरू में तितली भी एक कीड़े की शकल में रहती है। वह

भी बहुत हानि करती है। उसके अंडे भी पत्तियाँ खाकर ही बढ़ते हैं।

एक कीड़ा माहूँ होता है, जो अलसी, सरसों आदि में बहुत लग जाता है। यह कीड़ा बहुत छोटा राई के दानों की तरह होता है और फल, फूल, पत्तियाँ और शाखें सब बेकाम कर देता है। इसके लग जाने से फ़सल किसी काम की नहीं रहती।

एक कीड़ा मकोड़ा कहलाता है। यह ज्वार और ईख के पौदों में लगता है। जहाँ यह लगता है, पौदे का वह भाग भीतर से खोखला होकर लाल रङ्ग का हो जाता है। एक और कीड़ा हरे रङ्ग का होता है और खेतों में अकसर दिखाई पड़ता है। यह नये पौदों की पत्तियाँ खाकर रहता है।

इनके अलावा और भी न जाने कितने क़िस्म के कीड़े होते हैं, जो खेती को बरबाद करने में लगे रहते हैं। इनमें से बहुत से कीड़ों को चिड़ियाँ वग़ैरह खा जाती हैं, फिर भी वे लाखों की तादाद में बने ही रह जाते हैं। अकसर बहुत से कीड़े जिस रंग के होते हैं वे उसी रङ्ग के पौदों में रहकर अपने को छिपाये रहते हैं। इससे चिड़ियाँ उन्हें खोज भी नहीं

पातीं। ये कीड़े फ़सल के साथ-साथ रंग भी बदला करते हैं। जब फ़सल हरी होती है तो वे भी हरे रंग के रहते हैं। जब वह पककर भूरी होने लगती है तो वे भी भूरे हो जाते हैं।

इन कीड़ों से बचने के और भी कई उपाय हैं; जैसे जिन्स अदल-बदल कर बोना। इस तरह जिस जिन्स के कीड़े होते हैं, उसके पौदे न पाने से वे मर जाते हैं। इसी तरह मिलवाँ जिन्स बोने से भी लाभ होता है। यदि कीड़ा शुरू-शुरू में कुछ थोड़े पौदों में लगा हो तो उन्हें उखाड़ कर जला दो। धुँआँ कर देने से भी कीड़े भग जाते हैं। खेतों की मेंड़ पर, रात में आग जला देने से, कीड़े रोशनी देखकर उसके पास आते हैं और जलकर मर जाते हैं। मुर्ग़ी और तीतर कीड़े बहुत खाते हैं। इसलिए ऐसी चिड़ियाँ खेतों में पाल रखने से भी कीड़े कम हो जाते हैं। किसान को बड़ी होशियारी के साथ इन कीड़ों से अपनी फ़सल का बचाव करना चाहिए।

सवालात

१—फसल के दुश्मनों के नाम बताओ।
२—किसान उन दुश्मनों से फसल कैसे बचाता है?
३—माहूँ किस अनाज में लगता है?
४—खेत में दीमक लगने पर क्या करना चाहिए?

पाठ २६

खो-खो

तीसरे पहर का समय है। गाँव के बहुत से लड़के एक जगह इकट्ठ हुए हैं। बड़ी देर से सब यह विचार कर रहे हैं कि कौन सा खेल खेला जाय ?

रामचरन—रोज़-रोज़ वही गिने-गिनाये खेल खेलते-खेलते जी ऊब गया है। कोई नया खेल समझ ही में नहीं आता, जो खेला जाय।

महमूद—एक नया खेल मुझे मालूम है। वह है तो बड़ा ही मज़ेदार खेल, पर अपने यहाँ खेला नहीं जाता। सभी लोगों को सीखना पड़ेगा।

सब लड़कों ने कहा—उसमें कितने लड़के खेल सकेंगे ? आज तो बहुत से खिलाड़ी हैं।

महमूद—कोई हर्ज नहीं, उस खेल में भी कम से कम पन्द्रह-सोलह खिलाड़ियों की ज़रूरत होती है।

मोती—वह खेल कैसे शुरू होगा ? उस खेल का नाम क्या है ?

महमूद—उसका नाम 'खो-खो' है। उसमें और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होती। अच्छा, खेल शुरू करने के लिए सब खिलाड़ियों को दो दलों में बाँट लो।

हीरा—कुल बीस खिलाड़ी हैं। दस-दस लड़के दोनों दलों में हो गये।

महमूद—ठीक है, अब एक दल के खिलाड़ियों में से एक खिलाड़ी को छोड़कर बाक़ी खिलाड़ियों को दो-दो गज़ के फ़ासले पर एक सीधी क़तार में इस तरह बिठलाते जाओ कि एक का मुँह पूरब की तरफ़ हो, तो दूसरे का पश्चिम की तरफ़। मैं दूसरे दल के खिलाड़ियों को बैठे हुए दल के पास खड़ा करता हूँ।

सलीम—शायद अब खेल शुरू होगा।

महमूद—हाँ, बैठे हुए दल का जो एक खिलाड़ी बच गया है वह खेल शुरू होने पर खड़े हुए दल के खिला-ड़ियों को छूने की कोशिश करेगा। खड़ा हुआ दल बैठे हुए दल की आड़ में इधर से उधर भागेगा।

रामचरन—इतने खिलाड़ी अपने आपको किस तरह छूने से बचा सकेंगे ?

महमूद—वे खिलाड़ी बैठी हुई क़तार के बीच से भी इधर से उधर जा सकते हैं। उन्हें कोई रोक-टोक नहीं है, लेकिन जो खिलाड़ी उनको छू रहा है उसे हर दफ़े पूरी क़तार का चक्कर करके तब आना पड़ेगा। इस तरह बग़ैर फुर्ती किये उसका किसी को छू लेना सहज नहीं है।

हीरा—यह तो ठीक है, पर जो खिलाड़ी छू जायगा वह शायद खेल से अलग हो जायगा।

महमूद—हाँ, और क्या ?

सलीम—पर तुमने रामचरन को खड़ा कर दिया है, वह तो दौड़ते-दौड़ते मर जायगा।

महमूद—यह क्यों, रामचरन को ही खेल ख़तम होने तक इस तरह थोड़े ही दौड़ना पड़ेगा। वह जब थक जाय तो बैठी हुई क़तार के किसी भी लड़के के पीछे जाकर 'खो' कर दे। बस, वह लड़का फिर उस खड़े हुए दल के पीछे दौड़ने लगेगा और रामचरन उसकी जगह बैठ जायगा। लेकिन दो बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। एक तो यह कि क़तार के दोनों सिरों पर जो दो खिलाड़ी हैं, उन्हें रामचरन न उठा सकेगा। वे खूँटे

हैं। उनके बीच के ही लड़के उठाये जा सकते हैं। दूसरे वे आगे से जाकर 'खो' नहीं कर सकते, उन्हें पीछे से ही 'खो' करना पड़ेगा।

रामचरन—और अगर कोई 'खो' किये बग़ैर ही उठ जाय ?

महमूद—हाँ, अगर कोई ऐसा करे तो दूसरे दल के जो खिलाड़ी निकल चुके होंगे, उनमें से एक फिर खेल में शामिल हो जायगा।

मोती—जब सब लड़के छू जायँगे तो समझो उस दल की हार हो गई।

महमूद—अभी हार-जीत कैसे हो सकती है; क्योंकि वह दल तो थोड़ी-बहुत देर में छू ही जायगा। जब वह छू जायगा, तो क़तार में आ बैठेगा और बैठा हुआ दल उसकी जगह खड़ा होगा। जिस दल को जितनी ही देर ज़्यादा लगेगी, वह उसी हिसाब से हारा हुआ समझा जायगा।

सब खिलाड़ियों ने कहा—हाँ, अब खेल शुरू होना चाहिए।

बस, फिर क्या था। खेल शुरू हुआ और बड़ी देर तक होता रहा।

१— खो-खो' मे फिर ही जरूरत होती है ?
२५—उसमे हार-जीत ति है ?

लड़के रोज़ ही हैं। ऐसा कोई लड़का न होगा जिसने पत्ति ।। इसी लिए वे शायद यह मानने को तैयार वे पत्तियों के बारे में बहुत कम जानते हैं। तो यह है कि बहुत से लड़के पत्तियों के सम ा सी बाते नहीं जानते। सलिए आज हम य सम्बन्ध में उन्हें कुछ बातें बतलाते हैं।

पहली बात तो ... ... जिन्हें हम लोग पत्तियाँ समझते हैं, उनके अलावा और भी पत्तियाँ होती हैं। पत्तियाँ

एक नहीं, चार तरह की होती हैं—बीजपत्ती, मूलपत्ती, फूलपत्ती और रक्षकपत्ती।

बीच में अक्सर दो दालें रहती हैं। तुमने चना, उड़द और अरहर के दानों में दो टुकड़े देखे होंगे। वे भी असल



में पत्तियाँ हैं। किसी छोटे पौदे को उखाड़ कर देखो तो उसकी जड़ में दो दालें पत्तियों की तरह लगी दिखाई देंगी। वे बीजपत्ती कहलाती हैं।

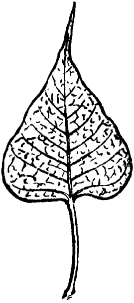
जिन्हें हम साधारण रूप से पत्तियाँ समझते हैं वे मूलपत्ती यानी असल पत्ती कहलाती हैं। फूल की जो कोमल पँखड़ियाँ होती हैं वे भी पत्तियाँ ही हैं। वे फूलपत्ती कही जाती हैं। फूल की कोमल पँखड़ियों को दो-चार हरी पत्तियाँ ढके रहती हैं, वे रक्षकपत्ती कहलाती हैं।



उनका काम कड़ी सर्दी और गर्मी से उन पँखड़ियों की रक्षा करना है।

पत्तियों के रङ्गरूप के अनुसार भी उनके कई भेद होते हैं। एक प्रकार की पत्तियाँ ऐसी होती हैं जिनके

किनारे दाँतेदार होते हैं। नीम और गुलाब की पत्तियों के दाँते तुमने देखे ही होंगे। कुछ ऐसी भी होती हैं, जिनके किनारे दाँतेदार नहीं होते। आम और जामुन की पत्तियाँ इसी तरह की होती हैं। किसी-किसी का किनारा लहरदार भी होता है, जैसे गोभी या करमकल्ला।



पत्ती के बीचोबीच एक रीढ़ सी मोटी नस होती है। उस नस के इधर-उधर छोटी-छोटी नसें होती हैं। इन पतली और छोटी नसों के हेर-फेर से पत्तियों की क़िस्म में फ़र्क़ हो जाता है। कुछ पत्तियों में ये नसें जाल की तरह बिछी रहती हैं। पीपल के पत्ते को ध्यान से देखो तो उनमें नसों का जाल दिखाई पड़ेगा। लेकिन बाज़ पत्तियों में ये नसें जाल की तरह

होकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर फ़ासले से चली जाती हैं। ईख और बाँस-पत्तियों का यही हाल है।

पत्तियों की एक क़िस्म और है। उसमें कई पत्तियाँ मिलकर एक बड़ी पत्ती बनती है। वास्तव में वह बड़ी सी एक ही पत्ती होती है। ग़लती से हम लोग उन सबको अलग-अलग पत्ती समझते हैं। इमली, गुलाब और नीम की पत्तियाँ लीजिए। इनकी डालों में जो बारीक सींक सी हरी टहनियाँ निकली रहती हैं, उन पर छोटी-छोटी कई एक पत्तियाँ रहती हैं। सच पूछो तो यह पतली सींक सी टहनी पूरे पत्ते की मोटी नस है, और दूसरी जो कई पत्तियाँ हैं वे उस बड़े पत्ते के भाग हैं। उन पत्तियों का यही ढङ्ग है। वे केले, आम या पीपल का पत्तियों की तरह नहीं निकलतीं। उनका हर एक हिस्सा अलग-अलग निकलता है। हम भी गलती से उनमें से हर एक को पत्तियाँ कहते हैं।

कुछ पत्तियाँ चिकनी होती हैं; जैसे आम, जामुन, पीपल, केला की पत्तियाँ। लेकिन भिंडी और तुरई वग़ैरह

की पत्तियाँ खुरखुरी होती हैं। खेतों में उगनेवाले कटैया और ऊँटकटारे की पत्तियाँ निराली ही होती हैं। उनमें बड़े-बड़े काँटे रहते हैं। मतलब यह है कि हम जिन चीज़ों को दिन-रात देखकर यह समझ लेते हैं कि हम उनको अच्छी तरह जानते हैं, अकसर हम उन्हीं को बिलकुल नहीं जान पाते। इस वास्ते सब चीज़ों को जानने के लिए ध्यान से उनको देखकर समझना चाहिए।

सवालात

१—पत्तियाँ कितनी तरह की होती हैं?

२—रचक-पत्ती और बीज-पत्ती में क्या भेद है?

३—पीपल और बाँस की पत्ती में क्या फर्क होता है?

४—पीपल और इमली की पत्तियों में क्या विशेषता है?

५—चिकनी और खुरखुरी पत्तियों के नाम लिखो।

पाठ २८

भाइयों का प्रेम

किसी बड़े नगर में एक कारीगर रहता था। वह अपनी दूकान पर काम करके जो चार पैसे पैदा करता था, उन्हीं से अपनी गृहस्थी चलाता था। एकाएक उसका रोज़गार ऐसा मन्द पड़ गया कि उसमें कुछ भी पैदा न होने लगा। बेचारे ने बहुत कोशिश की, पर कुछ भी फल न हुआ। वह बड़ा ग़रीब हो गया।

एक दिन ग़रीबी से तङ्ग आकर उस कारीगर ने अपनी औरत को एक आश्रम में रख दिया। वह खुद अपने छोटे-छोटे दो लड़कों को लेकर बाहर कमाने के लिए निकल पड़ा। बदनसीबी ने वहाँ भी उसका पीछा न छोड़ा। उसे घर से निकले कुछ ही महीने हुए होंगे कि वह मट्टी खाकर बीमार पड़ गया। अच्छा होने की कोशिश तो उसने बहुत की, पर वह अन्त तक अच्छा न हुआ। अपने दोनों लड़कों को परदेश में अनाथ छोड़कर वह एक दिन इस जगत् से ही कूच कर गया।

बाप के मर जाने पर दोनों बच्चों ने अपनी माँ के पास लौट जाने का इरादा किया। सर्दी के दिन थे और बहुत दूर का फ़ासला था। बड़े भाई ने, जिसकी उम्र अभी सिर्फ़ बारह बरस की थी, कुछ पैसे देकर अपने छोटे भाई को मुसाफ़िरों की एक गाड़ी पर बिठा दिया। इतने ज़्यादा पैसे ही उसके पास न थे कि वह ख़ुद भी गाड़ी पर सवार होकर चलता। बेचारा पैदल ही गाड़ियों के साथ-साथ चलने लगा। वे गाड़ियाँ उसी शहर को जा रही थीं, जहाँ उसकी माँ रहती थी।

दोनों लड़के आपस में एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। बड़ा भाई अपने छोटे भाई को गाड़ी में बिठलाकर ही निश्चिन्त नहीं हो गया, वह बराबर उसकी फ़िक्र लेता रहता। जब कभी वह गाड़ियों मे पीछे रह जाता तो रात को जहाँ गाड़ियाँ मुक़ाम करतीं वह जल्दी जल्दी चलकर वहीं पहुँच जाता और तुरन्त उसकी ख़बर लेता। भूख लगी होती तो कुछ ख़रीद कर खिलाता, प्यास लगी होती तो पानी लाकर पिलाता। अपने खाने-पीने की उसे कुछ भी परवाह न

थी, पर अपने छोटे भाई के लिए वह बराबर दौड़-धूप करता रहता था।

जैसे-जैसे रास्ता पूरा होता जाता था, वैसे-वैसे वह थकता जाता था, लेकिन अपने छोटे भाई का ख्याल करके वह कभी रुकता नहीं था। उसे बराबर यही चिन्ता लगी रहती थी कि मेरा छोटा भाई मज़े में तो है, कहीं उसको सर्दी तो नहीं लग रही है! झटपट जाकर वह उसे अपना कम्बल उढ़ा देता।

आखिर बेचारा कहाँ तक थकावट बरदाश्त करता। एक दिन, दो दिन, चार दिन तक तो किसी तरह गाड़ियों के साथ दौड़ता रहा। अन्त में थकावट से उसके पैर काँप उठे! इतने पर भी वह अपने भाई की याद करके हाँफता हुआ गाड़ियों का पीछा न छोड़ता था। मुसाफ़िरों को उसकी इस दशा पर बड़ी दया आई। वे कई दिन से बराबर उस लड़के को इसी तरह दौड़ते हुए देख रहे थे। उन सबने मिलकर कुछ पैसे इकट्ठे किये और उन्हें गाड़ीवान को देकर उस लड़के के लिए भी एक गाड़ी

में थोडी सी जगह दिला दी। गाड़ीवान ने अपने पास ही उसे भी बिठाल लिया।

कई दिन के बाद वे दोनों भाई अपनी माँ से जा मिले। माँ ने अपने दोनों बच्चों को गले लगाया। उसने आश्रम छोड दिया। अपने दोनों बच्चों को लेकर वह अलग रहने लगी। वे सबके सब मज़दूरी करके अपनी गुज़र-बसर चलाते रहे। बड़े भाई ने संगतराशी का काम किया और बड़ा होने पर वह अपने नगर का बहुत मशहूर आदमी हुआ। लेकिन उन दोनों भाइयों में जैसा प्रेम लड़कपन में था, वैसा ही बड़े होने पर भी बना रहा।

सवालात

१—इस पाठ में बड़े भाई ने क्या प्रेम दिखलाया ?

२ —नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बतलाओ और उन्हें अपने वाक्यों में इस्तेमाल करो।

आश्रम, जगह से कूच करना, गले लगाया और संगतराशी।

३—इस पाठ से तुम्हें क्या शिक्षा मिली ?

पाठ २६

पटवारी

लड़को ! तुम लोग अपने गाँव के पटवारी को ज़रूर जानते होगे। लेकिन पटवारी किसलिए होते हैं यह शायद तुम्हें मालूम न होगा। अच्छा, आज हम तुमको बतलाते हैं कि पटवारी किसलिए होते हैं और किसान और ज़मींदारों को उनकी क्या ज़रूरत होती है।

पटवारी का काम है कि लगान वग़ैरह के बारे में जो-जो फेर-फार होते रहते हैं उन्हें अपने काग़ज़ों में दर्ज करता रहे। उन काग़ज़ों को लैंड-रेकर्ड्स या ज़मीन के काग़ज़ात कहते हैं। उनके बग़ैर काश्तकार, ज़मींदार और सरकार किसी का भी काम नहीं चल सकता। वे काग़ज़ बड़े काम के होते हैं।

क्या काश्तकार और क्या ज़मींदार, सबके लिए यह निहायत ज़रूरी है कि उन काग़ज़ों में जो कुछ दर्ज हो वह ठीक हो। अगर उनमें ज़रा भी ग़लती हो गई तो फिर कुछ न कुछ गड़बड़ी ज़रूर होगी। इस वास्ते हर एक काश्तकार

और ज़मींदार को चाहिए कि वह .खुद पटवारी के साथ बैठकर सब बातें अपने सामने दर्ज करा दे और उनमें गड़बड़ी न होने दे। खेतों का रक़बा, लगान और ज़मीन का हक़ वग़ैरह सबका पूरा-पूरा ब्यौरा पटवारी के पास ही रहता है।

पटवारी गाँव-गाँव में जाकर हर एक खेत की जाँच करता है। साल-भर के अन्दर उसमें जो-जो रद्दोबदल होते हैं उनका ठीक-ठीक हाल वह लिख लेता है। उसका यह काम 'मेड़-मिलान' कहलाता है। यह काम बड़े महत्त्व का है। यदि किसी के खेत की नाप में ज़रा सी भी ग़लती हो गई, तो बड़ी गड़बड़ी पड़ जाती है। इसलिए जिसका कुछ भी हक़ ज़मीन में हो, उसे चाहिए कि वह ज़रूर उस वक्त पटवारी के साथ-साथ जाकर देखे कि सब लिखा-पढ़ी ठीक हो रही है या नहीं। जो लोग ऐसा नहीं करते और इस मौक़े पर चूक जाते हैं, वे अकसर धोखा खाते हैं और बाद को व्यर्थ के लड़ाई झगड़ों में पड़कर मुसीबत उठाते हैं।

पटवारी सरकार की तरफ़ से नौकर होता है। पटवारी के ऊपर क़ानूनगो हुआ करते हैं। हर एक

क़ानूनगो के नीचे बहुत से पटवारी काम करते हैं। सरकारी मालगुज़ारी का सब दारोमदार पटवारी के कागज़ों पर रहता है। गाँव के रक़बे के लिहाज़ से किसी पटवारी के पास एक, किसी के पास दो और किसी के पास तीन-चार गाँव तक होते हैं। सबके कागज़ात पटवारी रखता है।

पटवारी का काम है कि जो काश्तकार अपनी ज़मीन, अपने खेत और बाग़ आदि का जो कुछ हाल जानना चाहे, वह उसे बतलाये। साथ ही काश्तकारों और ज़मींदारों का भी यह फ़र्ज़ है कि वे उसकी मदद करके ठीक-ठीक बातें ही उसके कागज़ों में दर्ज करायें। दोनों के एक-दूसरे को मदद करने से गाँवों के बहुत से झगड़े तो इसी तरह निपट सकते हैं। उनके लिए मुक़दमा लड़ने की कोई ज़रूरत ही नहीं रह जाती।

मतलब यह कि पटवारी का हर एक, छोटा से छोटा, काम भी गाँवों के किसानों और ज़मींदारों के लिए बड़े महत्त्व का है। उनकी भलाई इसी में है कि उसके कागज़ात बहुत साफ़ और ठीक-ठीक रहें। पटवारी के कागज़ों की ग़लती का मतलब

है गाँव के काश्तकार और ज़मींदारों का लड़ाई-झगड़ा; और गाँवों का लड़ाई-झगड़ा उनकी बरबादी की जड़ है।

जो अच्छे और समझदार काश्तकार हैं, वे बड़ी मुस्तैदी से पटवारी के काम में मदद देते हैं और ख़ुद भी उसके काग़ज़ात देखते रहते हैं। वे कभी उसके साथ खेत तक जाकर जाँच कराने में आलस नहीं करते।

लड़को! तुममें से ज़्यादातर काश्तकार या ज़मींदार होंगे। इस वास्ते तुम्हें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि पटवारी का काम कितने महत्त्व का है? तुम्हें कभी उसके काग़ज़ों को ठीक कराने से हिचकना न चाहिए। ऐसा करने से तुम लड़ाई-झगड़े से दूर रह सकोगे और जो वक्त इस तरह बरबाद होता है उसे अच्छी-अच्छी फसल पैदा करने में लगा सकोगे।

सवालात

१—पटवारी क्या काम करता है?

२—किसानों और जमींदारों में खेतों के बारे में क्यों झगड़ा होता है?

३—किसानों को पटवारी की मदद कैसे करनी चाहिए?

पाठ ३०

स्वामिभक्त बालक

हिन्दुस्तान के दक्षिण में मैसूर एक बड़ा राज्य है। बहुत साल पहले की बात है, इस राज्य के एक गाँव में भागाम्मा नाम की एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके घर में एक छोटा



सा मुसलमान लड़का नौकर था, जिसका नाम हैदर था। वह ब्राह्मणी के घर का बहुत सा काम किया करता था। साथ

ही उसके बच्चों की, जो उससे छोटी उम्र के थे, सेवा किया करता था। वह बड़ी मुस्तैदी से हर एक काम करता था। ब्राह्मणी उसके काम से बहुत ख़ुश रहती थी। वह उसे अपने लड़कों के बराबर ही चाहती थी और उसके खाने-पीने की सदा फ़िक्र रखती थी। हैदर भी भागाम्मा को माँ के बराबर मानता था; और अम्मा कहकर ही उसे पुकारता था।

हैदर लड़कपन से ही बड़ा नटखट और खिलाड़ी था। डर किसे कहते हैं, यह तो वह जानता ही न था। इसी से बड़े होने पर उसने मैसूर-राज्य की सेना में नौकरी कर ली। सिपाही बनकर उसने ऐसे-ऐसे बहादुरी के काम किये कि वह बराबर तरक्क़ी करता चला गया। यहाँ तक कि वह एक दिन राज्य की तमाम सेना का अफ़सर—सेनापति—बन गया। उस वक्त मैसूर-राज्य में उसके बराबर दिलेर और चतुर कोई दूसरा आदमी न था। इसी लिए आख़िरकार एक दिन वह मैसूर का बादशाह बन बैठा।

ताज्जुब तो यह है कि इतना बड़ा पद पाने पर भी हैदरअली बचपन की उस कृपालु ब्राह्मणी को नहीं भूला।

किस तरह भागाम्मा उसके ऊपर मेहरबानी की नज़र रखती थी, किस तरह उसे खिलाती-पिलाती थी, ये बातें उसे अच्छी तरह याद थीं।

जब वह मैसूर के तख्त पर बैठा तो उसे अपनी पुरानी अम्मा के देखने की बड़ी इच्छा हुई। वह ऊँटों पर अशर्फ़ियाँ, रेशमी कपड़े और बढ़िया-बढ़िया गहने लदवाकर उसी छोटे से गाँव की तरफ़ चल पड़ा।

हैदरअली के साथ उसके दरबार के बड़े-बड़े अमीर-उमरा भी थे। वे लोग मन ही मन कहते थे कि न जाने बादशाह कहाँ जा रहे हैं! किसी को कुछ भी पता न था। कोई समझ रहा था कि किसी ज़ोरदार दुश्मन को रिश्वत देने के लिए इतना धन ले जा रहे हैं। कोई समझता था कि वे शिकार के लिए कहीं चल रहे हैं। इस तरह जो जिसके जी में आता, वह मन ही मन वही समझकर चुपचाप बादशाह के साथ चला जा रहा था। किसी में इतनी हिम्मत न थी कि वह उससे इस विषय में कुछ पूछता।

चलते-चलते हैदरअली की सवारी उसी गाँव के पास जा पहुँची। बादशाह ने अपने महावत से कहा—यह रास्ता है। हाथी इधर से ले चलो।

तुरन्त हाथी उधर को मुड़ गया। उसके तमाम साथी



भी गाँव की गलियों में होकर चल पड़े। एक छोटे से मकान के दरवाज़े पर पहुँचते ही बादशाह ने कहा—बस।

हाथी रुक गया। हैदरअली हाथी से कूद पड़े। सभी सरदार लोग हैरान थे कि आखिर मामला क्या है!

हैदरअली चुपचाप दरवाज़े के पास पहुँचे और उसकी साँकल ज़ोर से खटखटाने लगे। अन्दर से आवाज़ आई—कौन है ?

बादशाह ने जवाब दिया—आपका पुराना नौकर हैदर आपका दर्शन करना चाहता है।

दरवाज़ा खुला। बुढ़िया ब्राह्मणी भागाम्मा बाहर निकल आई। हैदरअली को राजसी ठाट-बाट में देखकर वह पहचान न सकी। तब हैदरअली ने हाथ जोड़कर ख़ुद ही कहा—अम्मा, मैं आपका खादिम हैदर हूँ। मेरी इस छोटी सी भेंट को क़बूल कीजिए।

भागाम्मा की आँखों से प्रेम के आँसू निकल पड़े। उसने हैदरअली के सिर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया और कहा—बेटा, तुम ख़ूब फूलो-फलो। ईश्वर करे तुम मैसूर के ही नहीं, तमाम हिन्दुस्तान के बादशाह हो जाओ।

सवालात

१—भागाम्मा ने हैदर की कैसे परवरिश की ?

२—हैदरअली ने क्या स्वामिभक्ति की ?

३—भागाम्मा ने उसे क्या आशीर्वाद दिया ?

४—नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो—

हैदर स्वामिभक्त था, इसलिए बादशाह होने पर भी··· ·

हैदर की जगह अगर कोई दूसरा होता तो·········

५—नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में इस्तेमाल करो—

प्रेम के आँसू, फूलो-फलो, ठाट-बाट, दर्शन।

पाठ ३१

बाँस

बाँस के झाड़ हमारे यहाँ कम होते हैं, लेकिन फिर भी, वे सब कहीं, थोड़े-बहुत, देखने को मिल ही जाते हैं। गाँवों के आस-पास बग़ीचों की खाई पर अक्सर लोग बाँस लगा देते हैं। बाँस की एक कोठी या उसके कोट में बहुत से बाँस गसे हुए होते हैं। कभी-कभी तो वे इतने घने हो जाते हैं कि उनके आर-पार कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता।

बाँस के पेड़ ज़मीन में बड़ी मज़बूती से गड़े रहते हैं। उनका उखाड़ना सहल नहीं होता। बाँस में काँटे भी होते

हैं। लोग उसे बग़ीचों के किनारों पर इसलिए लगाते हैं कि रास्ते रुक जायँ, जानवर वग़ैरह बे-रोक-टोक उनमें न आ सकें। बाँस तीस-चालीस हाथ तक ऊँचे होते हैं।



बाँस

बाँस के पत्ते लम्बे और पतले होते हैं। लगभग साठ साल में बाँस में बीज आने लगते हैं। इसके बीज

गेहूँ की तरह होते हैं। वे चार-चार अंगुल की दूरी से गुच्छों में लगते हैं। ग़रीब लोग कभी-कभी इन बीजों की रोटी बनाकर खाते हैं। जब बीज पक जाते हैं तो बाँस भी सूखने लगते हैं। सूखे हुए बाँसों की जगह बीस-पच्चीस बरस बाद नये बाँस निकल आते हैं।

बाँस के अन्दर सफ़ेद-सफ़ेद एक चीज़ निकलती है, उसे वंशलोचन कहते हैं। वंशलोचन बहुत सी दवाओं में काम आता है। बाँस ख़ुद भी कई दवाओं में काम देता है।

बाँस की लकड़ी अन्दर से बढ़ती है। वह बरगद या पीपल की तरह बाहर से नहीं बढ़ती। यही कारण है कि बाँस ऊपर से चिकना होता है। जिन पेड़ों की लकड़ी बाहर से बढ़ती है, वे खुरखुरे होते हैं। सूखे हुए बाँस तेज हवा में एक-दूसरे से रगड़कर जल उठते हैं। जब दिया-सलाई नहीं थी तो कहीं-कहीं बाँस रगड़कर ही आग बनाई जाती थी।

बाँस मज़बूत भी बहुत होता है। गाँव के सभी आदमियों के पास बाँस की एक-एक बड़ी लाठी रहती है।

देखने में वे लाठियाँ पतली होती हैं, पर होती बड़ी मज़बूत हैं। दो-दो तीन-तीन आदमी भी उन्हें आसानी से नहीं तोड़ सकते। किसानों के हथियार तो वे लाठी ही हैं। उन्हीं के बल पर वे निडर रहकर रात को भी अपने खेतों की रखवाली किया करते हैं। अगर कोई ख़तरनाक जंगली जानवर ही आ जाय तो भी उन्हें भरोसा रहता है कि उनकी लाठी पूरा काम देगी।

इसके अलावा बाँस और भी बहुत से कामों में आता है। उसकी चारपाई बनती हैं। उससे मकान की छतें पाटी जाती हैं। किसानों के क़रीब-क़रीब सभी झोपड़े बाँसों से ही तैयार होते हैं। खपरैलों में भी बाँस लगते हैं। छप्परों और टट्टियों में भी बाँस काम में लाये जाते हैं। घर-घर बाँसों की ज़रूरत रहती और उनका काम पड़ता है।

यही क्यों, बाँसों से और भी बहुत सी चीज़ें बनाई जाती हैं। बाँस को फाड़कर उसकी महीन तीलियों से टोकरियाँ बिनी जाती हैं। बाँस की ये टोकरियाँ बड़ी मज़बूत और ख़ूबसूरत होती हैं। बाँस की लोग चटाइयाँ भी बिनते हैं। उसके सूप और पंखे भी बहुत बनते हैं।

बाँस की ये सब चीजें गाँवों में बनती हैं। शहरों में पङ्खों आदि के अलावा बाँस की कुरसियाँ भी बनती हैं। मतलब यह है कि क्या शहर क्या देहात, बाँस सभी जगह काम में आता है। वह बड़े काम की चीज़ है।

सवालात

१—बाँस किस काम आता है ?
२—इसका ऊपरी भाग क्यों चिकना होता है ?
३—बाँस के फल किस काम आते हैं ?
४—लाठी का बाँस कैसा होता है ?

पाठ ३२

पन्नादाई

महाराना साँगा की मृत्यु के समय उनके लड़के उदय-सिंह की उम्र छः साल की थी। वह राज्य करने के लायक़ न था। इसलिए मेवाड़ के सब सरदारों ने सलाह करके,

राजकुमार के बड़े होने तक के लिए, राज का काम बनवीर को सौंप दिया। लोगों ने समझा कि बनवीर ईमानदारी से मेवाड़ का राज्य चलायेगा और राजकुमार के बड़े होने पर खुशी से उसका राज्य उसे दे देगा। लेकिन राज्य मिलते ही बनवीर की नियत बदल गई। वह राजकुमार को मार कर सदा के लिए राज्य अपने हाथ में कर लेने पर तुल गया।

बनवीर जानता था कि अगर उदयसिंह जीता रहा तो वह एक न एक दिन ज़रूर ही मुझे सिंहासन से उतार देगा। इस वास्ते उसने तय कर लिया था कि कुछ भी हो, मैं उदयसिंह को जीता न छोड़ूँगा। एक दिन रात को वह तलवार लेकर अपने घर से निकल पड़ा और सीधा राना के महल की तरफ़ चल दिया।

राजकुमार उदयसिंह उस वक़्त सो रहा था। उसकी दाई पन्ना पास बैठकर उसके ऊपर हवा कर रही थी। पास ही दूसरी चारपाई पर पन्ना का एकलौता लड़का भी सो रहा था। यकायक राजमहलों से रोने की आवाज़ आने लगी। पन्ना समझ गई कि कुछ दाल में काला है। वह उठने



ही वाली थी कि एक नौकर दौड़ता हुआ आकर बोला—बनवीर तलवार लिये हुए उदयसिंह को मारने आ रहा है।

बेचारी पन्ना डर के मारे काँपने लगी। परन्तु उसने झपटकर सोते हुए राजकुमार को उठाकर एक खाली टोकरे में छिपा दिया और राजकुमार के पलँग पर अपने बच्चे को लिटा दिया। साथ ही उसने नौकर को हुक्म दिया—यह टोकरा लेकर तुम तुरन्त क़िले से बाहर निकल जाओ। मैं वहीं आकर मिल जाऊँगी।

नौकर टोकरा लेकर एक दरवाज़े से बाहर हुआ ही था कि दूसरे दरवाज़े से सचमुच बनवीर नङ्गी तलवार लिये आ पहुँचा। उसने गरज कर पूछा—राजकुमार कहाँ है ?

पन्ना की ज़बान डर के मारे खुल न सकी। उसने हाथ की उँगली से पलँग की तरफ़ इशारा कर दिया। बस, फिर क्या था ! तुरन्त ही बनवीर झपटकर पलँग के पास जा पहुँचा और एक ही वार में सोते हुए बच्चे का काम तमाम कर दिया।

अपने एकलौते बच्चे का ख़ून होते देखकर पन्ना बेहोश होकर गिर पड़ी। जब उसे होश आया तब भी

वह जी भरकर अपने प्यारे बच्चे के लिए रो न सकी! मालिक के लड़के को बचाने के लिए वह अपने लड़के के लिए आँसू तक न बहा सकी! बनवीर राजकुमार को मरा जानकर मारे ख़ुशी के झूमता हुआ लौट गया।

उसके बाद पन्ना भी चुपचाप महल से बाहर हो गई और राजकुमार को जा मिली। नौकर के साथ पन्ना राजकुमार को लिये हुए कुछ दिनों तक इधर-उधर फिरती रही। बनवीर के डर की वजह से राजकुमार को भी कोई अपने यहाँ रखने को तैयार न होता था। आख़िरकार कमलमीर के सरदार ने उन्हें अपने यहाँ रख लिया।

राजकुमार के बड़े होने पर पन्ना दाई ने सब सरदारों के सामने अपना भेद खोल दिया। जब सबको मालूम हो गया कि उदयसिंह अभी तक जीता है तो सबने उसे ले जाकर मेवाड़ के सिंहासन पर बिठाया। बनवीर उसी दम मारकर निकाल दिया गया।

पन्ना के इस त्याग की वजह से आज भी उसका नाम सब लोग बड़े आदर से लेते हैं। वह मर चुकी है; पर उसका नाम अमर है, और सदा इसी तरह अमर रहेगा।

सवालात

१—उदयसिंह कौन था ?

२—पन्ना दाई ने उसकी जान कैसे बचाई ?

३—पन्ना का नाम क्यों अमर है ?

४—तुम्हें इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है ?

५—नीचे लिखे हुए मुहाविरों के अर्थ बताओ और उनको अपने वाक्यों मे प्रयोग करो—काम तमाम करना, दाल में काला।

पाठ ३३

भिंडी

देवीदयाल का बाप किसान है। वह अनाज की खेती करता है। देवीदयाल अक्सर अपने बाप के साथ खेत में जाकर उसकी मदद करता है। लेकिन अभी तक देवीदयाल को अनाज की खेती के अलावा और किसी की खेती का ज्ञान नहीं है।

एक दिन उसका बाप कहीं जा रहा था। उस दिन मदरसा बन्द था, इसलिए देवीदयाल भी अपने बाप के

साथ चलता हुआ। जाते वक्त वे एक काछी के सरसब्ज़ खेतों के पास से गुज़रने लगे। देवीदयाल ने हरे-भरे खेतों को देखकर पूछा—बापू, अपने खेत तो आजकल मुरझाये जा रहे हैं पर ये तो खूब हरे-भरे हैं। जान पड़ता है, यहाँ कहीं पास ही तालाब है।

बाप—ये लोचन काछी के खेत हैं। उसने अपने खेत में कुआँ बना रक्खा है। वह अपने खेतों में खूब पानी देता है।

देवीदयाल—कुएँ तो अपने खेतों में भी हैं।

बाप—अपने खेतों में अनाज की खेती होती है। उनको बहुत पानी की ज़रूरत नहीं होती। लोचन तरकारी की खेती करता है। उसके यहाँ कोई न कोई चीज़ रोज़ सींचने को बनी रहती है। देखो, वह अपने भिंडी के खेत को पानी दे रहा है।

देवीदयाल—क्या वह भिंडी सींच रहा है? वह भिंडी भी बोता है! ज़रा मैं भी भिंडी का खेत देखना चाहता हूँ।

बाप—अच्छा, आओ तुम्हें दिखा ही दें—तरकारी की खेती में मिहनत तो पड़ती है, पर फ़ायदा भी बहुत होता



है। हर वक्त कोई न कोई फ़सल तैयार ही रहती है और हमेशा चार पैसे हाथ में रहते हैं।

देवीदयाल—तो क्या ये ही भिंडी के पौदे हैं?

बाप—हाँ, देखो, इनमें भिंडियाँ भी लगी हैं। इसकी थोड़ी क्यारियाँ हैं। इसी खेत से वह दूसरे तीसरे दिन भिंडी तोड़कर बाज़ार ले जाता है। तुमने तो भिंडी का तरकारी खाई है। कैसी मज़ेदार होती है! इसकी तरकारी फ़ायदेमन्द भी होती है।

देवीदयाल—इसका खेत कितनी बार जोता जाता है?

बाप—तीन-चार बार जोतना काफ़ी होता है।

देवीदयाल—क्या इसके खेत में खाद भी दी जाती है?

बाप—हाँ, इसके खेत में खूब खाद देनी पड़ती है।

देवीदयाल—और पानी कितनी बार दिया जाता है?

बाप—हर आठवें दिन तो इसमें पानी ज़रूर ही देना चाहिए, तब जाकर कहीं इसकी फ़सल तैयार होती है।

इसी तरह घुइयाँ या अरुई को भी पानी दरकार होता है। यही वजह है, जिससे सब लोग इन चीज़ों को नहीं बोते। पानी देते-देते नाक में दम हो जाता है।

देवीदयाल—इसके पौदे काफ़ी दूर-दूर हैं। क्या ईख के टुकड़ों की तरह भिंडी भी गड़ाकर बोई जाती है?

बाप—नहीं, भिंडी के अन्दर तो बीज होते हैं। पहले वे ही एक क्यारी में बो दिये जाते हैं। जब पौदे चार या पाँच इंच के हो जाते हैं तो वे उखाड़-उखाड़कर दूसरी क्यारियों में रोप दिये जाते हैं। जो लोग ऐसा नहीं करते वे इसका बीज ही छिटका देते हैं।

देवीदयाल—तरकारी के अलावा भिंडी और तो किसी काम आती नहीं है?

बाप—आती क्यों नहीं, उसके पत्तों की खाद बनाई जाती है। उसके तने से रेशा निकालते हैं। इसका लुआब शकर साफ़ करने के काम आता है। भिंडी का अचार भी पड़ता है।

देवीदयाल—तब तो लोचन इसके लिए जो इतनी मेहनत करता है, वह ठीक ही है। बापू, अबकी बार मैं भी अपने खेत के एक कोने में भिंडी बोऊँगा।

बाप—तुम्हारा मन है, तो बो लेना।

सवालात

१—भिंडी किस-किस काम आती है ?
२—उसकी फ़सल कैसे तैयार की जाती है ?
३—सब किसान इसे क्यों नहीं बोते ?
४—भिंडी का लुआब किस काम आता है ?

पाठ ३४

पटवारी के काग़ज़ात

पटवारी के पास कौन-कौन से काग़ज़ात रहते हैं और वह उनसे क्या काम लेता है, ये बातें किसी लड़के को मालूम न होंगी। यहाँ हम पटवारी के सभी काग़ज़ों का थोड़ा-थोड़ा हाल तुम्हें बताते हैं। पटवारी के पास जो

कागज़ात रहते हैं वे सब छपे हुए होते हैं। पटवारी उन्हें रजिस्ट्रार-क़ानूनगो से पाता है। रजिस्ट्रार-क़ानूनगो को सरकार की तरफ़ से ये कागज़ात छपे-छपाये मिलते हैं। वही उन्हें रखते हैं और जिस पटवारी को ज़रूरत पड़ती है, उसे दे देते हैं। उन कागज़ों के नाम ये हैं—शजरामिलान, खसरा, स्याहा, खतौनी जमाबन्दी, बहीखाता जिन्सवार और खेवट।

शजरामिलान गाँव के खेतों और मकानों का नक़शा होता है। यह मोमजामे के कपड़े या मज़बूत काग़ज़ पर बनाया जाता है। इसमें हर तरह की आराज़ी का चित्र दिया जाता है। जिस खेत का चित्र बनता है उसी में उसका नंबर भी दिया रहता है। जिस तरह रक़बा या आराज़ी की हालत बदलती रहती है, उसी तरह, निश्चित समय के बाद, इस नक़शे में भी फेर-फार होता रहता है। इसमें तालाब, बाग़ और कुआँ वग़ैरह भी दिखाये जाते हैं। मतलब यह है कि गाँव की जितनी ज़मीन होती है, उसका इसमें खेतवार हिसाब रहता है। इस नक़शे को देखकर कोई भी किसान अपना खेत जान सकता है।

खसरे में ज़मीन का पूरा हाल रहता है। नक़शे में जितने खेत रहते हैं उनमें उनके नंबर दिये रहते हैं। वही नंबर सिलसिलेवार खसरे में भी दर्ज रहते हैं, उन्हीं नंबरों के साथ उन खेतों का रक़बा, क़िस्म ज़मीन, लगान, ज़मींदार का नाम, काश्तकार का नाम और फ़सल की क़िस्म आदि सब दर्ज रहते हैं। खसरे का ठीक-ठीक लिखा जाना बहुत ही ज़रूरी है। हर काश्तकार और ज़मींदार का फ़र्ज़ है कि वह मेड़बन्दी के वक्त पटवारी के साथ रहकर अपने खेत की सब बातों को खसरे में लिखवा दे। जो-जो फेर-फार हुए हों वे ज़रूर ही पटवारी के कागज़ों में दर्ज हो जाने चाहिएँ।

स्याहा वह कागज़ होता है जिसमें पटवारी ज़मींदार के कागज़ात देखकर लगान की वसूलयाबी की खाना-पूरी करता है।

खतौनी जमाबन्दी खसरे के मुताबिक़ बनाई जाती है। इसमें क़ब्ज़े के मुताबिक़ किसानों के नाम दिये जाते हैं। काश्तकारों और ज़मींदारों के सब खेत एक जगह दर्ज रहते हैं। उसी में,'साथ ही, लगान और बकाया लगान

भी लिखा रहता है। इसमें भी सभी ज़रूरी तबदीलियाँ दर्ज रहती हैं।

बहीखाताजिन्स में लगान का हिसाब, मय उसके तरीक़े के, लिखा जाता है। चाहे वह लगान बटाई से लिया जाय, चाहे और किसी तरीक़े से।

खेवट मुहालवार तैयार किया जाता है। हर एक मुहाल के सभी दखीलकारों का एक रजिस्टर होता है। उसमें रक़बे के सब मालिकों का हर एक हक़ दर्ज रहता है और यह भी लिखा रहता है कि वह हक़ कितना और किस क़िस्म का है। खेवट में जो तब्दीली होती है वह रजिस्ट्रार-क़ानूनगो की आज्ञा लेकर होती है। बग़ैर उसकी आज्ञा के उसमें कुछ फेर-फार नहीं हो सकता। जो भी तब्दीली दर्ज होती है उस पर रजिस्ट्रार-क़ानूनगो के दस्तख़त होते हैं। वही उसके लिए ज़िम्मेदार होता है।

जितने काग़ज़ों का हाल लिखा गया है, उन्हें तैयार करने के सिवाय पटवारी को और भी कई बातों की रिपोर्ट करनी पड़ती है। जैसे किसी काश्तकार या ज़िमींदार की मृत्यु; अगर कोई आराज़ी बेच दी गई हो तो उसका हाल;

गाँव की सरहद में कोई रद्दोबदल हुआ हो तो वह; और गाँव पर आने वाली आफ़तों, जैसे सूखा और बाढ़ आदि के नुक़सान का हाल। मतलब यह है कि गाँव की भलाई की सभी बातों की देख-रेख पटवारी के ऊपर रहती है। वह चाहे तो लोगों का बहुत उपकार कर सकता है।

सवालात

१—पटवारी के पास कौन-कौन से काग़ज़ात होते हैं ?

२—खेवट, स्याहा क्या है ?

३—पटवारी के काग़ज़ों का जानना क्यों ज़रूरी है ?

पाठ ३५

किसानों के पेशे (२)

दूसरे दिन सबेरे ही पुत्तूलाल लाखन और भोला के मकान की तरफ़ गया। जिस तरह रेवा ने बतलाया था वैसे ही उनके घर के सब औरत-मर्द काम में लगे हुए थे। कोई सन की मोटी-मोटी रस्सियाँ बट रहा था, कोई पतली

डोरी बटकर समेट रहा था। औरतें एक बड़ा सा चरखा चलाकर रामबान बट रही थीं।

लाखन और भोला के दरवाज़े पर एक बड़ा सा मैदान था। वहाँ एक बरगद और दो नीम के पेड़ थे। ख़ूब छाया फैल रही थी। सब लोग वहीं बैठे हुए अपने काम में लगे थे। पुत्तूलाल एक पेड़ की जड़ पर बैठकर देखने लगा कि रामबान किस तरह ऐंठे जाते हैं।

पुत्तूलाल को इस तरह चुपचाप बैठे देखकर एक आदमी ने कहा—भाई, वहाँ क्यों बैठते हो? यहाँ आकर बैठो न।

पुत्तूलाल उठकर उसके पास चला गया और बोला—भाई, हम भी रामबान और रस्सी बटना सीखना चाहते हैं। क्या तुम मुझे यह काम सिखा दोगे?

उसने हँसकर जवाब दिया—हाँ, क्यों नहीं सिखा देंगे; पर तुम इसे सीखकर क्या करोगे? तुम तो अभी पढ़ रहे हो। पढ़-लिखकर बाबू बनोगे कि यह मजूरी का काम सीखोगे?

पुत्तूलाल ने कहा—क्या तुम मुझको पहचानते नहीं हो ? मैं भी तो इसी गाँव में रहता हूँ। मेरे घर में भी खेती होती है।

उस आदमी ने कहा—पहचानते क्यों नहीं हैं। तुम्हारे चाचा का नाम रघुनाथ हो तो है ? वे अमीर आदमी हैं। हम लोग ग़रीब हैं, इसी से हमें खेती के साथ-साथ यह भी करना पड़ता है। तुम्हारे यहाँ तो रुपये की कमी नहीं है। तुम्हें क्या परवाह है, चाहे खेतों मे कुछ पैदा हो, या न हो ?

पुत्तूलाल ने जवाब दिया—यह बात ठीक है, लेकिन हमारे यहाँ भी हमेशा खेती का काम नहीं रहता। कभी-कभी तो सब लोग दिन भर मौज किया करते हैं। अगर उस वक़् सब मिलकर थोड़ा बहुत काम कर लें तो हर्ज ही क्या है ?

उस आदमी ने पुत्तूलाल की बात मान ली और उसे रामबान और रस्सी बटने की बहुत सी बातें बता दीं। पुत्तूलाल कई दिन तक उसके यहाँ यह काम सीखने के लिए बराबर जाता रहा। जब वह सीख गया तो उसने अपने

घर पर कई तरह की रस्सियाँ बनाईं। वह सन को रँगकर रंगीन रस्सी भी बनाना सीख गया। रस्सी के बाद उसने रेवा के यहाँ जाकर टोकरी बनाना भी सीखा। दस-पन्द्रह दिन में वह ये सब काम सीख गया।

पुत्तूलाल के घर पर जितने नौकर काम करते थे, उनको भी ज़बरदस्ती उसने ये काम सिखा दिये। वे कुछ दिन तक तो उसी के यहाँ काम करते रहे। बाद में फ़ायदा ज़्यादा देखकर वे ख़ुद अपने घर पर यह काम करने लगे। पहले उन्होंने खेती से ऊबकर नौकरी कर ली थी, लेकिन अब एक नया हुनर जान लेने से उनके सब काम चलने लगे और उन्होंने फिर अपनी खेती शुरू कर दी।

पुत्तू की वजह से गाँव के और भी बहुत से लोग, जो आलस के साथ पड़े रहते थे, अब दिन भर मजे से काम किया करते हैं। उसमें उनका काफ़ी फ़ायदा हो जाता है और वक़्त भी फ़िज़ूल नहीं जाता। पुत्तूलाल ने किसानों को उनके पेशे बतलाकर तमाम गाँव के लोगों का बड़ा उपकार किया है। उसके गाँव में अब भूखों मरनेवालों की तादाद बिलकुल कम हो गई है।

सवालात

१—पुत्तूलाल ने गाँववालों को कैसे सुधारा ?
२—गाँव में ऐसी बातों का जानना क्यों ज़रूरी है ?
३—तुम्हारे गाँव में रस्सी बटना, टोकरी बनाना कोई जानता है ?

पाठ ३६

बकरे की नादानी

एक आदमी के पास एक बकरा और एक घोड़ा ये दो जानवर थे। घोड़े से काम भी बहुत लिया जाता था और उसे खाने को भी बहुत बढ़िया-बढ़िया दिया जाता था। बकरा न कुछ काम करता था, न अच्छा खाने को पाता था।

घोड़े को ख़ूब दाना-घास पाते देखकर बकरा मन ही मन बहुत नाराज़ रहता था। आख़िरकार उसने एक तरकीब निकाली। वह घोड़े की बहुत चापलूसी करने लगा। घोड़ा भी उससे ख़ुश रहने लगा। घोड़े को मालिक की नज़र से गिराने के लिए एक दिन बकरे ने उससे कहा—दोस्त, यह

मालिक तुम्हारे साथ बड़ा बुरा व्यवहार करता है। जब देखो तब वह तुम्हें काम ही में लगाये रहता है। कहीं गाड़ी में जुतवाता है, कहीं बोझा ढुवाता है। सच पूछो तो तुम्हारी यह हालत देखकर मुझे तुम पर बड़ी दया आती है। मैं दिन भर आराम करता रहता हूँ। जब कभी मन चाहा तो इधर-उधर उछल-कूद लिया। बस, फिर कोई काम नहीं। मज़े से खाना और चैन करना। इसी से जब कभी दिन में तुम्हारी याद आ जाती है तो बड़ा बुरा लगता है। उस वक्त मैं तो मज़े से छाँह में पड़ा रहता हूँ और तुम धूप में गाड़ी खींचते हो।

बकरे की ये बातें सुनकर घोड़े ने पूछा—तो बताओ दोस्त, क्या किया जाय? इसके अलावा मेरे लिए भला उपाय ही क्या है? अगर मैं काम न करूँ तो खाऊँ कहाँ से?

बकरा बोला—अगर तुम करना चाहो तो एक तरकीब तो मैं ऐसी बता सकता हूँ जिसमें काम भी न करना पड़े और खाने को भी खूब मिले।

घोड़े ने खुश होकर कहा—नेकी और पूँछ-पूँछ। दोस्त, तब तो ज़रूर बताओ। मैं सचमुच काम करते-

करते मरा जाता हूँ। इतनी मेहनत पड़ती है कि मेरा जी ही जानता है। बीस-बीस मील बराबर दौड़ना पड़ता है। अगर ज़रा भी ठहरकर दम लेना चाहूँ, तो कोड़ों की मार पड़ती है। अगर कुछ दिनों के लिए भी जैसा तुम कहते हो वैसा हो सके, तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूँगा।

बकरे ने कहा—मामूली सी तो बात है। रोज़ रात में बोझा लेकर आते हो। एक दिन किसी गड्ढे में गिर पड़ो। थोड़ी-बहुत चोट ज़रूर लग जायगी, लेकिन फिर देखना कैसी चैन से कटती है! काम से भी बचोगे और खाना-पीना भी पहले से अच्छा पाओगे। मुझसे अगर ये लोग काम लेने लगें तो मैं तो ऐसी ही कोई न कोई तरकीब निकाल लूँ।

सीधा-सादा घोड़ा बकरे के कहने में आ गया। उसे यक़ीन हो गया कि बकरा जो कुछ कहता है वह ठीक ही है।

एक दिन रात को जब वह कहीं से आ रहा था, बकरे के कहने के मुताबिक़ वह बोझा समेत एक गड्ढे में गिर पड़ा। गड्ढे में गिरने से उसके बड़ी चोट आई।

बहुत देर बाद कई लोगों ने मिलकर उसे निकाला और बड़ी मुश्किल से घर तक ले आये।

वह घोड़ा मामूली घोड़ों में न था। मालिक उसकी मेहनत से बहुत ख़ुश था। इसी से घोड़े की चोट को ठीक करने के लिए उसने तुरंत ही पशु-चिकित्सक को बुलाया।

पशु चिकित्सक ने आकर घोड़े की चोट की परीक्षा की और कहा—इसके पैर में बेढब मोच आ गई है। इसके ख़ूब मालिश होनी चाहिए। अगर कहीं बकरे की चर्बी मिल सके तो उम्मीद है कि पैर ठीक हो जायगा।

घोड़े के मालिक ने तुरन्त ही हुक्म दिया कि बकरा तो घर में मौजूद ही है। वह किस दिन काम आयेगा? उसी की चर्बी निकलवा लो।

बस, फिर क्या था, उसी वक़्त बकरे को मारकर घोड़े की मालिश के लिए चर्बी तैयार कर ली गई। बकरे को तुरन्त ही बुरे उपदेश का बदला मिल गया।

सवालात

१—बकरे को क्यों अच्छा खाना नहीं दिया जाता था?

२—उसने घोड़े को क्या नसीहत दी?

३—उस नसीहत का फल बकरे को क्या मिला?

४—तुम्हें इस पाठ से क्या शिक्षा मिली ?

५—पशु-चिकित्सक किसे कहते है ?

६—निम्निलिखित मुहाविरों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

नेकी और पूँछ-पूँछ, उपकार मानना।

७—नीचे के वाक्यों को पूरा करो :—

अगर बकरा घोड़े को बुरा उपदेश न देता तो... ..घोड़ें .. .. . लादे हुए जा रहा था, वह... ..गिर पड़ा। उसे बहुत ....

पाठ ३७

हैज़ा

हैज़े की बीमारी भी बड़ी भयङ्कर है। ज़रा सी देर में यह रोगी को अधमरा कर डालती है। इस बीमारी में, यदि शुरू होते ही बहुत अच्छी तरह कोशिश न की जाय, तो बात की बात में रोगी की मृत्यु हो जाती है। कभी-कभी तो कोशिश करने पर भी परिणाम अच्छा नहीं होता; क्योंकि यह बीमारी पूरी तरह से अपना असर पहले ही जमा लेती है।

हैज़े की बीमारी छोटे-छोटे विषैले कीड़ों से फैलती है। इसके कीड़े पानी या खाने के साथ मनुष्य के पेट में चले जाते हैं। उनके विष के कारण आदमी बीमार पड़ जाता है। हैज़े के रोगी की यही पहचान है कि उसको क़ै या दस्त, अथवा क़ै और दस्त दोनों होने लगते हैं। हैज़े के मरीज़ को पेशाब नहीं होती। अकसर हाथ-पैर एंठते हैं और प्यास अधिक लगती है।

इस बीमारी में हर साल हज़ारों आदमी मर जाते हैं। क्या गाँव और क्या शहर, सभी जगह इसने अपना घर बना लिया है। जहाँ कहीं यह बीमारी फैलती है, वहाँ की दशा फिर सँभालना कठिन हो जाता है। सबसे अच्छा उपाय तो यह है कि इस बीमारी को फैलने ही न दिया जाय। सच तो यह है कि हम लोग अपने आप ही बीमारियों को बुला लेते हैं। यदि हम न चाहें तो यह बीमारी किसी तरह फैल ही न सके।

हैज़े की बीमारी न फैलने देने के लिए नीचे लिखी हुई थोड़ी सी बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

१— अपने गाँव की ख़ूब सफ़ाई रक्खो।

२—मक्खियों को कभी भी अपने खाने पर बैठने न दो। बाज़ार या और कहीं से कभी ऐसी चीज़ लेकर मत खाओ, जिस पर मक्खियाँ बैठती रही हों। हैज़े के दिनों में न अधिक भोजन करना चाहिए और न ख़ाली पेट रहना चाहिए। भोजन ताज़ा और थोड़ा करना चाहिए।

३—हर एक आदमी को अपना-अपना डोल लाकर कुओं में न डाल देना चाहिए। कुएँ पर पानी खींचने के लिए एक अलग ही डोल-रस्सी रहना चाहिए। जिसे ज़रूरत हो, वह उसी से भरकर अपने बरतन में पानी उँडेल ले। कुएँ में गन्दे बरतन कभी न डालने चाहिएँ। इस तरह बहुत कुछ सफ़ाई रह सकेगी।

४—कुओं के आस-पास गन्दे नाले, तालाब या काली कीचड़ न रहने देनी चाहिए। यदि कहीं हो, तो उसकी सफ़ाई का इन्तज़ाम सबसे पहले ज़रूरी है।

५—जिन तालाबों में तुम्हारे जानवर पानी पीते हैं उनमें भी गन्दगी और कीचड़ क़तई न रहनी चाहिए। मतलब यह कि पीने का पानी और भोजन साफ़ रहे तो

तुम और तुम्हारे पशु दोनों ही इस बीमारी से बच सकोगे।

अगर किसी को हैज़ा हो गया हो तो उसे तुरन्त किसी होशियार वैद्य, डाक्टर या हकीम को दिखाना चाहिए। इसमें एक-दो मिनट की देर भी ख़तरे से ख़ाली नहीं होती। यदि वैद्य, डाक्टर या हकीम न मिल सके तो रोगी को अर्क़कपूर या अमृतधारा थोड़ी-थोड़ी देर बाद देते रहना चाहिए। रोगी को अधिक पानी पिलाना हानिकर है।

हैज़े के रोगी के क़ै-दस्त बड़े विषैले होते हैं। उनमें उस बीमारी के कीड़े मौजूद रहते हैं। इस वास्ते या तो उन्हें जला देना चाहिए या बस्ती के बाहर ज़मीन के अन्दर गाड़ देना चाहिए; पर भूलकर भी कभी तालाबों या नदियों में उन्हें नहीं बहाना चाहिए। ऐसा करने से हज़ारों प्राणियों की जान ख़तरे में पड़ सकती है।

सवालात

१—हैज़ा कैसे फैलता है ?

२—हैज़े से बचने के लिए क्या उपाय करोगे ?

३—कुओं की सफ़ाई का तुम क्या प्रबन्ध करोगे ?

पाठ ३८

खाद देने के तरीक़े

खेतों से जो चीज़ें पैदा होती हैं वही सड़-गलकर खाद का काम देती हैं। हमारे खेतों की पैदावार का बहुत बड़ा हिस्सा बाहर देशों में चला जाता है। वह वहीं जाकर सड़ता-गलता है। इसलिए हमारे यहाँ खाद बनती ही बहुत कम है। इसके अलावा किसान लोग खाद की बहुत परवाह भी नहीं करते। वे जिन तरीक़ों से खाद बनाते और काम में लाते हैं उनमें खाद का अच्छा हिस्सा बेकार चला जाता है। कुछ लोग तो उपले आदि बनाकर खाद की सामग्री ही नहीं रहने देते।

हमारे खेतों को खाद बहुत ही कम पहुँचती है। जो लोग थोड़ी-बहुत खाद देते भी हैं वे उसे ले जाकर खेत भर में बिछा देते हैं, या जगह जगह छोटी छोटी ढेरियाँ लगा देते हैं। इस तरह हवा और धूप में खाद का ज़ोरदार अंश उड़ जाता है और खाद फ़सल पर कुछ भी असर नहीं लाती। खेतों की पैदावार घटने का खास सबब यही है।

अच्छी पैदावार के लिए जरूरी है कि किसान लोग खाद का उचित उपयोग जानें। मामूली तौर से खाद



देने के दो तरीक़े हैं। एक तो हरी खाद देना और दूसरे गोबर, कूड़ा आदि की खाद देना।

हरी खाद देने का तरीक़ा यही है कि सनई, पटसन वग़ैरह जिसकी भी खाद देनी हो, उसे खेत में बो दो। उनके पौदे बड़े हो जायँ तो उन्हें जोतकर मिट्टी में मिला दो। ये पौदे फूलने से पहले ही जोतकर मिला दिये जायँ तो अच्छा है। हरी खाद के लिए ऐसे ही पौदे बोने चाहिएँ जो जल्दी उगें, सब ज़मीन को ढक लें और जिनकी जड़ें गहराई तक चली जायँ।

कूड़े-कचरे को खाद के रूप में काम में लाने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि किसान अपने खेत के सिरे पर पाँच फ़ुट लम्बा, पाँच फ़ुट चौड़ा और एक फ़ुट गहरा गड्ढा खोदें। उस गड्ढे में गाय-भैंसों का ताज़ा गोबर, मूत्र, कूड़ा-कचरा, घास, राख वग़ैरह सब कुछ रोज़-रोज़ इकट्ठा करके भरते जायँ। जब वह गड्ढा भर जाय तो पास ही इसी तरह का दूसरा गड्ढा खोदें। उसमें जो मिट्टी निकले उससे पहले गड्ढे को ढक दें। इसी तरह जब तक सब खेत में खाद न दे दी जाय, नये-नये गड्ढे खोदकर उन्हें भरते जाना चाहिए।

इलाहाबाद के कृषि-कालेज में इस तरीक़े से भी खाद दी जाती है। क्रमशः जौ, चना और सन के पौदों के



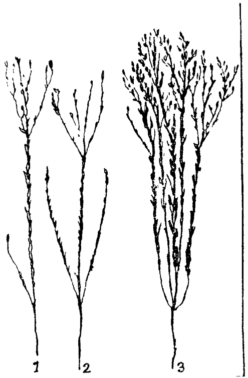
1 2

चित्रों को ध्यान से देखो। पहले चित्र में बाईं तरफ़ जौ का पौदा बिना खाद दी हुई ज़मीन पर और दाहिनी तरफ़

का पौदा ऊपर लिखी हुई रीति से खाद दी हुई ज़मीन में पैदा हुआ था। इसी प्रकार दूसरे चित्र में दाहिनी ओर चने का पौदा बिना खाद दी हुई ज़मीन पर और बाईं ओर का पौदा ऊपर लिखे तरीक़े से खाद दी हुई ज़मीन पर पैदा हुआ था। इस तरीक़े से कभी-कभी इतना लाभ होता है जितना सिंचाई करने से भी नहीं होता। तीसरे चित्र में सन के तीन पौदों का चित्र दिया गया है। पहला पौदा बिना खाद दी हुई ज़मीन में पैदा हुआ था। दूसरा बिना खाद दी हुई, पर सिंचाई की हुई. ज़मीन में पैदा हुआ था और तीसरा पौदा ऊपर बताये हुए तरीक़े से खाद दी हुई जमीन पर, बिना सिंचाई किये हुए, पैदा हुआ था।

इसके सिवा दूसरा लाभ यह है कि इस तरीक़े से जो खाद दी जायगी वह बहुत दिनों तक काम देगी। उसका कोई भी अंश बेकार नहीं जायगा। एक बात ज़रूर है कि इस तरीक़े से किसानों को घर का कूड़ा-कचरा रोज़-रोज खेत तक पहुँचाना पड़ता है। लेकिन इस थोड़ी सी तकलीफ़ के बदले उन्हें फ़ायदा बहुत ज़्यादा होता

है। इस वास्ते यह तकलीफ़ कुछ तकलीफ नहीं है।



बड़े-बड़े खेतों में दस-बीस .फुट लम्बे चौड़े भी गड्ढे खोदे जा सकते हैं।

इसके अलावा खाद देने के और भी कई विशेष तरीके हैं। विशेष खाद तभी देने की जरूरत पड़ती है जब किसी खास जिन्स की पैदावार बढ़ानी हो। विशेष खाद बहुत थोड़ी दी जाती है। इस वास्ते वह बड़ी आसानी से खेतों तक लाई जा सकती है। वह तैयार रहती है और उसका फल भी तुरन्त मिल जाता है।

चूने और हड्डी आदि की खाद विशेष खाद में से है। चूने की खाद का प्रभाव कई बरसों तक रहता है। हड्डी की खाद दो तरह से दी जाती है। एक उसका चूरा बनाकर और दूसरे उसकी राख देकर। मतलब यह है कि सभी खेतों में किसी न किसी तरह की खाद की जरूरत पड़ती है। बगैर खाद दिये पैदावार बढ़ने की कोई सूरत नहीं। किसानों को चाहिए कि वे अपने खेतों में अच्छी से अच्छी खाद देने का प्रबन्ध करें तभी वे खेती से कुछ फ़ायदा उठा सकते हैं।

सवालात

१—खाद किन-किन चीजों से बनती है ?

२—खेतों में खाद किस प्रकार डालनी चाहिए ?

३—हरी खाद कैसे देते हैं ?

४—किसी खास चीज़ की पैदावार बढ़ाने के लिए कैसी खाद होनी चाहिए ?

५—हड्डी की खाद कैसे बनती है ?

पाठ ३९

विद्या की महिमा

भोज एक राजा का लड़का था। वह पाँच ही बरस का हो पाया था कि उसका बाप मर गया। मरने से पहले वह अपने मंत्री को समझा गया कि अगर राजगद्दी मैं अपने बेटे को दे जाऊँगा तो मेरा भाई उस बच्चे को मार डालेगा। इसलिए भाई को ही राजा बनाया जाय।

राजा जानता था कि अगर भाई बिगड़ गया तो बालक की खैर नहीं। इसी लिए उसने मजबूर होकर अपने भाई को राजा बना दिया। उसी के हाथों में अपने बालक को सौंपकर वह मर गया।

राजा के भाई ने गद्दी पर बैठते ही पुराने मन्त्री को निकाल बाहर किया और उसकी जगह एक दूसरे आदमी को मंत्री बनाया। साथ ही वह बालक भोज को पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजने लगा।

भोज बड़ा ही होशियार बालक था। उसने थोड़े ही दिनों में बहुत कुछ पढ़ लिया। एक दिन उसका चाचा पाठशाला देखने गया। वहाँ भोज की होशियारी देखकर वह मन ही मन डर गया। उसने सोचा—यह तो बड़ा होनहार बालक है। अवश्य ही राज-दरबार और प्रजा के लोग किसी दिन इसे ही राजा बना देंगे।

यह सोचकर उसने किसी तरह बालक भोज को अपने रास्ते से हटा देना ही ठीक समझा। इस काम के लिए उसने अपने नये मंत्री को बुलाया और उससे कहा—देखो, मैंने तुम्हें मंत्री के ऊँचे पद पर बिठाया है। इसलिए तुम्हें मेरा एक काम करना होगा। मंत्री ने सिर झुकाकर कहा—हुक्म कीजिए, सेवक तैयार है।

उसने कहा—तुम भोज को ले जाकर चुपचाप मार डालो और उसका सिर लाकर मुझे दिखाओ।

मन्त्री यह हुक्म सुनकर काँप गया। लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। वह जानता था, कुछ कहना व्यर्थ है। राजा ने जो तय कर लिया है, वह बदल नहीं सकता। अगर कुछ कहा जायगा तो अपनी भी जान के लाले पड़ जायँगे।

मंत्री बालक भोज को लेकर उसी रात नगर से बाहर निकल गया। एक जंगल मे पहुँचकर उसने बालक भोज को रथ से उतारा और उससे कहा—तुम्हारे चाचा ने तुम्हें मारने के लिए मुझे भेजा है।

यह कहकर मंत्री अपनी तलवार खींचकर उस अकेले लड़के के सामने खड़ा हो गया। भोज बिलकुल नहीं डरा। वह चुपचाप खड़ा रहा। उसने मंत्री से कहा—आपका इसमें कुछ दोष नहीं है। आप राजा की आज्ञा पालन कीजिए, पर आप मेरी एक चिट्ठी मेरे चाचा को जाकर दे दीजिएगा।

भोज ने चिट्ठी लिखकर मंत्री को दे दी और वह मरने को तैयार हो गया। मंत्री राजकुमार का ऐसा धीरज देखकर ताज्जुब करने लगा। उसका हाथ उसे मारने को

नहीं उठा। वह भोज को लौटा ले गया। उसने उसे अपने घर में छिपा लिया और एक बनावटी सिर ले जाकर राजा के सामने पेश कर दिया। साथ ही भोज की वह चिट्ठी भी राजा को दे दी।

राजा ने चिट्ठी खोलकर पढ़ी। उसमें एक श्लोक लिखा था, जिसका अर्थ यह है—"महाराजा रामचन्द्र और धर्मराज युधिष्ठिर के साथ जब यह ज़मीन और राज्य न गये, तो देखना है तू इन्हें कैसे छाती पर रख ले जायगा!"

बालक भोज की चिट्ठी के ये वाक्य पढ़कर राजा का जी भर आया। वह 'हाय हाय' करके पछताने लगा। सिर पीटते हुए उसने कहा—हाय हाय! ऐसे होनहार बालक को मैंने मरवा डाला!

मंत्री उसे बार-बार समझाने लगा, पर राजा को धीरज न हुआ। अन्त में वह तलवार से अपना गला काटने को तैयार हो गया। वह कहने लगा—अब मैं भी ज़िन्दा न रहूँगा।

जब वह किसी तरह न माना, तब मंत्री ने हाथ जोड़कर कहा—महाराज, मैं आपके कोमल स्वभाव को

जानता था। इसी से मैंने भोज को नहीं मारा है। मैंने एक नक़ली सिर आपको दिखा दिया है।

यह सुनकर राजा ख़ुशी से उछल पड़ा। उसने मंत्री को गले लगा कर कहा—भाई, अब भोज को जल्दी ले आओ।

मंत्री भोज को ले आया। राजा ने बालक के पैरों पर गिरकर उससे क्षमा माँगी और उसी समय भोज को राजा बनाकर आप वन को चला गया।

देखा, विद्या की कितनी महिमा है? एक श्लोक ने बालक भोज को मरने से बचाकर राजा बना दिया!

सवालात

१—राजा भोज को क्यों मारना चाहता था?

२—भोज की बातों का मन्त्री पर क्या असर पड़ा?

३—भोज राजा कैसे बना?

पाठ ४०

बालचर

लड़को! बालचर किसे कहते हैं, यह तुममें से सभी को मालूम है। बहुत मुमकिन है, तुममें से बहुतों ने मेलों

आदि में बालचरों को देखा भी हो, और कोई ताज्जुब नहीं, अगर तुममें से ख़ुद ही कोई बालचर हो। तुममें से जो बालक बालचर होंगे उन्हें मालूम होगा कि बालचरों का पहला उद्देश्य सेवा करना है। दीन-दुखी लोगों की सेवा के लिए ही बालचर काम किया करते हैं। इसी से उनका दल सेवा-दल कहलाता है।

लेकिन शायद तुममें से बहुतों को यह बात मालूम न होगी कि इस दल को किसने जन्म दिया है और बालकों को बालचर बनाने की क्यों आवश्यकता पड़ी है; पहले-पहल कब और कहाँ इस दल ने काम किया था और इससे क्या-क्या लाभ हैं? यहाँ हम तुम्हें ये ही सब बातें बतलाते हैं।

सन् १९०० ई० में दक्षिण अफ्रीका में लड़ाई छिड़ी हुई थी। उसी वक्त एक अँगरेज़ ने, जिनका नाम सर राबर्ट बेडेन पावेल था, यह सोचा कि क्या लड़ाई के मैदान में छोटे-छोटे लड़के भी कुछ मदद कर सकते हैं? यही देखने के लिए उसने बालचरों का एक दल तैयार किया। उस दल ने लड़ाई के मैदान में बड़ी बहादुरी के साथ

अपना काम जारी रक्खा। उससे अँगरेज़ों की सेना को बड़ी मदद मिली। उसी वक़् से नगर-नगर में बालचरों के दल तैयार किये गये। अब तो वे न सिर्फ़ लड़ाई में ही सेवा का काम करते हैं, बल्कि हर मौक़े पर लोगों को तकलीफ़ से बचाने के लिए तैयार रहते हैं। कहीं आग लगी, कहीं बाढ़ आई, तो बालचर लोगों की मदद को दौड़ पड़ते हैं। यही नहीं, वे अपनी ज़रा भी परवाह न करके लोगों को आफ़त से बचाने के लिए झट मे कूद पड़ते हैं।

पहले तेरह से उन्नीस साल तक के लड़के ही बालचरों में भरती किये जाते थे, पर अब सात से बारह साल तक के लड़के भी लिये जाते हैं। सात से बारह साल के लड़कों ने भी कहीं-कहीं कमाल का काम किया है। आजकल उम्र के मुताबिक़ इनके दो भाग कर लिये गये हैं।

१—छोटी उम्र अर्थात् सात से बारह साल तक के लड़के शेरबच्चे कहलाते हैं।

२—आगे १९ साल तक की उम्र के बालकों को बालचर कहते हैं।

जिस तरह बड़ी-बड़ी सेनायें टुकड़ियों में बँटी रहती हैं, उसी तरह यह सेवा-दल भी छोटी-छोटी टुकड़ियों में



बालचर

बाँट दिये जाते हैं। हर एक सेवा-दल कई दलों में बँटा होता है। दल की भी टुकड़ियाँ की जाती हैं। दल की

किसी एक टुकड़ी को टोली कहते हैं। हर एक टोली में एक सरदार रहता है। वह टोली का नायक कहलाता है।

हमारे देश में आजकल हज़ारों की तादाद में बालचर और शेरबच्चे मौजूद हैं। दिनोंदिन उसकी तादाद बढ़ती चली जा रही है। सभी छोटे लड़के बालचरों में अपना नाम लिखा रहे हैं। जहाँ अभी तक सेवा-दल नहीं बने हैं, वहाँ बन रहे हैं। हमारे यहाँ के बालचर भी बड़ी मुस्तैदी से काम करते हैं। वे जानते हैं कि बालचर बनना सिर्फ़ तमाशा या खेल नहीं है। उससे देश और देशवासियों की बहुत बड़ी सेवा होती है। साथ ही जो लड़के बालचर बनते हैं वे दिल-बहलाव के साथ-साथ बहुत सी अच्छी बातें सीख जाते हैं।

सचाई बालचरों के लिए सबसे ज़रूरी है। निर्बलों, अनाथों और औरतों की सेवा उनका पहला काम है। इस वास्ते हर एक बालचर ये सब बातें सहज ही में सीख जाता है। बालचरों के बराबर देश-सेवा का भाव और बहुत कम लड़कों में होता है। बालचर और बहुत सी ऐसी बातें भी जानता है जो और लड़कों को

मालूम नहीं होतीं। बालचरों को ख़ास तौर से बहुत सी काम की बातें बतलाई जाती हैं; जैसे आग बुझाना, बहते हुए ख़ून को रोकना, जल और आग में से लोगों को निकालना इत्यादि। इन्हीं सब गुणों के कारण बालचर सब जगह अपना काम आसानी से निकाल सकता है। जहाँ बड़े-बड़े हिम्मतवर जाने में हिचकते हैं, उन जगहों में बालचर शेर की तरह पहुँच जाता है। वह अपना काम करने से कभी नहीं हिचकता।

लड़को! अगर तुम लोग अभी तक बालचर नहीं बने हो, तो भी तुम उनकी तरह सचाई और दूसरों की मदद करना सीखो। यही सबसे बड़ी आदमियत है।

सवालात

१—बालचर होना लड़कों के लिए क्यों ज़रूरी है?

२—सर राबर्ट बेडेन पावेल कौन थे? उन्होंने क्या काम किया?

३—बालचरों में कौन से गुण होते हैं?

४—नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बताओ—

आदमियत, नायक, बालचर।

५—नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो:—

बालचर ऐसे-ऐसे काम कर सकता है जिसको..... ......। अगर बेडेन पावेल बालचरों से काम न लेने तो·········।

पाठ ४१

खेतों का दूर-दूर होना

सीताराम एक पढ़ा-लिखा किसान है। वह कई साल से शहर में पढ़ने के लिए गया हुआ था। वहाँ उसने कई इम्तहान पास किये थे। उसके बाद वह किसी दफ़्तर का बाबू हो गया था। उसको महीने में पचास रुपये मिलते थे। लेकिन फिर भी वह कुछ बचा न सकता था। महीने में पचास रुपये पाने पर भी वह ग़रीब था!

नौकरी में जैसा उसे बताया जाता था वैसा ही करना पड़ता था। यही बात सीताराम को पसन्द न थी। वह .खुद भी हर काम में अपनी अक़्ल लगाना चाहता था। उसकी यह आदत उसके अफ़सर को पसन्द न थी। सीताराम से उसकी बनती न थी। इसी से सीताराम नौकरी छोड़कर गाँव को लौट आया। सब लोगों ने उसे ऊँच-नीच सुझाकर कहा—लौट जाओ, पर नौकरी न छोड़ो। पचास रुपया महीना तो गाँव में बड़े से बड़े काश्तकार को नहीं पड़ता है।

सीताराम ने किसी की बात न मानी। उसने कहा—मैं अब नौकरी तो न करूँगा चाहे उसमें हज़ार रुपये महीने भी क्यों न मिलें। नौकरी ग़ुलामी होती है और ग़ुलामी में आदमी, आदमी नहीं रह जाता।

उसी समय से सीताराम ने गाँव में खेती शुरू कर दी। उसने चार-पाँच खेत लिये; बैलों की एक गोई ख़रीदी। हल वह शहर से नई तरह का ले आया। गाँव के किसान जिस हल से जोतते हैं वह हल उसे पसन्द नहीं था। बीज और खाद भी उसने बड़ी लिखा-पढ़ी करके दूर-दूर से मँगाई।

वह बिलकुल नया किसान था, लेकिन पहले ही साल में उसके खेतों में ऐसी फ़सल हुई, जैसी गाँव में कभी किसी किसान के यहाँ न हुई थी। उसका घर अनाज और रुपयों से भर गया। पहले जो लोग उसे नौकरी पर लौट जाने की सलाह देते थे, उनसे उसने कहा—देखिए भाई साहब! नौकरी इसके सामने क्या चीज है! जब मैं महीने में पचास रुपये पाता था तो खाने-पीने से ही कुछ नहीं बच पाता था। पर अब, आप देख ही रहे हैं कि, एक साल में ही घर

अनाज से भर गया है। एक भैंस भी खरीद ली है। घी-दूध किसी की कमी नहीं है।

यह सब कुछ होते हुए भी सीताराम के सामने एक बड़ी कठिनाई थी। उसे जो खेत मिले थे, वे सब दूर-दूर थे। एक गाँव के इस छोर पर था, तो दूसरा उस छोर पर। उसी के नहीं, सभी के खेत इसी तरह कोई कहीं, कोई कहीं थे। सीताराम को उनकी रखवाली और सिंचाई आदि में बड़ी परेशानी उठानी पड़ती थी और फिर भी उसका फल उम्मीद से कम ही होता था। बहुत कुछ सोचने के बाद उसने अपने मन में कहा—अगर सब लोगों के खेत पास-पास होते तो बड़ा अच्छा होता। उनके दूर-दूर होने से सभी को तकलीफ़ होती है।

इस बात का ज़िक्र उसने और लोगों से भी किया। लोग पहले ही जान गये थे कि सीताराम बहुत होशियार आदमी है। इसी लिए सब लोगों ने उसकी बात ध्यान से सुनी। सीताराम ने उन्हें समझाया—खेतों के दूर-दूर होने से खर्च और मेहनत ज़्यादा होती है, उनकी

देख-रेख में वक्त भी बहुत जाता है और फिर फल जितना चाहिए, उतना नहीं होता।

उसने नीचे लिखे नुक़सानों को भी उन्हें अच्छी तरह समझा दिया:—

१—ऐसे खेतों में आने-जाने में बहुत सा समय बेफ़ायदा चला जाता है।

२—उनकी रखवाली करने में कठिनाई होती है।

३—उनकी सिंचाई में बार-बार पानी लाने से खर्च भी ज़्यादा पड़ता है और मेहनत और परेशानी भी होती है।

४—इस तरह किसानों के आपस के झगड़े भी बहुत बढ़ते हैं। कोई किसी की ज़मीन दबा लेता है; कोई किसी की मेंड़ काट देता है।

५—बहुत सी मेंड़ें बनने में कुछ-न-कुछ ज़मीन भी बेकार जाती ही है।

किसान उसकी बात समझ गये। उन्हें मालूम हो गया कि छोटे-छोटे टुकड़ों में ज़मीन का बाँट रखना ठीक नहीं है। इसके सिवा किसी का एक खेत गाँव के पूरब हो, दूसरा पच्छिम में, यह भी ठीक नहीं है। क्या ही

अच्छा हो कि सब लोग किसी तरह अपने-अपने खेत एक ही जगह कर लें।

सीताराम की सलाह से बहुत से लोगों ने आपस में तय करके अपने-अपने खेत एक चक में कर लिये। अगर किसी के खेत की हैसियत चार आदमियों ने ज़्यादा बतलाई तो उसे मतालबा दिला दिया गया।

इस नये इन्तज़ाम से सभी को बड़ा फ़ायदा हुआ है। गाँव के जिन लोगों ने पहले इन बातों पर ध्यान नहीं दिया था, वे भी अब सीताराम की बात मानने को तैयार हैं।

सवालात

१—सीताराम ने क्यों नौकरी छोड़ दी ?

२—उसको खेती में क्यों अधिक लाभ हुआ ?

३—दूर-दूर खेत होने से क्या हानि है ?

४—सीताराम ने किसानों को क्या शिक्षा दी ?

पाठ ४२

ज़िला-बोर्ड

लड़को, तुम्हारे गाँवों के पास से जो सड़कें या रास्ते जाते हैं, उनकी हर साल मरम्मत होती है। अगर उनकी मरम्मत बन्द हो जाय तो वे सड़कें कुछ ही दिनों में ख़राब हो जायँ। तुम जिस स्कूल में पढ़ने आते हो उसकी भी मरम्मत की ज़रूरत पड़ती है। क्या तुम जानते हो कि इन सड़कों, स्कूलों और शफ़ाख़ानों की मरम्मत कौन कराता है, कौन उनका इन्तज़ाम करता है? इन सबका इन्तज़ाम ज़िला-सभायें (डिस्ट्रिक्टबोर्ड) करती हैं।

हमारे देश में शहर बहुत ही कम हैं। ज़्यादा तादाद गाँवों की ही है। सौ में नब्बे से ज़्यादा आदमी गाँवों में ही रहते हैं। खेती करके ही वे अपनी गुज़र चलाते हैं। ऐसा कोई ज़िला नहीं है, जिसमें सैकड़ों गाँव न हों। हर एक ज़िले में उसके तमाम गाँवों की तरफ़ से एक ज़िला-सभा होती है, जिसे अँगरेज़ी में डिस्ट्रिक्टबोर्ड कहते हैं। इस सभा का काम होता है कि वह अपने तमाम गाँवों का इन्तज़ाम करे। वह गाँवों के लोगों की सहूलियत

का ख़्याल करके सड़कें बनवाती, स्कूल खोलती और ग़रीब लोगों की दवा करने का इन्तज़ाम करती है।

डिस्ट्रिक्टबोर्ड में किसानों और ज़मीन्दारों के चुने हुए सभासद् रहते हैं। वही तमाम बातों को तय करके हुक्म देते हैं, और उसी के मुताबिक़ इन्तज़ाम किया जाता है। इन सभासदों के चुनाव के लिए पूरा ज़िला कई हल्क़ों या सर्किलों में बाँट लिया जाता है। हर एक हल्क़ा या सर्किल में बहुत से गाँव रहते हैं। उन गाँवों के रहनेवाले अपने-अपने हल्क़े से सभासद् चुनकर भेजते हैं।

सब लोगों को ज़िला-सभाओं के लिए सभासद् चुनने का अधिकार नहीं होता। कुछ ख़ास हैसियत के लोग ही चुनाव में राय (वोट) दे सकते हैं। इस तरह सब हल्क़ों से कुछ लोग डिस्ट्रिक्टबोर्ड के सभासद् चुनकर भेजे जाते हैं। वे ख़ुद भी कुछ लोगों को अपने साथ काम करने के लिए चुन लेते हैं। ज़िला-सभाओं में कुछ सभासद् सरकार अपनी तरफ़ से भी चुनकर भेजती है। ये सब सभासद् मिलकर अपना सभापति और उपसभापति चुन लेते हैं। इस तरह एक दफ़ा के चुने हुए सभासद् तीन बरस

तक काम करते हैं। तीन साल के बाद फिर से चुनाव होता है। पुराने सभासद् (मेम्बर) निकल जाने पर उनकी जगह और दूसरे लोग भी पहुँच जाते हैं। जिन्हें चुनाव में राय देने का अधिकार होता है, उनमें से कोई भी डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड की मेम्बरी के लिए खड़ा हो सकता है। सभी सभासद् बिना किसी तरह के वेतन के काम करते हैं।

आम तौर से इस सभा के काम ये हैं:—

१—नई सड़कें बनाना और पुरानी सड़कों की मरम्मत करवाके उन्हें ठीक रखना।

२—लड़कों के पढ़ने के लिए नये स्कूल खोलना और पुराने स्कूलों का इन्तज़ाम कराना।

३—जगह-जगह अस्पताल खोलकर लोगों के लिए दवा देने का इन्तज़ाम करना।

४—गाँवों में जो बाज़ार लगते हैं, उनका प्रबन्ध करना। नदियों पर पुल बनवाना तथा इसी तरह के और तरीक़ों से ज़िलों के रहनेवालों की सहूलियत का इन्तज़ाम करना।

लड़को ! यह सब जानकर तुम पूछ सकते हो कि इन सब कामों के लिए उस सभा के पास रुपया कहाँ से आता है; क्योंकि खेतों का लगान वग़ैरह तो सीधा सरकारी ख़ज़ाने में चला जाता है। अच्छा सुनो, डिस्ट्रिक्टबोर्ड की आमदनी की मदें ये हैं :—

१—नदी, सड़क, बाज़ार और घाट वग़ैरह का महसूल।

२—ख़ास-ख़ास कामों के लिए मिलनेवाली सरकारी सहायता।

३—यह सभा लोगों पर ज़रूरत के मुताबिक़ कुछ कर (टैक्स) भी लगा लेती है।

४—लगान के साथ किसानों से कुछ रक़म ज़्यादा वसूल की जाती है। वह इसी बोर्ड के नाम जमा होती है।

सवालात

१—डिस्ट्रिक्टबोर्ड किसे कहते हैं ?
२—डिस्ट्रिक्टबोर्ड के हाथ में क्या-क्या काम रहते हैं ?
३—ख़र्च के लिए बोर्ड में रुपया कहाँ से आता है ?
४—चुनाव कैसे होता है ?

पाठ ४३

गंगा और उसकी नहर

हिन्दुस्तान में बहुत सी नदियाँ हैं। गंगा उन सबसे प्रसिद्ध नदी है। यह हिमालय के गंगोत्री पहाड़ से निकलती है। यह हमारे सूबे में से होकर बहती है। हिन्दू लोग गंगा को बहुत पवित्र नदी मानते हैं। हिन्दुस्तान के कोने-कोने से लोग उसमें नहाने के लिए आते हैं।

गंगा के जल से हज़ारों बीघे की ज़मीन सींची जाती है। इसके किनारे पर .खूब हरे-भरे खेत दिखाई पड़ते हैं। बड़े-बड़े नगर जितने गंगा नदी के किनारे बसे हैं, उतने और किसी नदी के किनारे नहीं हैं। इस नदी में, जगह-जगह पर, बहुत सी छोटी-बड़ी नदियाँ मिलती हुई चली गई हैं। गंगा कलकत्ते के पास जाकर समुद्र में मिल जाती है। इसके किनारे बसे हुए बड़े-बड़े और मशहूर नगरों में हरिद्वार, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, पटना और कलकत्ता मुख्य हैं।

हरिद्वार हिन्दुओं का तीर्थ है। यहाँ बड़े-बड़े मेले लगते हैं। यहाँ की आब हवा बहुत अच्छी है। कानपुर तिजारती शहर है। इसमें कपड़ा बुनने के बहुत से पुतली घर, चमड़े के कारखाने और तेल-शक्कर आदि बहुत सी चीज़ों के तैयार करने की मशीनें और उनकी मिलें हैं। इलाहाबाद हिन्दुओं का तीर्थ है। इसका दूसरा नाम प्रयाग है। यहाँ गंगा-जमुना का संगम है। माघ के महीने में यहाँ संगम-स्नान का बड़ा भारी मेला लगता है। बनारस का दूसरा नाम काशी है। यह भी हिन्दुओं का एक बड़ा तीर्थ है। यह बहुत पुराना शहर है। यहाँ गंगा के किनारे बड़े-बड़े घाट और मंदिर हैं। इसमें बहुत से विद्वान् पण्डित लोग रहते हैं।

पटना बिहार के सूबे का मुख्य नगर है। यह भी बहुत पुराना, और मशहूर शहर है। इसका पुराना नाम पाटलिपुत्र है। कलकत्ता बङ्गाल का मुख्य नगर और हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा शहर है।

गंगा की वजह से इन तमाम नगरों का महत्त्व बढ़ गया है। मतलब यह है कि गंगा के होने से नगरों और गाँवों, दोनों को लाभ है। यदि गंगा नदी न होती, तो



हमारे देश का उत्तरी भाग इतना हरा-भरा और आबाद न देख पड़ता।

गङ्गा के किनारे के नगर और गाँवों को तो उससे फ़ायदा है ही, पर अब उसमें से नहरें काट-काटकर दूर तक उसका जल पहुँचाया जाता है। गङ्गा की एक बड़ी भारी नहर हरिद्वार में मायापुर के पुल के पास से निकाली गई है। यह बहुत बड़ी नहर है। इससे हज़ारों मील तक पानी पहुँचाया गया है। जहाँ-जहाँ यह नहर पहुँची है वहाँ-वहाँ ख़ूब खेती होने लगी है। वहाँ के किसान बरसात के लिए अब बैठे नहीं रहते, उन्हें थोड़ी मेहनत से ही मनमाना पानी मिल जाता है।

जहाँ से यह नहर निकलती है, वहाँ दस खम्भों का एक पुल बना है। उसमें बड़े-बड़े फाटक लगे हैं। उनके उठाने-गिराने से पानी घटता-बढ़ता है। आगे जाकर नहर की चौड़ाई कम होती गई है। इस नहर के रास्ते में कहीं-कहीं, छोटी-छोटी नदियाँ भी पड़ी हैं, जो बरसात में बड़े ज़ोर से बहती हैं। इनको बचाने के लिए कहीं नदी पर पुल बनाकर नहर उसके ऊपर से लाई गई है और कहीं नीचे

से नहर ले जाकर नदी का रास्ता ऊपर छोड़ दिया गया है।

इस नहर के बनाने में बहुत सा रुपया और मेहनत लगी है। लेकिन हर साल इससे आमदनी भी बहुत ज़्यादा हो जाती है। नहरें बनाने में सरकार को घाटा नहीं हुआ है, बल्कि आमदनी की एक मद बढ़ गई है। इस तरह नहरों से सरकार और किसान, सभी का फ़ायदा हुआ है।

नहरों से थोड़ा-बहुत नुक़सान भी होता है। जहाँ नहर पहुँचती है, वहाँ पहले की अपेक्षा पानी की सतह ऊँची हो जाती है। उसकी वजह से फ़सली बुख़ार का ज़ोर ज़्यादा हो जाता है। लेकिन उससे फ़ायदे इतने ज़्यादा हैं कि उस छोटे से नुक़सान की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

सवालात

१—गङ्गा कहाँ से निकलती और कहाँ गिरती है ?

२—उसके किनारे कौन-कौन से बड़े शहर हैं ?

३ गङ्गा से हमको क्या-क्या लाभ होते हैं ?

४—गङ्गा की नहर कहां से निकलती है, उससे देश को क्या लाभ हुआ है ?

५—महत्त्व, तिजारती और प्रयाग का अर्थ बताओ।

पाठ ४४

टोलो पहाड़ी

इस खेल का दूसरा नाम 'पत्ती बुलौवल' भी है। यह खेल अकसर रात में खेला जाता है। इस खेल को गाँवों के लड़के बहुत पसन्द करते हैं। गाँवों में ही इसके खेलने की अधिक सुविधा भी होती है। यह खेल बड़ा ही मज़ेदार होता है। लड़के इसमें बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। इस खेल से बहुत सी काम की बातें भी मालूम हो जाती हैं।

इस खेल में किसी तरह के कोई सामान की ज़रूरत नहीं होती। इसके सिवा खिलाडियों की तादाद की भी कोई क़ैद नहीं है। जितने खिलाड़ी चाहें, इसमें शामिल हो सकते हैं। कम खिलाड़ियों में मज़ा कम आता है, इसलिए

जितने ज़्यादा खिलाडी हों उतना ही ज़्यादा आनन्द आता है। फिर भी कम से कम आठ खिलाड़ी तो होने ही चाहिएँ।

खेल शुरू करने के लिए सबकी राय से कोई एक खिलाड़ी हाथ में तिनका दबाकर थोड़ा-थोड़ा सब लड़कों से खिंचवाता है। जिस लड़के के खींचने से तिनका बाहर निकल आता है उसी को चोर मान लिया जाता है; अथवा और किसी तरीक़े से एक-एक करके सब लड़कों को निकालकर एक लड़के को अन्त में छोड़ दिया जाता है। इस तरह वही लडका चोर समझ लिया जाता है।

जो खिलाड़ी चोर हो जाता है, वह सभी खिलाड़ियों में से अपने लिए कोई अच्छा सा साथी चुन लेता है। साथी चुन लेने पर वह सब खिलाड़ियों से पूछता है कि वे क्या मँगाना चाहते हैं। सब खिलाड़ी सलाह करके आस-पास के किसी पेड़ की पत्ती लाने को कहते हैं। तुरन्त दोनों खिलाड़ी उसकी तलाश में दौड़ते हैं।

उनके जाने के बाद बाक़ी सब खिलाड़ी भागकर इधर-उधर छिप जाते हैं, या इधर-उधर दौड़ते रहते हैं। जब वे दोनों खिलाड़ी बताये हुए चिह्न को लेकर लौटते हैं तो

फिर वे दौड़ते या छिपे हुए खिलाड़ियों को छूने के लिए उनका पीछा करते हैं। वे जब तक किसी एक लडके को छू नहीं लेते तब तक बराबर उनके पीछे दौड़ते रहते हैं।

जब कोई लड़का छू जाता है तो भी सब खिलाड़ियों को मालूम नहीं होता। क्योंकि एक तो इस खेल में अकसर खिलाड़ियों की तादाद ज़्यादा होती है, दूसरे उनमें से बहुत से इधर-उधर भागते ही रहते हैं। इसलिए सब लड़कों को यह बतलाने के लिए कि एक खिलाड़ी छू गया है, वे दोनों साथी 'टीलो पहाड़ी', 'टीलो पहाड़ी' चिल्लाते हैं। उनकी आवाज़ सुनकर सब लड़के समझ जाते हैं कि उन्होंने किसी को छू लिया है। बस फिर सब लड़के उसी जगह पर आकर जमा हो जाते हैं।

सबके आ जाने पर वे दोनों लड़के अपनी लाई हुई पत्ती उन्हें दिखलाते हैं। अगर वे पत्ती ठीक न ला सके हों तो फिर उन्हीं को चोर बना रहना पड़ता है, नहीं तो जिस लड़के को उन्होंने छू लिया था, वही चोर हो जाता है। अब उसका दाँव आ जाता है और वह तमाम खिलाड़ियों में से अपने मन का साथी चुन लेता है।

पर वह पहले के दोनों साथियों में से किसी को नहीं चुन सकता, क्योंकि वे तो पहले से ही थके हुए रहते हैं।

इसी तरह जब तक लड़के चाहें, यह खेल बराबर जारी रहता है। एक के बाद एक लड़के का दाँव आना ज़रूरी नहीं होता। इस खेल में वही खिलाडी मज़े में रहता है जो ख़ूब ताक़तवर होता है और ख़ूब तेज़ दौड़ सकता है। इसी लिए कमज़ोर खिलाड़ी भी तेज़ से तेज़ दौड़नेवाले लड़के को अपना साथी चुनता है। अगर दोनों ही साथी कमज़ोर और कम दौड़नेवाले हों तो वे किसी को न छू पायें और भागते-भागते उनका कचूमर हो जाय।

इस खेल से बहुत से फ़ायदे होते हैं। सबसे बड़ा और ख़ास फ़ायदा तो यही है कि हर एक लड़का अपने लिए अच्छे से अच्छे साथी को तलाश करने में होशियार हो जाता है।

लड़को! हमारा ख्याल है कि तुम यह खेल ज़रूर ही खेलना जानते होगे। अगर तुम्हारे गाँव के लड़के अभी तक इस खेल को न जानते हों तो तुम ज़रूर ही उन्हें यह खेल

सिखा दो। यह खेल और बहुत से खेलों से अच्छा, दिलचस्प और फ़ायदेमन्द है।

सवालात

१—'टीलो पहाड़ी' से क्या लाभ है ?

२—इसे कैसे खेलते हैं ?

३—तादाद की क़ैद, कचूमर और सुविधा का मतलब बताओ और प्रत्येक से एक वाक्य बनाओ।

पाठ ४५

धन का पता

एक किसान बड़ा होशियार था। जब तक उसके बदन में ताक़त रही, तब तक वह ख़ूब अच्छी तरह से मेहनत करके अनाज पैदा करता रहा। धीरे-धीरे बुढ़ापे ने उसके शरीर को दबा लिया। उसकी काम करने की शक्ति कम हो गई। लेकिन फिर भी वह कभी हिम्मत न हारता था। बराबर कुछ न कुछ करता ही रहता था,

ि थे।

बाप की तरह न तो वे मेहनत करते थे, न खेती का कुछ ज्ञान ही रखते थे। वे इधर से उधर गाँव में घूमना ही अपना काम बनाये हुए थे।

उनके बाप को अपने लड़कों की हालत पर बड़ा अफ़सोस होता था। वह रात-दिन सोचता था कि क्या उपाय किया जाय जिससे उनको अपना काम करने की सुबुद्धि हो।

दिन भर काम में लगे रहने और रात भर लड़कों की चिन्ता में डूबे रहने से बूढ़े की तन्दुरुस्ती भी ख़राब हो गई। न तो उसे खाना पचता था और न रात को नींद आती थी। धीरे-धीरे बुख़ार ने भी आ घेरा। आख़िर वह एक दिन चारपाई पर गिर ही पड़ा। बहुत हिम्मत करने पर भी वह फिर उठ न सका।

जब उसे इतमीनान हो गया कि बस, अब उसका आख़िरी वक़्त आ गया है, तो उसने अपने सभी लड़कों को बुलाकर कहा—अब मेरे जीने की कोई उम्मीद नहीं है। मैं अब सिर्फ़ दो घड़ी का मेहमान हूँ। अभी तक मैंने एक बात तुम लोगों से छिपाकर रक्खी है।

बहुत सी आफ़तें और तकलीफ़ें आने पर भी वह बात अभी तक मैंने तुम्हें नहीं बताई थी। लेकिन अब आज मैं सब कुछ बता देना चाहता हूँ।

सभी लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। बूढ़े ने फिर कहा-मैंने बड़ी मुश्किल से एक हाँडी-भर रुपये बचा रक्खे थे। वे रुपये मैंने किसी बहुत ही बड़ी जरूरत के लिए रख छोड़े थे। वे अपने खेत में गड़े हुए हैं। तुम लोग रुपयों को खोदकर आपस में बाँट लेना।

इतना कहने पर, थोड़ी देर के बाद, बूढ़ा मर गया। सब लड़के अपने पिता की मौत पर रोने लगे।

कुछ दिन बाद जब बाप की मौत का रंज हलका हुआ तो सब लोग फावड़े लेकर खेत में पहुँचे और एक सिरे से उसे खोदकर गड़ी हुई रक़म का पता लगाने लगे। उन लोगों ने खेत का कोना-कोना खोदकर फेंक दिया, पर कहीं उस हाँड़ी का पता न चला। वे मन ही मन बहुत कुछ दुखी और निराश होकर बैठ रहे।

थोड़े दिनों के बाद बरसात आई। पानी बरसा। बाप की बताई रकम का तो कहीं पता लगा नहीं था, इस-

लिए अब कुछ न कुछ करना ज़रूरी था। यही सोचकर उन्होंने अपने उसी खेत में अनाज छींट दिया। खेत ख़ूब गहरा खोदा गया था। इसी से वह ख़ूब पानी सोखकर तैयार था। बीज पड़ते ही फ़सल ख़ूब लहलहाने लगी।

जब फ़सल तैयार हुई तो उन्हें इतना अधिक अनाज मिला कि उनका घर भर गया। उन्होंने खेत खोदने में जो मेहनत की थी उसका पूरा पूरा बदला उन्हें मिल गया। अब वे अपने बूढ़े बाप की चतुराई का मतलब समझ गये। अब वे अपनी खेतो में बराबर मेहनत करते हैं। उन्हें अब खेत में गड़ी हुई हाँड़ी की तलाश करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। अपनी मेहनत की बदौलत अब वे हर फ़सल में रुपयों से भरी एक हाँड़ी पा जाते हैं।

वही क्यों, सभी किसानों के पुरखे खेतों में एक रक़म गाड़ गये हैं। जो मेहनत से उन्हें खोदते हैं, वे पा जाते है और जो काहिली करते हैं, वे भूखों मरते हैं।

सवालात

१—बूढ़े किसान ने अपने लड़कों से क्या कहा?

२—उनके खेतों में अच्छी पैदावार क्यों हुई?

३—अगर बुड्ढा हाँड़ी न बताता तो क्या होता ?

४—'सभी किसानों के पुरखे खेतों में भारी रक़म गाड़ गये हैं' इस वाक्य को समझाओ।

पाठ ४६

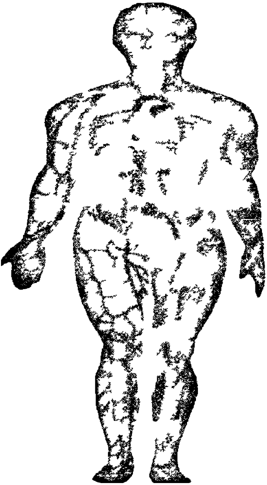
अजीब खिलौना

सभी लड़के खिलौने पसन्द करते हैं। बाज़ार में घूमते वक़्त उनकी निगाह पहले खिलौनों पर ही पड़ती है, उसके बाद मिठाई वग़ैरह खाने की चीज़ों पर। घर पर भी वे खिलौनों के साथ खेलकर जी बहलाते हैं। मिट्टी, लकड़ी और काग़ज़ के तरह-तरह के खिलौनों से लड़के ख़ूब खेलते हैं।

लेकिन इन खिलौनों में जान नहीं होती। वे अपने आप चल, फिर और बोल नहीं सकते। जानवर और चिड़ियाँ चलते, फिरते और बोलते भी हैं। मिट्टी और काग़ज़ के खिलौने सिर्फ़ उनकी नक़ल होते हैं। असल खिलौने तो जानदार खिलौने ही होते हैं। यही वजह है कि मिट्टी,

लकड़ी और कागज़ के खिलौनों के सामने लड़के जीते-जागत बिल्ली और कुत्तों को पसन्द करते हैं। लड़के असली खिलौनों के सामने नक़ली खिलौनों की तरफ़ कुछ भी ध्यान नहीं देते। तुम्हीं बताओ, तुम अपने जानदार झबरे कुत्ते के कान पकड़कर हिलाना पसन्द करोगे, या चुपचाप पड़े रहनेवाले कपड़े के बेजानदार कुत्ते के? इसी तरह जानदार बिल्लियों की दुम को बार-बार सीधा करने और उड़नेवाली चिड़ियों के परों को गिनने में तुमको कितना मज़ा आता है? शायद इन जानदार खिलौनों के सामने बेजान के खिलौनों के साथ खेलना कोई भी होशियार लड़का पसन्द न करेगा।

ऐसे बहुत कम लड़के होंगे जो जानवरों का हाल जानने के लिए जितने तैयार रहते हैं, अपना, अपने शरीर का, हाल जानने के लिए भी उतने ही उत्सुक रहते हों। सच पूछो तो उनका शरीर सब खिलौनों से बढ़कर है। वह ऐसा अजीब खिलौना है कि उसके साथ वे खूब खेल सकते हैं। अगर सब लड़के अपने जिस्म की बाबत हर एक बात जानने की कोशिश करने लग जायँ तो उनका जी भी



खूब बहले और वे कुछ फ़ायदे की बातें भी सीख जायँ।

मामूली तौर से हमारे बदन के तीन हिस्से हैं—सिर, धड़ और हाथ-पैर। पीठ पर तुम एक तसवीर देख रहे हो। इस तसवीर में बदन के अन्दर की कारीगरी दिखाई गई है। तुम देखोगे कि ऊपर से जो जिस्म मामूली तीन हिस्सों को जोड़कर बना हुआ है वह अन्दर से कितना दिलचस्प और अजीब है। इसमें सैकड़ों हड्डियाँ, पचीसों जोड़ कितनी कारीगरी के साथ मिलाये गये हैं!

मनुष्य के ढाँचे की छाती पर तुम जो हड्डियों का एक जाल सा देख रहे हो, जानते हो, वह क्या है? वे पसलियाँ हैं। पसलियाँ पतली मुलायम हड्डियों की होती हैं। वे मामूली चोट से भी टूट जाती हैं और कोशिश करने से जुड़ भी जाती हैं। पसलियों के पीछे कंधे से कमर तक एक हड्डी है। वह रीढ़ है। रीढ़ भी बदन का बड़ा काम करती है। यही हमारी हड्डियों के इस ढाँचे को खड़ा रखती है। अगर वह टूट जाय या झुक जाय, तो शरीर का ढाँचा भी टेढ़ा पड़ जायगा।

रीढ़ के अलावा भी बदन में और बहुत सी हड्डियाँ हैं। हड्डियों का यह पंजर मांस से बिंधा रहता है। मांस के ऊपर खाल का खोल चढ़ा रहता है। वही ऊपरी चोटों से बदन की रक्षा करता है। इसके अलावा हज़ारों नसें सारे बदन में फैली हुई हैं। इन्हीं नसों के ज़रिये ख़ून तमाम बदन में दौड़ा करता है। ख़ून से ही बदन में ताक़त आती है। जिसके शरीर में जितना ज़्यादा ख़ून होता है, वह उतना ही ताक़तवर होता है।

बदन से ख़ून निकल जाने पर वह कमज़ोर हो जाता है। अगर ख़ून बराबर निकलता रहे, उसका निकलना बन्द न हो, तो आदमी ज़िन्दा नहीं रह सकता। ख़राब ख़ून होने पर आदमी बीमार हो जाता है। ख़ून की ख़राबी भी बड़ा नुक़सान पहुँचाती है।

सवालात

१—बदन के कितने हिस्से हैं ?
२—ख़ून कैसे ख़राब हो जाता है ?
३—बदन में रीढ़ की क्या जरूरत है ?
४—रीढ़ न हो तो क्या हो ?
५—नसें क्या काम करती हैं ?

पाठ ४७

सिंचाई के तरीके

पौदे के लिए जड़ें ज़मीन से ख़ुराक़ खींचती हैं। जो ख़ुराक़ जड़ें खींचती हैं, वह ज़मीन के अन्दर पानी के साथ घुली रहती है। अगर पानी न हो तो पौदों को भोजन ही न मिले। पानी खेती के लिए बहुत आवश्यक है।

पानी खेतों को तीन तरह से मिलता है—आकाश से, पृथ्वी पर से और पृथ्वी की सतह के नीचे से। आकाश से जो पानी मिलता है वह वर्षा, कुहरा, ओस आदि के रूप में आता है। नदी, नहर और तालाब आदि से जो पानी मिलता है, वह पृथ्वी पर से आता है; और कुओं से या ज़मीन की नमी से जो पानी मिलता है वह पृथ्वी के नीचे से आता है।

आकाश से अकसर इतना पानी नहीं मिलता कि खेतों का, पूरी तरह से, काम चल सके। इसलिए किसान को तालाब, नहर, नदी और कुओं से पानी

लेने की ज़रूरत पड़ती है। सिंचाई के लिए कब कितना पानी खेत में पहुँचाना चाहिए यह किसान लोग अच्छी तरह जानते हैं। ज़मीन और जिन्स की क़िस्म के अनुसार भी पानी का परिमाण कम ज़्यादा हो जाता है। इसलिए सभी खेतिहरों को सिचाई की ज़रूरत पड़ती है और वे किसी न किसी तरीक़े से खेत में पानी ज़रूर पहुँचाते हैं।

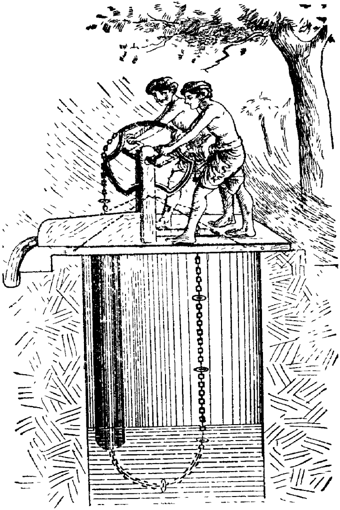
अपने यहाँ आम तौर से या तो आदमी ख़ुद ही पानी निकालते हैं या बैलों के द्वारा। ख़ुद पानी निकालने में वे दो-तीन तरीक़ों से काम लेते हैं। जैसे बेंड़ी, ढेंकली और नालियाँ काटकर। जब पानी मामूली ऊँचाई पर ले जाना होता है तो बेंड़ी से काम लिया जाता है। बेंड़ियाँ बाँस की बिनी हुई होती हैं। उनमें इधर-उधर रस्सी बाँधकर फिर उनसे पानी उलीचते हैं। इस तरह मेहनत तो पड़ती है, पर पानी मिलने की सुविधा हो तो इस तरीक़े से सिंचाई अच्छी होती है। इसके लिए मज़बूत आदमियों की बहुत ज़रूरत पड़ती है। कमज़ोर आदमी बेंड़ी में अच्छी तरह काम नहीं दे सकते।

ढेंकली का रिवाज ज़्यादातर नदियों के किनारे, कुछ ऊँचे किनारोंवाले तालाबों पर या उन स्थानों में है



बेंटी

जहाँ कुओं में बहुत ही थोड़ी गहराई पर पानी मिल जाता है। इससे पानी बहुत थोड़े परिमाण में निकलता है।



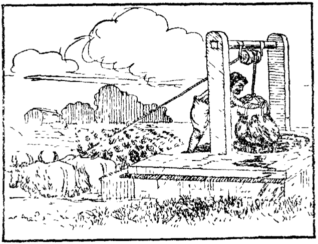
इसका प्रचार बहुत पुराने ज़माने से चला आ रहा है। आज-कल इसकी जगह पर चैनपम्प बहुत अच्छा काम करते हैं। ढेंकली की जगह पर ये पम्प मज़े से लगाये जा सकते हैं। इनसे पानी ख़ब मिल सकता है। चैनपम्प आदमी के चलाने के भी होते हैं और बैलों के भी। आदमी से चलनेवाले पम्प में दो आदमी लगते हैं।

जहाँ नहर-बम्बे वग़ैरह हैं, वहाँ सिंचाई में बहुत थोड़ी मेहनत करनी पड़ती है। सिर्फ़ नालियाँ काटकर पानी खेतों में पहुँचाया जा सकता है।

जहाँ बैलों से पानी निकाला जाता है वहाँ चरसा या पुर और रहँट आदि से काम लेते हैं। चरसा या पुर चमड़े के बने हुए बड़े-बड़े डोल से होते हैं। कुएँ के ऊपर एक ढालू पैंड़ी बना ली जाती है, उसी पर चढ़-उतरकर बैल पानी खींचते हैं। इस तरीक़े से पानी निकलता तो काफ़ी है, पर बैलों को बहुत मेहनत पड़ती है।

रहँट एक बड़ा भारी पहिया होता है। इसको कुएँ के मुँह पर लगा देते हैं और चरखी के ऊपर कटोरों या डोलों की एक माला रहती है। जब बैल चरखी घुमाते हैं, तब

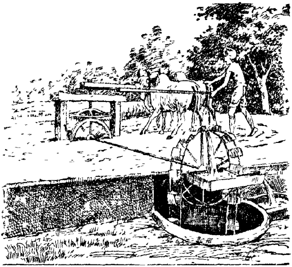
ढोल बारी-बारी से भरते और निकलते जाते हैं। ढोलों की माला और चरखी आदि दुरुस्त रखने में बड़ी मेहनत पड़ती है।



पुर

छोटे-छोटे खेतों की सिंचाई के लिए ऊपर गे कई तरीके काम में लाये जा सकते हैं। लेकिन जिनके पास ज़मीन बहुत हो, उन्हें तो पम्पों से ही काम लेना चाहिए। आजकल तो बहुत तरह के पम्प बाज़ार में

मिलते हैं। कुएँ चाहे जितने गहरे हों, पम्पों के द्वारा पानी आसानी से ऊपर चढ़ाया जा सकता है।



रहँट

जहाँ पानी निकालने के लिए नये-नये यन्त्र लगाये जायँ, वहाँ उन्हें पानी पहुँचाने के लिए कुएँ भी अच्छे होने चाहिएँ। पम्पों के लिए ज़्यादातर पातालफोड़ कुएँ दरकार होते हैं। वही पम्पों को काफ़ी पानी दे सकते हैं। मामूली कुएँ पम्प को पानी नहीं दे सकते। पातालफोड़ी

कुओं में पानी की कमी नहीं रहती। वे इतनी गहराई तक खोदे जाते हैं कि पानी के सोते फूट पड़ते हैं। इनसे जितनी ज़रूरत हो, उतना पानी निकाला जा सकता है। जब इस तरीक़े से नालियों द्वारा पानी खेतों में पहुँचाया जाता है तब एक ही कुएँ से जो काम निकलता है वह दस-बीस कुओं से भी नहीं निकल सकता। एक बार इसमें कुछ रुपये खर्च कर देने से फिर खेतों की उपज बहुत बढ़ जाती है।

सवालात

१—पौदों के लिए पानी क्यों ज़रूरी है ?

२—किन तरीक़ों से खेत सींचे जा सकते हैं ?

३—पातालफोड़ी कुएँ क्या है ?

४—रहँट कैसा होता है ?

पाठ ४८

सर सैयद अहमद

सर सैयद अहमद का जन्म एक बड़े घराने में हुआ था। उनके पुरखे शाहजहाँ के ज़माने में हिन्दुस्तान में आये थे। वे लोग शाही दरबार में रहे थे। वहाँ

उन्होंने इज्ज़त पाई थी, वहीं नाम किया था। उनके बाप-दादे सभी ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर रहे थे।

सर सैयद के पिता का नाम मीर तक़ी और माँ का अज़ीज़ुन्निसाँ बेगम था। पिता बड़े मशहूर आदमी थे। माँ भी ख़ूब पढ़ी-लिखी और होशियार थीं। सर सैयद अहमद का जन्म दिल्ली में हुआ था। बचपन में ही उनके पिता मर गये। दरबार से उन्हें जो मदद मिलती थी, वह भी बन्द हो गई। उनकी माँ ने उस हालत में भी धीरज नहीं छोड़ा। बड़ी-बड़ी मुसीबतें सहकर भी उन्होंने सर सैयद को पाल-पोसकर बड़ा किया और उन्हें अरबी फ़ारसी पढ़ना सिखाया।

सर सैयद अहमद की अवस्था अभी अठारह बरस की ही थी कि उन्होंने दिल्ली में ईस्ट-इंडिया-कम्पनी की नौकरी कर ली। वहाँ रहते वक्त बड़ी मेहनत से उन्होंने एक किताब लिखी। पढ़ने-लिखने का उन्हें बड़ा शौक़ था। उसके बाद ही वे विलायत की रायल-एशियाटिक-सोसाइटी के सभासद चुने गये। रायल-एशियाटिक-सोसाइटी विद्वानों की एक सभा का नाम है।

इसके कुछ ही समय बाद उनकी बदली बिजनौर को हो गई। उन्ही 'दिनो लोगों ने अँगरेजी सरकार के ख़िलाफ़ ग़दर कर दिया था। इन दिनों में सर सैयद अहमद ने अगरेजी सरकार को बहुत मदद पहुँचाई थी।



उन्होंने बहुत से अँगरेजों और उनके स्त्री-बच्चों को मरने से बचा लिया था।

सर सैयद अहमद ने जिस तरह बेकसूर अगरजो को बागियों से बचाया था उसी तरह उन्होंने बहुत से

बेक़सूर हिन्दुस्तानियों को भी सरकार से कहकर छुड़ा दिया था। जब पूरी तरह से ग़दर दब गया तो सर सैयद अहमद की सेवाओं के बदले सरकार उन्हें डेढ़ लाख आमदनी का एक बड़ा सा ताल्लुक़ा देने लगी, पर उन्होंने उसे लेने से इसलिए इनकार कर दिया; क्योंकि वह ताल्लुक़ा उनके एक हिन्दुस्तानी भाई का ही था। सर सैयद के इस त्याग से सरकार और देश की जनता, दोनों की नज़रों में उनका मान बढ़ गया। इसके बाद उन्होंने सरकार और हिन्दुस्तानियों के बीच के भेद-भाव को दूर करने की बड़ी कोशिश की।

सर सैयद ने इसलामी समाज के लोगों को शिक्षित करने में कुछ उठा नहीं रक्खा। वे जब सोचते थे कि पढ़ने-लिखने में मुसलमान लोग बहुत पिछड़े हुए हैं, तो उन्हें बड़ा रंज होता था। दक़ियानूसी विचारों को दूर करने के लिए उन्होंने ग़ाज़ीपुर में एक विज्ञान-सभा क़ायम की थी। इस सभा की तरफ़ से बहुत से अच्छे-अच्छे अँगरेज़ी ग्रंथों का अनुवाद उर्दू में हुआ था। इसी तरह हिन्दुस्तानी लेखकों की किताबों का अनुवाद अँगरेज़ी

में कराने के लिए भी एक सभा उन्होंने बड़ी मेहनत से क़ायम की थी।

यही नहीं, क़रीब डेढ़ साल तक के लिए सर सैयद अहमद विलायत भी गये थे। वहाँ उन्होंने विलायत के विश्वविद्यालयों को देखा था। जब वे लौटे तो उनकी यह इच्छा हुई कि वैसा ही एक विश्व-विद्यालय अपने देश में भी खोला जाय। इसी इरादे से उन्होंने अलीगढ़ में एक मोहमेडन-एँग्लो-ओरियंटल स्कूल क़ायम किया। छः साल बाद वही स्कूल कालेज बन गया और वहाँ एम० ए० तक की पढ़ाई होने लगी। अब तो सचमुच वह एक बहुत मशहूर विश्व-विद्यालय हो गया है। वहाँ हज़ारों लड़के शिक्षा पाते हैं।

धीरे-धीरे सर सैयद अहमद का मान बढ़ता ही गया। सरकार भी बड़े-बड़े मामलों में उनकी सलाह लेना ज़रूरी समझती थी। वे लाट साहब की सभा के सभा-सद्द बनाये गये थे और जब शिक्षा-कमीशन तथा पब्लिक सर्विस कमीशन ने अपनी जाँच शुरू की थी तो वे भी उनके सभासद्द थे। इस तरह सभी ख़ास-ख़ास कामों

में उनका हाथ बराबर रहता था। कुछ पुराने ख़्याल के मुसलमान उनके विरोधी भी थे, लेकिन उनका उन्होंने कभी ख़्याल नहीं किया और न उनकी वजह से उन्होंने कभी अपने काम को बन्द किया। मरने के दस साल पहले उन्हें सरकार ने 'सर' की उपाधि दी थी। अस्सी साल की उम्र में उनका देहान्त हुआ। अलीगढ़ कालेज की मसजिद में उनकी क़ब्र बनी हुई है।

सवालात

१—सर सैयद अहमदख़ाँ कौन थे ?

२—उन्होंने कौन-कौन से बड़े काम किये थे ?

३—उन्होंने मुसलमानों की शिक्षा के लिए क्या उपाय किया ?

४—रायल-एशियाटिक-सोसाइटी, सभासद्, दक़ियानूसी विचार और विश्वविद्यालय के अर्थ बताओ।

५—'धीरज' का शुद्ध रूप क्या है ?

———

पाठ ४६

समझदार सारस

तालाब के किनारे, खेत में, सारसों की एक जोड़ी रहा करती थी। वहीं उनके बच्चे भी रहते थे। बच्चे अभी छोटे ही थे कि फ़सल पकने पर आ गई। इस कारण सारसों को बड़ी फ़िक्र हुई। वे सोचने लगे कि अब शीघ्र ही किसान फ़सल की कटाई शुरू कर देंगे। अब बच्चों को लेकर वहाँ रहना ठीक नहीं। लेकिन बड़ी आफ़त यह थी कि बच्चों ने अभी उड़ना नहीं सीखा था। वे दूसरी जगह नहीं ले जाये जा सकते थे।

इसलिए सारस जब कहीं बाहर चुगने को जाते थे तो वे अपने बच्चों से कह जाते—देखो, हम लोगों के लौटने से पहले ही अगर किसान यहाँ आये तो तुम उनकी बातचीत ज़रूर सुनते रहना। उनकी बातें मालूम होते रहने पर हम कुछ न कुछ उपाय निकालने का यत्न कर लेंगे।

इसी तरह कई दिन गुज़र गये। एक दिन जब सारस चारे की तलाश में गये हुए थे, उसी वक्त खेत का

मालिक खेत देखने आया। खेत के चारों तरफ़ घूम-कर वह कहने लगा—अब तो फ़सल पक गई है। अब उसे जल्दी से जल्दी कटवा लेना चाहिए। अच्छा, चलकर आज गाँव के लोगों से कहूँगा, वे तुरन्त काट-कूटकर रख देंगे।

खेतवाला चला गया। शाम को सारस लौटकर आये। उनके बच्चे किसान की बातें सुनकर बहुत डरे हुए थे। उन्होंने दौड़कर अपने माँ-बाप से सारा हाल कह सुनाया और कहा—अब जल्दी से किसी तरह हमको कहीं दूसरी जगह ले चलो।

सारसों ने सुनकर पूछा—तुमने जो कुछ बतलाया, उसके अलावा तो उसने कुछ और नहीं कहा था?

बच्चे बोले—और तो कुछ नहीं कहा था। पर अब उसके गाँववाले आते ही होंगे।

सारसों ने बच्चों को पुचकारते हुए कहा—डरो नहीं। अभी कहीं चलने की ज़रूरत नहीं है। अगर खेत का मालिक दूसरों का भरोसा ताकता है तो अभी उसका खेत नहीं कट सकता। अभी उसके कटने में देर है।

उनका कहना सच हुआ। गाँव के लोगों ने खेत काटने में उसे मदद न दी। कई दिन बाद फिर एक बार खेत का मालिक उधर आ निकला। आकर उसने खेत देखा और कहा—अब तो अनाज बिलकुल पक गया है। अभी तक गाँव के लोगों ने कटाई का कुछ बन्दोबस्त नहीं किया। मालूम होता है, उनके भरोसे काम न चलेगा। अब अपने भाइयों को भेजकर इसे कटा लेना ही ठीक है।

यह कहकर वह चला गया। उस दिन सारसों के बच्चे और भी घबराये। शाम को उन्होंने अपने माँ-बाप से सारा हाल कहा।

इस बार भी सारसों ने यही जवाब दिया। वे बोले—अगर खेत का मालिक सिर्फ़ यही कह गया है तो अभी डरने की कोई बात नहीं। उसके भाई-बन्धुओं के अपने खेत भी पड़े हैं। पहले वे अपने खेत काट लेंगे तब उसे मदद देने आयेंगे। इसलिए अब की बार जो कुछ सुनो वह मुझे बतलाना, तब हम कुछ इन्तज़ाम करेंगे।

दूसरे-तीसरे दिन फिर खेत का मालिक आया। उसने देखा—खेत का अनाज पककर नीचे झर रहा है।

अभी तक कोई उसे काटने के लिए नहीं आया। यह देखकर उसने कहा—अब और देर करना ठीक नहीं है। दूसरों का भरोसा करने से काम चल नहीं सकता। अब सबेरा होते ही ख़ुद कटाई का काम शुरू करना पड़ेगा।

उस दिन बाहर से लौटकर सारसों ने जब यह हाल सुना तो उन्होंने कहा—हाँ, अब देर करना ठीक नहीं है। अब यहाँ से चलने का वक़्त आ गया है।

बस, उसी रात को सारसों ने बच्चों समेत वह खेत छोड़ दिया। इतने दिनों में उनके बच्चे बहुत कुछ सयाने हो गये थे। उन्हें लेकर वे दूसरी जगह जा बसे।

सवालात

१—सारस के बच्चों ने अपने माँ-बाप से किसान की क्या बातें बतलाईं ?

२—पहले सारस बच्चों को क्यों नहीं ले गया ?

३—खेत जल्दी क्यों नहीं कटा ?

४—इस पाठ से तुम्हें क्या शिक्षा मिली ?

पाठ ५०

मलेरिया

मलेरिया फ़सली बुख़ार को कहते हैं। यह बुख़ार बरसात के बाद क्वार-कातिक के महीनों में कसरत से फैलता है। इसके बीमारों की संख्या बहुत अधिक होती है। जिस रोगी को यह छोड़ भी जाता है, वह भी इतना कमज़ोर हो जाता है कि बहुत दिनों तक उसका शरीर बेकाम-सा रहता है। इस रोग से मौतें भी अधिक होती हैं।

बरसात के बाद इस बुख़ार के फैलने की वजह यह है कि उन दिनों बहुत सा कूड़ा-कचरा सड़ जाता है। पानी की बहुतायत से कहीं-कहीं मिट्टी भी सड़कर कीचड़ हो जाती है। इस तरह जो गन्दी चीज़ें सड़ जाती हैं, उनमें विष पैदा हो जाता है। मच्छड़ इन्हीं सड़ी-गली चीज़ों और कीचड़ में पैदा होते हैं। ये मच्छड़ भी विषैले होते हैं। वास्तव में मलेरिया फैलाने में यही मच्छड़ बहुत ज़्यादा मदद देते हैं। वे जब आदमियों को काटते हैं तो उनके अन्दर का विष आदमी के शरीर में

प्रवेश कर जाता है। जहाँ विष का असर हुआ कि मलेरिया का ज्वर आने लगा। इसलिए मलेरिया से बचने के लिए मच्छड़ों से बचना बहुत ज़रूरी है।

मच्छड़ अँधेरा बहुत पसन्द करते हैं। वे ऐसी ही जगह रहते हैं, जहाँ रोशनी न पहुँचती हो। जहाँ सफ़ाई रहेगी, जहाँ गन्दा पानी, सड़ी-गली चीज़ें, कूड़ा-कचरा, नमी और अँधेरा न होगा, वहाँ मच्छड़ न रहेंगे, न अंडे ही देंगे। इस वास्ते बरसात में ख़ास तौर से इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि मच्छड़ों से घर पाक रहे। कहीं कोई गड्ढा न रहने पाये, कहीं नाली या निकास में पानी न रुका रह जाय, या घर के आस-पास कूड़े-कचड़े का ढेर न पड़ा रहे। इतना प्रबन्ध कर लेने पर फिर मच्छड़ नहीं रह जाते। गाँव के सभी लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

कुओं के आस-पास गंदे पानी के तालाब रहने से भी मलेरिया फैलता है; वही पानी ज़मीन के अन्दर से छनकर कुओं में पहुँचता है। कभी-कभी कुओं के पास ही, गाँवों में लोग, कुओं से निकला हुआ पानी

रहने देते हैं। यह भी बहुत गन्दा तरीक़ा है। कुओं के पास नहाने आदि से जो पानी रहता है, उसके लिए एक नाली बना देना चाहिए, ताकि वह दूर तक बहकर निकल जाय।

मलेरिया की सबसे अच्छी दवा कुनैन है। हर एक आदमी को मलेरिया के दिनों में कुनैन का इस्तेमाल करना चाहिए। गाँववालों को मलेरिया से बचने की और भी सख़्त ज़रूरत है; क्योंकि यह उसी वक़्त ज़ोरों पर होता है जब रबी की फ़सल बोई जाती है। उस वक़्त अगर कोई किसान दो-चार दिन के लिए भी बीमार पड़ गया, तो समझ लो कि उसकी साल भर की मेहनत बेकार हुई। उस वक़्त जो स्त्री या पुरुष कुनैन खाते रहते हैं, उन्हें मलेरिया का डर नहीं रहता। कुनैन में बहुत दाम भी खर्च नहीं होता। लेकिन अगर एक बार कुछ पैसे भी खर्च करने पड़ें तो उसके लिए .खुशी से खर्च कर देना चाहिए; क्योंकि बीमार हो जाने से तो बहुत ही ज़्यादा नुक़सान हो जाता है।

इसके अलावा मच्छड़ों से बचने के लिए मसहरी भी इस्तेमाल करनी चाहिए। मतलब यह कि जिस तरह भी हो, ऐसा उपाय करना चाहिए कि मच्छड़ काटने ही न पायें। गाँवों के सब लोग अपने लिए और अपने घरवालों के लिए अलग-अलग मसहरी नहीं ख़रीद सकते। वह ज़्यादा दामों की होती है। पर कुनैन का इस्तेमाल तो सभी कर सकते हैं, इसलिए उसमें तो किसी को भी कसर न रखनी चाहिए।

मलेरिया के रोगी को भी कुनैन देना लाभकर होता है। बुख़ार के समय खाने-पीने का प्रबन्ध बहुत परहेज़ के साथ, डाक्टर की सलाह लेकर, करना चाहिए। बदपरहेज़ी से बुख़ार बिगड़ जाता है।

सवालात

१—मलेरिया क्या है ?

२—मलेरिया कैसे फैलता है ?

३—मलेरिया से बचने के लिए क्या उपाय करना चाहिए ?

पाठ ५१

बनारस की सैर

रामलाल अपने बाप के साथ रेल पर सवार होकर बनारस गया था। बनारस एक बड़ा शहर है। वह हिन्दुओं का तीर्थ है। वहाँ बहुत से मन्दिर हैं। वह गंगा के किनारे बसा हुआ है। उसका दूसरा नाम काशी है। वहाँ रोज़ बहुत से यात्री दूर-दूर से आते हैं।

रामलाल का बाप बनारस में तीर्थ करने गया था। वे दोनों स्टेशन से निकलकर बाहर आये। वहाँ बहुत से इक्के और गाड़ियाँ खड़ी थीं। रामलाल ने पहले कभी इतने इक्के-गाड़ी नहीं देखे थे।

उसके बाप ने किराये पर एक गाड़ी की। वे दोनों उस पर बैठकर धर्मशाला को चल दिये। बनारस में बहुत सी धर्मशालायें बनी हैं। तीर्थ करनेवाले यात्री उन्हीं में जाकर ठहरते हैं। रामलाल की गाड़ी पहले एक धर्मशाला के दरवाज़े पर पहुँची। उसका बाप उतरकर जगह देखने गया, पर वहाँ जगह न मिली। उसमें पहले से ही बहुत से

यात्री टिके हुए थे। इसलिए वे दूसरी धर्मशाला मे गये। बडी मुश्किल से उसमे थोडी सी जगह मिल गई।

रामलाल उतरकर भीतर गया। उसने देखा कि वहाँ सभी तरफ के लोग माजूद है। वे तरह तरह की बोलियाँ बालते है। उनकी पोशाके भी तरह तरह की है। थोडी दर आराम करके रामलाल का बाप उसे लेकर गगा नहान गया।



रामलाल ने देखा, गंगा के किनारे बड़े-बडे घाट और मकान बने हुए हैं। उन्होंने मणिकर्णिका घाट पर जाकर नहाया। उसके बाप ने बतलाया कि उस घाट पर



नहाने से बड़ा फल होता है। नहाने के बाद वे श्रीविश्व-नाथजी के मन्दिर में दर्शन करने चले। रास्ते में बहुत तंग गलियों में होते हुए वे मंदिर में पहुँचे। वहाँ बड़ी भीड़ थी। अनेक यात्री दर्शन करने आ-जा रहे थे। राम-लाल ने समझा, आज कोई बड़ा मेला है। पर दो-एक दिन में उसे आप ही मालूम हो गया कि वहाँ वैसा मेला रोज़ लगा रहता है।

शाम को रामलाल ने डोंगी पर बैठकर गंगा के किनारे-किनारे सैर की। उसने इतनी ऊँची-ऊँची इमारते देखीं, जैसी पहले कभी न देखी थीं। वह बार-बार मन में सोचता था कि वे किस तरह बनी होंगी।

दूसरे दिन बाप के साथ रामलाल बनारस का बाज़ार घूमने गया। बाज़ार में भी बहुत भीड़ थी। उसने बढ़िया-बढ़िया रेशमी कपड़ों की दूकानें देखीं। रेशमी कपड़ा बनारस में बहुत बनता है। उसने अपने लिए काठ के रँगे हुए खिलौने ख़रीदे और अपनी मौसी के लिए पीतल का एक सिंहासन। बनारस के पीतल के नक़ाशी-दार बर्तन और काठ के खिलौने मशहूर हैं।

बनारस की तरह तंग गलियाँ भी रामलाल ने पहले कहीं न देखी थीं। वह ऐसी-ऐसी सँकरी गलियों से निकला, जिनमें एक साथ तीन-चार आदमियों से ज़्यादा निकल ही न सकते थे।

जब रामलाल अपने गाँव में लौटकर आया तो उसने बनारस की तमाम बातें अपने साथियों से कह सुनाईं। उसके साथी उसकी हर एक बात सुन-सुनकर चकित होते थे। रामलाल ने उन्हें बतलाया कि विश्वनाथ के मन्दिर का ऊपरी भाग सोने से मढ़ा है और मंदिर के आँगन में रुपये बिछे हैं। वे सब उसकी बात पर बहुत ताज्जुब करने लगे, पर पीछे उन्हें मालूम हो गया कि बात ठीक है। तभी से बहुत से लड़के बनारस की सैर करने के लिए ललचा रहे हैं।

सवालात

१—धर्मशाला किसे कहते हैं ?
२—हिन्दू लोग बनारस क्यों जाते हैं ?
३—वहाँ की कौन-कौन सी चीज़ें मशहूर हैं ?

पाठ ५२

डाकघर

हबीब—मेवालाल, तुम अभी चिट्ठीरसा से क्या पूछ रहे थे ?

मेवालाल—मैं उससे पूछ रहा था कि वह यहाँ तो रोज़ चिट्ठियाँ लाता है, पर हमारे गाँव में रोज़ नहीं लाता। वहाँ वह शायद आठ दिन में एक ही दफ़ा जाता है।

हबीब—हमारे गाँव में भी डाक रोज़ नहीं जाती। छोटे गाँवों की चिट्ठियाँ इतनी नहीं होतीं कि रोज़-रोज़ डाक भेजने का इन्तज़ाम किया जाय।

मेवालाल—तो क्या डाक भेजने का इन्तज़ाम कोई और करता है ?

हबीब—और क्या, तुम समझते हो, चिट्ठीरसा ही अपनी तरफ़ से दौड़ता फिरता है ! यह इन्तज़ाम सरकार की तरफ़ से होता है। बड़े-बड़े गाँवों में डाकघर बने हुए हैं। चिट्ठीरसा तो वहाँ नौकर होते हैं। उन्हें जिसकी चिट्ठी मिलती है वे उसे ले जाकर उसके पास पहुँचा देते हैं।

मेवालाल—सरकार डाकघर क्यों बनवाती है? यहाँ डाकघर कहाँ है?

हबीब—अगर सरकार डाकघर न बनवाये तो उसका काम न चले और हम लोगों को भी बड़ी तकलीफ़ हो। एक ही चिट्ठी भेजने में बहुत-सा खर्च पड़ जाय। इस तरह चिट्ठियाँ थोड़े खर्च में पहुँच जाती हैं और बहुत से आदमी रोज़ चिट्ठियाँ भेजा करते हैं, इससे सरकार को कुछ आमदनी भी हो जाती है। सरकार को अपने पास से कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता। क्या तुमने अभी तक कोई डाकघर नहीं देखा?

मेवालाल—नहीं देखा, इसी से तो पूछ रहा हूँ।

हबीब—अच्छी बात है, आज तुम मेरे साथ चलो, मैं डाकखाने को ही चल रहा हूँ। मैं सेविंगबैंक से अपना कुछ रुपया निकालूँगा।

मेवालाल—यह सेविंगबैंक क्या होता है?

हबीब—सरकार की तरफ़ से हर डाकघर में महाजनी का काम होता है। लोग वहाँ अपना फ़ालतू रुपया जमा कर देते हैं, और जब ज़रूरत होती है तो निकाल लेते

हैं। जिसका बैंक में खाता खुला होता है, उसे एक किताब मिलती है। उसमें उसका हिसाब दर्ज रहता है। देखो यह मेरी किताब है। मैंने कई बार रुपया निकाला और कई बार जमा किया है। हर एक तारीख़ की अलग-अलग मोहरें लगी हुई हैं।—तो बताओ, क्या तुम डाकघर देखने चल रहे हो ?

मेवालाल—हाँ, ज़रूर चल रहा हूँ।—पर यह तो बताओ, वहाँ रुपया जमा करने से क्या फ़ायदा है ?

हबीब—ज़रूरत के वक्त रुपया मिल जाता है। उसके डूबने का डर नहीं रहता और उस पर कुछ सूद भी मिलता है। अगर महाजन के यहाँ रुपया जमा कर दिया जाय और उसका कारबार न चले तो फिर हाथ मलकर रह जाना पड़े। इसी से मैं कभी महाजन के यहाँ अपनी एक पाई भी नहीं रखता।

मेवालाल—अभी कितनी दूर और चलना है ?

हबीब—अब आ ही गये हैं। वह देखो, सामने जो पक्की इमारत दिखाई पड़ती है, वही डाकघर है।

मेवालाल—वह जो बँगला सा बना है ?



हबीब—हाँ, वही। वह देखो, खिड़की के पास एक आदमी खड़ा है। वहाँ पार्सल लिया जाता है। जान

पड़ता है, उसे कहीं को पार्सल भेजना है। यह देखा, चिट्ठीरसा भी इधर ही आ रहा है।

मेवालाल—पार्सल भी डाकघर से जाते हैं?

हबीब—हाँ, चिट्ठी, पार्सल, मनीआर्डर सब डाकघरों से ही आते-जाते हैं। अच्छा, अब तुम ठहरो, मैं डाक-बाबू से रुपया निकालने का फ़ार्म ले आऊँ। उसे भरने पर ही रुपया मिलता है। डाकबाबू मेरे दस्तख़त को अपनी किताब में से मिलायेंगे, तब रुपया देंगे।

हबीब लौटकर आया तो मेवालाल ने पूछा, कहिए आपको रुपया मिला?

हबीब—फ़ार्म तो भर लिया है, पर अभी रुपया नहीं मिला। वह आदमी मनीआर्डर कर रहा है, अभी दो मिनट में रुपया मिल जायगा।

मेवालाल—क्या वह आपके लिए मनीआर्डर कर रहा है?

हबीब—नहीं, वह अपने किसी रिश्तेदार के लिए रुपये भेज रहा है।

मेवालाल—तो वे आपको कैसे मिल जायँगे?

हबीब—वह भी एक फ़ार्म भरकर साथ में दे रहा है। वही फ़ार्म भेज दिया जाता है। रुपयों को भेजने की ज़रूरत नहीं। जहाँ उसका रिश्तेदार है वहीं डाकखाने में यह फ़ार्म पहुँच जायगा। वहीं से उसे रुपया मिल जायगा।

मेवालाल—यह तो बड़ा अच्छा तरीक़ा है। इसी तरह दूसरी जगहों के मनीआर्डरों के फ़ार्म यहाँ चले आते होंगे?

हबीब—हाँ, और क्या?—वह देखो, लेटरबक्स है। चिट्ठियाँ इसी में छोड़ी जाती हैं। देखो, इस पर लिखा है कि यह कब किस वक्त खुलता है। सब जगह की चिट्ठियाँ इसी में छोड़ी जाती हैं। फिर सब पर मोहर लगाकर वे अलग-अलग छाँटी जाती हैं। उसके बाद जो जिस डाकघर की होती है उसी के थैले में बन्द होकर भेजी जाती है।

मेवालाल—उसे भी क्या चिट्ठीरसा ले जाता है?

हबीब—नहीं, उसके लिए डाकिये नौकर होते हैं। जहाँ रेलें हैं, वहाँ रेलों से डाक आती जाती है।

मेवालाल—मैं भी एक चिट्ठी भेजना चाहता हूँ।

हबीब—तो यहीं से एक पोस्टकार्ड या लिफ़ाफ़ा ख़रीद लो। पोस्टकार्ड तीन पैसे में और लिफ़ाफ़ा पाँच पैसे में आता है।

मेवालाल एक पोस्टकार्ड ख़रीदकर, अपने चाचा के पास कानपुर को चिट्ठी भेजकर, हबीब के साथ, गाँव की ओर लौट चला। रास्ते में उसने पूछा—मेरी चिट्ठी कानपुर कब पहुँच जायगी? कानपुर तो बड़ी दूर है।

हबीब—कल यह चिट्ठी तुम्हारे चाचा को मिल जायगी। कानपुर बड़ा शहर है। वहाँ बहुत से डाकख़ाने हैं। वहाँ दिन में दो बार डाक बटती है।

मेवालाल—डाकघरों से सचमुच बड़े फ़ायदे हैं। मैं कानपुर बैलगाड़ी में चढ़कर तीन दिन में पहुँचा था, चिट्ठी एक दिन में ही पहुँच जायगी।

सवालात

१—डाकख़ानों से क्या फ़ायदे हैं ?
२—सेविंगबैंक से क्या लाभ हैं ?
३—डाकख़ानों का इन्तज़ाम कैसे होता है ?

पाठ-सहायक बातें

पाठ १

पृष्ठ

४ ख़ाली हाथ लौटना = बिना कुछ लिये हुए आना।

पाठ २

६ तंग आकर = परेशान होकर।

पाठ ४

१३ प्राचीनकाल में पाण्डु हस्तिनापुर (दिल्ली) के राजा थे। उनके पाँच बेटे थे, जिनके नाम युधिष्ठिर, अर्जुन भीम, नकुल और सहदेव थे, ये पाण्डव कहलाते थे। अर्जुन धनुष-बाण चलाने में बहुत ही निपुण थे। इन्होंने बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ी और विजय प्राप्त की।

द्रोण—यह भरद्वाज ऋषि के पुत्र थे। धनुर्विद्या में वे बड़े ही निपुण थे। कौरवा-पाण्डवा को बाणविद्या इन्होंने ही सिखाई थी। इसी लिए वे आचार्य कहे जाते थे।

पाठ ६

२३ मूसला = जिस जड़ का प्रधान (मोटा) भाग सीधा धरती में जाता है उसे मूसला कहते है और जो जड़ सीधी नीचे न जाकर इधर-उधर फैलती हैं, वे झखड़ा कहलाती हैं।

३२ मुँह ताकना = आसरा देखना, भरोसे रहना।

पृष्ठ

पाठ ११

४१ अमरीका—यह एक महाद्वीप है। पृथ्वी के पूर्वीय भाग में है। इसके उत्तरी भाग में संयुक्तराज्य है। यह देश बहुत उन्नत दशा में है। इसमें खेती की बहुत उन्नति हुई है।

४२ सोना हो जाय=क़ीमती हो जाय।

पाठ १२

४६ मुँह में पानी भर आना=ललचाना।

पाठ १३

५० ध्रुव=अटल, जो न चले। यह तारा सदा अचल होकर एक ही स्थान पर रहता है। इसलिए इसे ध्रुव तारा कहते हैं।

पाठ १४

५६ आनरेरी=अवैतनिक, जो तनख़ाह न ले।

पाठ १८

७० पास न फटकने देना=पास न आने देना, व्यवहार न करना।

पाठ १६

७२ तमस्सुक=क़र्ज़ लेने पर जो काग़ज़ क़र्ज़ लेनेवाला लिख देता है, उसे तमस्सुक कहते हैं। किसी तमस्सुक में क़र्ज़ चुकाने की मियाद भी लिखी रहती है, और किसी-किसी तमस्सुक में यह भी लिखा रहता है कि यदि मियाद के अंदर रक़म न चुकाई जाय, तो वह जायदाद से वसूल कर ली जाय।

पृष्ठ

पाठ २२

८३ देहाती बैंक—इनको को-आपरेटिव-क्रेडिट-सोसाइटी या सहकारी साख समिति भी कहते हैं। इस सूबे में सरकार ने एक सहकारी-विभाग खोल रक्खा है। इस विभाग का कर्तव्य सूबे भर में सहकारी समितियाँ खोलकर तथा उनकी उचित देख-रेख कर प्रांत-वासियों की आर्थिक दशा सुधारना है। इस विभाग के प्रधान को रजिस्ट्रार कहते हैं। इस विभाग के देख-रेख में, प्रत्येक ज़िले के प्रधान नगर में, एक ज़िला बैंक स्थापित हो गया है, जो सहकारी-समितियों से लेन देन करता है। देहाती बैंक (सहकारी-साख-समिति) खोलने का तरीक़ा बहुत सरल है।

पहले गाँव के अच्छे चाल-चलनवाले कम-से-कम दस आदमियों को समिति खोलने के लिए दरख़ास्त ज़िला-बक के मंत्री के पास भेजनी होती है। दरख़ास्त मिलने पर मंत्री दरख़ास्त देनेवाले व्यक्तियों की दशा की जाँच करवाकर, रजिस्ट्रार से समिति स्थापित करने की सिफ़ारिश करेगा, समिति के प्रत्येक सदस्य को कम-से-कम आठ आना प्रवेश-फ़ीस देनी होगी और इस ज़िम्मे-दारी को स्वीकार करना होगा कि यदि समिति के किसी सदस्य ने अपना पूरा क़र्ज़ अदा नहीं किया, तो उसका देनदार भी वह होगा। रजिस्ट्रार की स्वीकृति आने पर समिति को ज़िला-बैंक से क़र्ज़ का रुपया मिलने लगता है।

समिति को १२ रुपया प्रति सैकड़ा सूद की दर से क़र्ज़ मिलता है और वह अपने सदस्यों को १५ प्रतिसैकड़ा

पृष्ठ

की दर से उधार देती है। समिति को जो लाभ होता है, वह बचत-फंड में रक्खा जाता है। बचत-फंड के रुपयों का उपयोग रजिस्ट्रार की स्वीकृति के बिना नहीं किया जा सकता। देहाती बैंक अपने सदस्यों के लिए उत्तम बीज और नवीन औज़ारों या मशीनों का भी प्रबन्ध कर सकते है।

८३ ख़ाली हाथ रहते हैं = तंगी में रहते है, ग़रीब रहते है, रुपया पास नहीं रहता।

पाठ २८

१०६ जगत से कूच कर गया = मर गया।

११२ संगतराशी = (संग = पत्थर, तराशी = छीलना) पत्थर पर काम करना।

पाठ २९

११५ निपट सकने हैं = तय हो सकते हैं।

पाठ ३२

१२७ तुल गया = तैयार हो गया। दाल में काला है = गड़बड़ है।

१२८ काम तमाम कर दिया = ख़तम कर दिया, मार डाला।

पाठ ३३

१३२ काछी = एक जाति, जो साग-भाजी की खेती करती है।

१३५ नाक में दम हो जाता है = तबीयत परेशान हो जाती है।

पाठ ३६

१४३ नजर से गिराना = घृणा या नफ़रत पैदा कराना।

पृष्ठ

१४५ नेकी और पूँछ-पूँछ = अर्थात् जिसके साथ भलाई करनी हो, उससे पूँछने की आवश्यकता ही क्या है।

पाठ ३८

१५५ कृषि-कालेज = खेती का कालेज। इलाहाबाद के पास जमुना के किनारे यह कालेज है। यहाँ नये तरीक़ों से खेती सिखाई जाती है।

पाठ ३९

१५६ भोज = मालवे के परमारवंशी, सिन्धुराज के पुत्र एक प्रसिद्ध राजा, जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान्, कवि और विद्याप्रेमी थे। इनके शासन-काल में संस्कृत-विद्या का बहुत प्रचार था। ये बड़े वीर थे। महमूद ग़ज़नवी ने जब कालिंजर-दुर्ग पर हमला किया था, तब इनको वीरता दिखाने के कारण बहुत यश मिला था। ये १०६२ ई० मे गुजरात की लड़ाई में वीर-गति को प्राप्त हुए।

१६१ जान के लाले पड़ना = प्राण संकट में पड़ना, जान बचाना कठिन हो जाना।

युधिष्ठिर = पाण्डु के ज्येष्ठ पुत्र। इनका चचेरा भाई दुर्योधन इन्हें बहुत तङ्ग करता था और इनका हिस्सा राज्य में नहीं देता था। इसी कारण कौरव और पाण्डवों का युद्ध हुआ। करोड़ों आदमियों का युद्ध में संहार हुआ और युधिष्ठिर की विजय हुई। ये बड़े धर्मात्मा और न्यायप्रिय राजा थे।

पृष्ठ

पाठ ४१

१७० गोईं = जोड़ी।

१७३ चक = ज़मीन के उस भाग को, जो एक ही किसान के अधिकार में, एक ही जगह, हो, 'चक' कहते हैं। यदि किसी किसान के अधिकार में पाँच खेत दूर-दूर पर हों और उनके बदले में उसे एक बड़ा खेत मिल जाय, तो यह कहा जायगा कि उसको खेत एक 'चक' में मिल गया या उसके खेतों की चकबन्दी हो गई।

पाठ ४४

१८६ भागते-भागते कचूमर हो जाय = भागने की थका-वट से बदन चूर चूर हो जाय, बहुत थक जाय।

पाठ ४५

१८८ चारपाई पर गिर पड़ा - बीमार हो गया।

पाठ ४७

२०० पैढ़ी = पुर चलनेवाले कुएँ के पीछे की उतार-चढ़ाव की ज़मीन।

पाठ ४८

२०४ ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी —पहले अँगरेज़ लोग भारतवर्ष में व्यापार करने आये थे। बहुत से व्यापारियों का एक संगठित समूह कम्पनी कहलाता है। अँगरेजों की कम्पनी का नाम पूर्वी हिन्दुस्तान की कम्पनी या ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी था। इसने धीरे-धीरे राज्य लेना प्रारम्भ किया और फिर हिन्दुस्तान पर राज्य करने लगी। यह सन् १६०० ई० से १८५७ ई० तक रही।

पृष्ठ

२०७ शिक्षा-कमीशन = शिक्षा के सम्बन्ध में विचार करनेवाली कमेटी या समिति।

पब्लिक सर्विस कमीशन = भारत में सबसे बड़े सरकारी अफ़सरों की नियुक्ति, वेतन इत्यादि के सम्बन्ध में विचार करनेवाली समिति।

सर = सरकार द्वारा दी हुई एक बड़ी उपाधि।

वीर सेवा मन्दिर
पुस्तकालय

२८०.३ दुबे
काल नं०

लेखक दुबे दयाशंकर (स्व०)

शीर्षक बाल-बोध

खण्ड २ क्रम संख्या ७८६